

ॐ श्री ॐ

काशीनाथ भट्टाचार्य विरचित :-

# शीघ्र बोधः

भाषा टीका सहितः ।

\* प्रकाशक-फर्म \*

बाबू बैजनाथ प्रसाद बुक्सेलर,

राजादरवाजा, वाराणसी-१

सन् १९७२

मूल्य २५०





॥ श्रीहरिः ॥

श्री काशिनाथ भट्टाचार्यविरचितः

❀ शीघ्रबोधः ❀



मिरजापुरमण्डलान्तर्गत-आही ग्रामस्थ शङ्करपाठशाला  
प्रधानाध्यापक दैवज्ञभूषण पं० श्रीमानुप्रसाद  
पाण्डेय विरचितः सुधानाम्नि सोदाहरण  
भाषाटीका सहितः ।



❀ प्रकाशक-फर्म ❀

बाबू बैजनाथ प्रसाद बुक्सेलर,

महानुभावेन

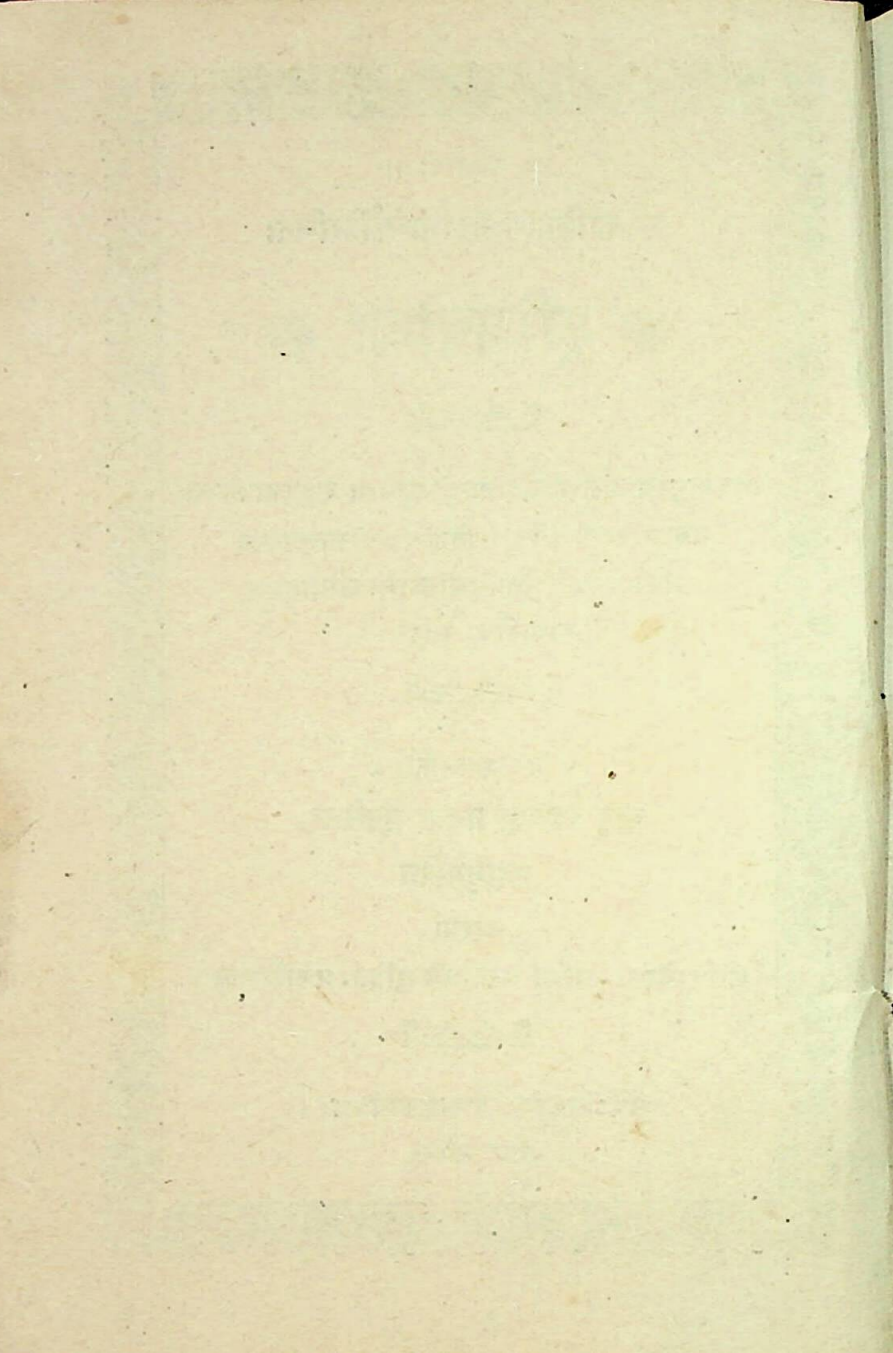
काश्यां

श्रीविश्वेश्वर नाम्नि यन्त्रालये मुद्रितः प्रकाशितश्च ।



सर्वेऽधिकाराः प्रकाशकाधीनाः ।

संवत् २०२६



# Swami Ramanand Saraswati Jaitish martand

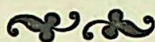
स्वासी आत्मानन्द आस्त्री

गीताव्यास भागवतभूषण

रामायण विशारद

॥ श्रीः ॥

## शीघ्रबोधस्थविषयानुक्रमणिका



प्रथमं प्रकरणम् ।

| विषय                   | पृष्ठ | विषय                      | पृष्ठ |
|------------------------|-------|---------------------------|-------|
| मंगलाचरणम्             | १     | गणनक्षत्राणि              | ७     |
| विवाहनक्षत्राणि        | १     | गणप्रीतिविचारः            | ७     |
| विवाहमासः चान्द्रसौर   | १     | राशिमेलनम्                | ८     |
| विवाहेवर्जितानि        | २     | राशिः वर्णाः              | ८     |
| तिथिनामानि             | २     | वर्णावर्णविचारः           | ८     |
| वारवेला                | २     | नक्षत्रभागत्रयविचारः      | ६     |
| वारवेलाचक्रम्          | ३     | राशिवश्यावश्यप्रीतिः      | ६     |
| विवाहे वर्जितयोगाः     | ३     | योनिविचारः                | १०    |
| भद्राज्ञानं तथा चक्रम् | ३     | नक्षत्रयोनिचक्रम्         | १०    |
| भद्रानिवासः            | ४     | योनिवैरम्                 | ११    |
| भद्राशुभाशुभफलम्       | ४     | राशिमेलनम्                | ११    |
| भद्राशुभाशुभनिर्णयः    | ५     | त्रिबलविचारः              | ११    |
| दग्धा तिथिः            | ५     | रविबलविचारः               | १२    |
| मासांतादिज्ञानफलम्     | ५     | गुरुबलविचारः              | १२    |
| मासादिफलम्             | ६     | कन्याया विवाहे वर्षसंख्या | १३    |
| कुलिकयोगः तथा चक्रम्   | ६     | कन्याया रविबलविचारः       | १४    |
| अष्टकवर्गः             | ६     | चन्द्रबलविचारः            | १४    |
| वर्गफलम्               | ७     | चन्द्रबलचक्रम्            | १४    |



| विषय                   | पृष्ठ | विषय                              | पृष्ठ |
|------------------------|-------|-----------------------------------|-------|
| त्रिवलविचारः           | १४    | गर्भवेधादिदोषविचारः               | २८    |
| त्रिवलशुभांशुभविचारः   | १५    | जन्ममासतथाब्देष्टविवाह-<br>विचारः | २८    |
| गौरीदानादिफलम्         | १५    | विंशोपक्राफलम्                    | २६    |
| रजस्वलाकन्या लक्षणम्   | १५    | फलदा ग्रहाः                       | ३०    |
| कन्यारजोदर्शने महादोषः | १६    | शुभाशुभग्रहाः                     | ३०    |
| नाडीविचारस्तथाचक्रम्   | १६    | शुभमध्यलग्नानि                    | ३१    |
| नाडीफलम्               | १७    | लत्तादिदोषापवादः                  | ३१    |
| पंचशलाकाचक्रविचारः     | १७    | नवमांशलग्नचक्रम्                  | ३१    |
| दशदोषनामानि            | १८    | मेषादिराशीनां नवांशचक्रम्         | ३२    |
| लग्नदोषविचारः          | १८    | होलाष्टकम्                        | ३३    |
| लत्ताफलम्              | १६    | अंधबधिरकुञ्जलक्षणम्               | ३३    |
| पातदोषविचारः           | १६    | गोधूलिकलग्नविचारः                 | ३४    |
| पातलक्षणम्             | २०    | गोधूलिकदोषः                       | ३४    |
| देशभेदेन पातविचारः     | २०    | गोधूलिकप्रमाणम्                   | ३४    |
| शुतिदोषविचारः          | २१    | गोधूलिकनाशकदोषः                   | ३४    |
| वेधदोषविचारः           | २१    | लग्नपुष्टिकराग्रहाः               | ३५    |
| जामित्रदोषविचारः       | २३    | दिनमानज्ञानम्                     | ३५    |
| पंचकविचारः             | २३    | रात्रिमानज्ञानम्                  | ३६    |
| पंचकनिर्णयः            | २४    | केन्द्रस्य गुरोर्महत्त्वम्        | ३६    |
| विद्युदादियोगविचारः    | २४    | सर्पाकारचक्रम्                    | ३७    |
| विद्युदादियोगफलम्      | २५    | नवयोगा (दोषा) वर्ज्याः            | ३७    |
| एकार्गलविचारः          | २५    | पट्टाकारचक्रम्                    | ३८    |
| क्रांतिसाम्यदोषविचारः  | २७    |                                   |       |



## द्वितीय प्रकरणम् ।

| विषय                          | पृष्ठ | विषय                  | पृष्ठ |
|-------------------------------|-------|-----------------------|-------|
| वधूप्रवेशमुहूर्तः व्यवस्था    | ४०    | गृहप्रवेशमुहूर्तः     | ५२    |
| द्विरागमनमुहूर्तः व्यवस्था    | ४०    | हलचक्रमुहूर्तः        | ५२    |
| द्विरागमनार्थमुक्तनक्षत्राणि  | ४२    | यात्राविचारः          | ५३    |
| गर्भाधान मुहूर्तः             | ४२    | दिक्शूलज्ञानम्        | ५३    |
| पुंसवनादि मुहूर्तः            | ४३    | यात्रिकनक्षत्राणि     | ५४    |
| नामकरण मुहूर्तः               | ४३    | योगिनीवासनिर्णयः      | ५४    |
| बालकनामकरणयन्त्रम्            | ४३    | यात्रायां योगिनीफलम्  | ५४    |
| बालनिष्क्रमणम्                | ४४    | यात्रातिथयः           | ५५    |
| प्रसूतिकास्नानेत्यागः         | ४४    | राहुवासविचारः         | ५६    |
| प्रसूतिकास्नानमुहूर्तः        | ४५    | राहुवासचक्रम्         | ५६    |
| प्रसूतिस्नानयन्त्रम्          | ४५    | चन्द्रवासविचारः       | ५६    |
| वस्त्रधारणम्                  | ४५    | चन्द्रवासचक्रम्       | ५७    |
| जलपूजनम्                      | ४६    | चन्द्रवासफलम्         | ५७    |
| नवान्नभोजनमुहूर्तः            | ४६    | रविविचारः             | ५७    |
| प्रथमनवान्नप्राशनमुहूर्तः     | ४६    | कुलिकयोगः             | ५८    |
| चूडाकर्म तथा भूषणधारणमुहूर्तः | ४७    | कालहोराविचारः         | ५८    |
| विद्यारम्भमुहूर्तः            | ४७    | सर्वाङ्गमुहूर्तविचारः | ५९    |
| यज्ञोपवीतमुहूर्तः             | ४९    | स्वरशकुनविचारः        | ५९    |
| व्रतबन्धमुहूर्तयन्त्रम्       | ४९    | यात्रायां शुक्रविचारः | ६०    |
| कर्णवेधमुहूर्तः               | ५०    | क्रयविक्रयविचारः      | ६०    |
| कर्णवेधमुहूर्तयन्त्रम्        | ५०    | धनिष्ठापंचकविचारः     | ६०    |
| वास्तुकर्ममुहूर्तः            | ५०    | तैलाभ्यंगम्विचारः     | ६१    |
| वास्तुकर्मयन्त्रम्            | ५१    | रोगिस्नानमुहूर्तः     | ६१    |
| वापीकूपतडागदेवालयमुहूर्तः     | ५१    | आनन्दादियोगाः         | ६१    |
| देवालयमुहूर्तयन्त्रम्         | ५१    | आनन्दादियोगचक्रम्     | ६२    |



| विषय                            | पृष्ठ | विषय                        | पृष्ठ |
|---------------------------------|-------|-----------------------------|-------|
| अमृतसिद्धियोगः                  | ६४    | पौषसंक्रान्तिफलम्           | ८१    |
| यमघण्टयोगःतथायन्त्रम्           | ६४    | मीनसंक्रान्तिफलम्           | ८२    |
| मृत्युयोगःतथाचक्रम्             | ६५    | संक्रान्तिदिननक्षत्रफलम्    | ८३    |
| क्रकचयोगःतथाचक्रम्              | ६५    | रोहिणीनिर्णयः               | ८४    |
| अन्धादिनक्षत्राणितथाचक्रम्      | ६५    | रोहिणीचक्रम्                | ८५    |
| नक्षत्रविचारः                   | ६६    | नराकारचक्रम्                | ८६    |
| नक्षत्रप्रचारयन्त्रम्           | ६६    | ग्रामवासफलम्                | ८७    |
| वत्सयोगःतथायन्त्रम्             | ६७    | मूलवृक्षफलंतथायन्त्रम्      | ८८    |
| नक्षत्रतारासंख्या               | ६७    | शुक्रादिग्रहविचारः          | ८९    |
| नक्षत्रतारासंख्यायन्त्रम्       | ६८    | ताराविचारः                  | ८९    |
| रोहिणीदोषज्ञानम्                | ६८    | गोचरग्रहफलम्                | ९०    |
| लग्नोपरत्वदोषज्ञानम्            | ६९    | पूर्णक्षीणचन्द्रनिर्णयः     | ९१    |
| क्षेत्रदोषः                     | ७०    | नित्यक्षौरनिर्णयः           | ९१    |
| नक्षत्रतिथिवारयोगः              | ७१    | क्षौरकर्ममुहूर्तचक्रम्      | ९१    |
| शुभाशुभयन्त्रम्                 | ७२    | राज्याभिषेकमुहूर्तः         | ९२    |
| नक्षत्राणां चरादि संज्ञा        | ७४    | तिर्यङ्मुखान्नक्षत्राणि     | ९२    |
| नक्षत्राणांसप्तधासंज्ञायन्त्रम् | ७४    | तिर्यङ्मुखोर्ध्वमुखयन्त्रम् | ९३    |
| नराकारशनिचक्रम्                 | ७५    | भैषज्यमुहूर्तः              | ९३    |
| शनिराशिफलम्                     | ७६    | भैषज्यमुहूर्तयन्त्रम्       | ९३    |
| एकस्मिन्मासेपंचवारफलम्          | ७७    | पशुनिर्गमनिर्णयः            | ९३    |
| अभिजिन्मुहूर्तफलम्              | ७८    | पशुनिष्कासनमुहूर्तयन्त्रम्  | ९४    |
| अभिजिन्मुहूर्तयन्त्रम्          | ७९    | क्रयविक्रयमुहूर्तः          | ९४    |
| शुक्रोदयफलम्                    | ७९    | तिथिगंडांततथायन्त्रम्       | ९५    |
| होलिकाधूमफलम्                   | ७९    | नक्षत्रगंडांततथायन्त्रम्    | ९५    |
| वर्षाशकुनः                      | ८०    | लग्नगंडांतम्                | ९५    |
| आषाढे पूर्णिमाफलम्              | ८१    | लग्नगंडांतयन्त्रम्          | ९६    |
| उषेऽप्रतिपत्फलम्                | ८१    | गण्डांतफलम्                 | ९६    |



| विषय              | पृष्ठ | विषय                      | पृष्ठ |
|-------------------|-------|---------------------------|-------|
| संवर्ताख्ययोगः    | ६६    | कृष्णपक्षे करणानि         | ६८    |
| सिद्धियोगः        | ६६    | शुक्लपक्षे करणानि         | ६९    |
| सिद्धियोगयन्त्रम् | ६६    | नक्षत्राधिपतयः            | ६९    |
| विष्कुम्भादियोगः  | ६७    | नक्षत्रदेवताधिकोष्ठचक्रम् | १००   |
| करणानि            | ६७    |                           |       |

### तृतीयप्रकरणम् ।

|                         |     |                            |     |
|-------------------------|-----|----------------------------|-----|
| अङ्गस्पर्शादिप्रश्नः    | १०० | आषाढाद्वितीयादि-           |     |
| लग्नप्रमाणम्            | १०१ | तिथिचतुष्टयफलम्            | १०७ |
| ग्रहदानम्               | १०२ | वायुवर्षाज्ञानम्           | १०७ |
| द्वादशराशिगतगुरुफलम्    | १०३ | पौषमासे मूलभरणीफलम्        | १०८ |
| माससंक्रान्तिवृष्टिफलम् | १०४ | परस्परक्षेत्रस्थितग्रहफलम् | १०८ |
| शुक्लपञ्चमीफलम्         | १०५ | ग्रहाणां मुदयफलानि         | १११ |
| नक्षत्रवृष्टिफलम्       | १०५ | नक्षत्रगतग्रहफलम्          | ११२ |
| वायुपरीक्षा             | १०५ | मूलादिनक्षत्रगतगुरुफलम्    | ११३ |
| उत्पाताः                | १०६ |                            |     |

### चतुर्थप्रकरणम् ।

|                            |     |                      |     |
|----------------------------|-----|----------------------|-----|
| होडाचक्रम्                 | ११५ | राशीशाः              | १२२ |
| सपादनक्षत्रद्वयतोराशिक्रमः | ११६ | नक्षत्रज्ञानम्       | १२३ |
| द्वादश भावाः               | ११७ | संक्रांतिक्रियाः     | १२३ |
| ग्रहाणां विशोपकादृष्टिः    | ११७ | शुक्रदोषनिर्णयः      | १२४ |
| रविवारयुक्तामावास्याफलम्   | ११८ | नक्षत्रसंज्ञा        | १२४ |
| दिनरात्रिप्रमाणम्          | ११८ | नक्षत्रग्रहवर्षाभिदः | १२४ |
| त्रयोदशदिनात्मकपक्षफलम्    | ११९ | गृहद्वारमुहूर्तः     | १२५ |
| वह्निचक्रम्                | ११९ | ग्रहणफलम्            | १२६ |
| होमकर्मण्यग्नि चक्रम्      | १२० | दैवोत्पातफलम्        | १२६ |
| संवत्सरनामानि              | १२१ | केतुउदयफलम्          | १२६ |

| विषय                    | पृष्ठ | विषय                  | पृष्ठ |
|-------------------------|-------|-----------------------|-------|
| दीपोत्सवफलम्            | १३१   | मन्त्रदीक्षानिर्णयः   | १३३   |
| राशीनां निशाचरादिसंज्ञा | १३२   | ग्रहराशिभोगकालनिर्णयः | १३४   |
| दुर्भिक्षसुभिक्षफलम्    | १३२   | चुल्हीचक्रविचारः      | १३५   |
| वक्रीविचारफलम्          | १३३   | टीकाकार वंशवर्णनम्    | १३६   |

नोट—पहिले प्रकरण में ६८, १०५, १४८, इन श्लोकों पर और दूसरे प्रकरण में ६८ से ७० तक, ७२ से ७३ तक, ८० से ८२ तक इन श्लोकों पर चौथे प्रकरण में ७ वें ८ वें से १२ वें १३ वें २७ वें श्लोकों के उदाहरणों पर विशेष ध्यान दें ।

निवेदक—

मातृप्रसाद पाण्डेय,  
शंकरपाठशाला, आही, मिर्जापुर ।



॥ श्रीः ॥

## ❀ अथ शीघ्रबोधः ❀

भाषाटीकासहितः

मंगलाचरणम्

भासयन्तं जगद्भासा नत्वा भास्वंतमव्ययम् ।

क्रियते काशिनाथेन शीघ्रबोधाय संग्रहः ॥ १ ॥

वन्दे विश्वेश्वरं शम्भुं बालकानां हिताय च ।

मया मातृप्रसादेन टीकास्य क्रियते सुधा ॥ १ ॥

टीका— जिसकी आभा से यह संसार प्रकाशित है तथा जो अविनाशी है ऐसे सूर्यको प्रणाम करके मैं काशिनाथ आचार्य जल्दी से बोध होने के लिये शीघ्रबोध नामक ग्रन्थका संग्रह करता हूँ ॥ १ ॥

विवाहनक्षत्राणि

रोहिण्युत्तररेवत्यो मूलं स्वाती मृगो मघा ।

अनुराधा च हस्तश्च विवाहे मंगलप्रदः ॥ २ ॥

टीका— रोहिणी, तीनों उत्तरा, रेवती, मूल, स्वाती, मृग-शिरा, मघा, अनुराधा, हस्त ये ग्यारह नक्षत्र विवाह में मंगल के दाता हैं ॥ २ ॥

\* विवाहमासः

माघे धनवतीकन्या फाल्गुने सुभगा भवेत् ।

वैशाखे च तथा ज्येष्ठे पत्युरत्यन्तवल्लभा ॥ ३ ॥

\* मिथुन कुंभ मृगालि वृषाजगे मिथुनगेऽपि, रवौ त्रिज्ये शुचौ ।  
अलिमृगाजगते करपीडनं भवति कार्तिकपौषमधुष्वपि ॥ १ ॥  
अत्र सौरचान्द्रद्वययोगे विवाही समुचितः ।



टीका—माघ मासमें विवाह करे तो कन्या धनवती हो, फाल्गुन में सौभाग्यवती हो, वैशाख तथा जेठ में विवाह हो तो अपने पतिको अत्यन्त प्यारी होवे ॥ ३ ॥

आषाढे कुलवृद्धिः स्यादन्ये मासाश्च वर्जिताः ।

मार्गशीर्षमपीच्छन्ति विवाहे केऽपि कोविदाः ॥ ४ ॥

टीका—जो आषाढ मास में विवाह करे तो कुलकी वृद्धि और महीने में विवाह वर्जित है परन्तु मार्गशीर्ष को भी कोई २ आचार्य विवाहमें शुभ कहते हैं ॥ ४ ॥

विवाहे वर्जितानि

अमावस्या च रिक्ता च वारवेला च जन्मभम् ।

गण्डान्तं क्रूरवाराश्च वर्जनीयाः प्रयत्नतः ॥ ५ ॥

टीका—अमावस्या, रिक्ता तिथि अर्थात् ( ४ । ९ । १४ ) वारवेला, जन्मका नक्षत्र, क्रूरवार ( रवि, मंगल, शनि ) और गण्डान्त मूल ये विवाह में यत्नपूर्वक वर्जित हैं ॥ ५ ॥

तिथि नामानि

नन्दा भद्रा जया रिक्ता पूर्णा च तिथयः क्रमात् ।

वारत्रयं समावर्त्य तिथयः प्रतिपन्मुखाः ॥ ६ ॥

टीका—नन्दा, भद्रा, जया, रिक्ता व पूर्णा ये पाँच नाम तिथियों के हैं, इनमें नन्दा १ । ६ । ११, भद्रा २ । ७ । १२, जया ३ । ८ । १३, रिक्ता ४ । ९ । १४, पूर्णा ५ । १० । १५ प्रतिपदा से गिनिये ॥ ६ ॥

वारवेला

तुर्योऽर्के सप्तमश्चन्द्रे द्वितीयो भूमिनन्दने ।

चन्द्रपुत्रे पंचमश्च देवाचार्ये तथाऽष्टमम् ॥ ७ ॥

टीका-अब वारवेला कहते हैं:- रविवार को ४ याम में अर्धयाम,  
चन्द्रको ७, भौमको २, बुध को ५, गुरुवारको ८ यामार्ध ॥७॥

दैत्यपूज्ये तृतीयश्च शनौ षष्ठश्च निन्दितः ।

प्रहरार्धे शुभे कार्ये वारवेला च कथ्यते ॥ ८ ॥

वारवेलाचक्रम् ।

| ४  | ७  | २  | ५  | ८  | ३  | ६  | याम |
|----|----|----|----|----|----|----|-----|
| ३॥ | ३॥ | ३॥ | ३॥ | ३॥ | ३॥ | ३॥ | घटी |
| र  | चं | मं | बु | गु | शु | श  | वार |

टीका-शुक्रवार

को ३ शनिवार

को ६ इस प्रकार

के इन यामों के अर्धयामों में वारवेला जानिये । ये शुभ कार्य में  
निन्दित हैं । इन्हें इक्कीस कोठे के चक्र में समझ लेना ॥ ८ ॥

विवाहे वर्जितयोगाः

भद्राकर्कटयोगं च तिथ्यन्तं यमघंटकम् ।

दग्धातिथिं च भान्तं च कुलिकं च विवर्जयेत् ॥ ९ ॥

टीका-भद्रा, कर्कटयोग, तिथिके अन्तकी २ घड़ी,  
यमघंटयोग, दग्धा तिथि, नक्षत्र के अन्त की २ घड़ी, व  
कुलिकयोग, इतने दोष विवाह में वर्जित हैं ॥ ९ ॥

भद्राज्ञानम्

दशम्यां च तृतीयायां कृष्णपक्षे परे दले ।

सप्तम्यां च चतुर्दश्यां विष्टिः पूर्वदले स्मृता ॥१०॥

एकादश्यां चतुर्थ्यां च शुक्लपक्षे परे दले ।

अष्टम्यां पूर्णिमायां च विष्टिः पूर्वदले स्मृता ॥११॥



| पूर्वदल परदल भद्रा |   |    |            | टीका--अथ कृष्णपक्ष शुक्ल पक्षकी कौनसी तिथियों में पूर्वदल अथवा परदल भद्रा होती है सो चक्र में समझ लेना ॥ १० ॥ ११ ॥ |
|--------------------|---|----|------------|--------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|
| कृष्णपक्ष          | ३ | १० | पराद्धे    |                                                                                                                    |
| कृष्णपक्ष          | ७ | १४ | पूर्वाद्धे |                                                                                                                    |
| शुक्लपक्ष          | ४ | ११ | पराद्धे    |                                                                                                                    |
| शुक्लपक्ष          | ८ | १५ | पूर्वाद्धे |                                                                                                                    |

भद्रानिवासः

मेषमकरवृषकर्कटस्वर्गे कन्यामिथुनतुलाधनुनागे ।  
कुंभमीनअलिकेसरिमृत्यौ विचरति भद्रा त्रिभुवनमध्ये ॥

टीका— ये भद्रा स्वर्गलोक, मृत्युलोक व पाताललोक इन तीनों लोकोंमें वास करती है । मेष, मकर, वृष, कर्क इनके चन्द्रमा में भद्रा स्वर्गलोकमें जानिये, कन्या, मिथुन, तुला, व धनके चन्द्रमा में भद्रा पाताल लोक में और कुम्भ, मीन वृश्चिक तथा सिंह के चन्द्रमामें भद्राका वास मृत्युलोकमें जानिये ॥ १२ ॥

भद्राशुभाशुभफलम्

स्वर्गे भद्रा शुभं कार्यं पाताले च धनागमम् ।  
मृत्युलोके यदा भद्रा सर्वकार्यविनाशिनी ॥ १३ ॥

टीका— जो स्वर्गलोक में भद्रा हो तो शुभ कार्य करे, पातालमें हो तो द्रव्य लाभ हो और जो मृत्युलोक में हो तो सब कार्य का विनाश करे ॥ १३ ॥

सन्मुखे मृत्युलोकस्था पाताले च अधोमुखी ।  
ऊर्ध्वस्था स्वर्गगा भद्रा सम्मुखे मरणप्रदा ॥ १४ ॥

टीका— जो मृत्युलोक में भद्रा हो तो सम्मुख कहिये,



पाताल में अधोमुख और स्वर्ग में ऊर्ध्वमुख । इनमें जो सम्मुख भद्रा हो तो मृत्यु को देती है ॥ १४ ॥

भद्रानिर्णयः

दिवा भद्रा यदा रात्रौ रात्रिभद्रा यदा दिने ।  
तदा विष्टिर्न दोषाय प्रभवेत्सर्वसौख्यदा ॥ १५ ॥

टीका- कृष्णपक्ष में सप्तमी, चतुर्दशी को और शुक्लपक्ष में अष्टमी पूर्णिमा को पूर्वदल भद्रा दिनसंज्ञक है सो रात्रि में पड़े और शुक्लपक्ष में ४ । ११ कृष्णपक्ष में ३ । १० की परदल भद्रा रात्रि संज्ञक है सो दिन में पड़े तो भद्रा का दोष नहीं है ये भद्रा सुख को देनेवाली है ॥ १५ ॥

दग्धातिथिः

मीने चापे द्वितीया च चतुर्थी वृषकुम्भयोः ।  
मेषकर्कटयोः षष्ठी कन्यायुग्मेषु चाष्टमी ॥ १६ ॥  
दशमी वृश्चिके सिंहे द्वादशी मकरे तुले ।  
एतास्तु तिथयो दग्धाः शुभकर्मणि वर्जिताः ॥ १७ ॥

टीका- मीन धनके सूर्य में द्वितीया २, वृष व कुम्भ के सूर्य में चतुर्थी ४, मेष व कर्क के सूर्य में ६, कन्या व मियुन के सूर्य में ८, वृश्चिक व सिंह के सूर्य में १० और मकर व तुला के रवि में १२ इन संक्रान्तियों में इतनी तिथियाँ दग्ध संज्ञक हैं और ये शुभ कार्यके लिये वर्जित कही गई हैं ॥ १६ ॥ १७ ॥

मासान्तादिज्ञानफलम्

मासांते दिनमेकं तु तिथ्यन्ते घटिकाद्वयम् ।  
घटिकानां त्रयं भांते विवाहे परिवर्जयेत् ॥ १८ ॥  
टीका- मासांत यानी संक्रांति के अन्तका एक दिन,

तिथि के अन्त की दो बड़ी, नक्षत्र के अन्त की ३ घटी, यह विवाह में वजित है ॥ १८ ॥

मासादिफलम्

मासांते म्रियते कन्या तिथ्यन्ते स्यादपुत्रिणी ।

नक्षत्रांते च वैधव्यं विष्टौ मृत्युर्द्वयोर्भवेत् ॥ १९ ॥

टीका— मास के अन्त में माँवर पड़े तो कन्या की मृत्यु हो, तिथ्यन्त में अपुत्रिणी हो, नक्षत्र के अन्त में विधवा हो और भद्रा में वर तथा कन्या दोनों की मृत्यु हो ॥ १९ ॥

कुलिकयोगः

सूर्ये च सप्तमी सोमे षष्ठी भौमे च पंचमी ।

बुधे चतुर्थी देवेज्ये तृतीया भृगुनन्दने ॥ २० ॥

द्वितीया वर्जनीया च प्रतिपच्च शनैश्चरे ।

कुलिकाख्यो हि योगोऽयं विवाहादौ न शस्यते ॥ २१ ॥

कुलिकयोग तिथि चक्रम्

| र. | चं. | मं. | बु. | गु. | शु. | श. | वार  |
|----|-----|-----|-----|-----|-----|----|------|
| ७  | ६   | ५   | ४   | ३   | २   | १  | तिथि |

टीका— अब कुलिकयोग कहते हैं सो चक्र में समझ लीजिये, चक्र में लिखे हुए इन वारों को इन तिथियों में कुलिकयोग होता है ।

अष्टकवर्गाः

अवर्गो गरुडो ज्ञेयो विडालः स्यात्कवर्गकः ।

चवर्गः सिंहनामा स्याद्ववर्गः कुक्कुरः स्मृतः ॥ २२ ॥

सर्पाख्यः स्यात्तवर्गोऽपि पवर्गो मूपकः स्मृतः ।

यवर्गो मृगनामा स्यात्तथा मेषः शवर्गकः ॥ २३ ॥

टीका— अवर्गादि आठ वर्ग विवाहादि में विचारने में है जिसके नाम का जो अक्षर पहिला हो वही वर्ग कहिये तिनको



आ, ई, ऐ, ये अवर्ग हैं, सो गरुडवर्ग । क, ख, ग, घ, ङ, ये विलाववर्ग ।  
च, छ, ज, झ, ञ, ये सिंहवर्ग । ट, ठ, ड, ढ, ण, ये श्वानवर्ग ।  
त, थ, द, ध, न, ये सर्पवर्ग । प, फ, ब, भ, म, ये मूषकवर्ग ।  
य, र, ल, व, ये मृगवर्ग । श, ष, स, ह, ये मेढावर्ग कहलाते हैं ।

वर्गफलम्

स्ववर्गात्पञ्चमे शत्रुः चतुर्थे मित्रसंज्ञकः ।

उदासीनस्तृतीयश्च वर्गभेदस्त्रिधोच्यते ॥२४॥

टीका- अपने वर्गसे पाँचवे वर्गको वैरी । जानिये, चौथेमें मित्र  
जानना और तीसरेवर्गमें उदासीनता कहो गई है ॥२४॥

गणनचत्राणि

अश्विनीमृगशिरा रेवती हस्तः पुष्यः पुनर्वसुः ।

अनुराधा श्रुतिः स्वाती कथ्यते देवतागणः ॥२५॥

टीका- अश्विनी, मृगशिरा, रेवती, हस्त, पुष्य, पुनर्वसु,  
अनुराधा, श्रवण, स्वाती ये देवतागण कहलाते हैं ॥ २५ ॥

तिस्रः पूर्वाश्चोत्तराश्च तिस्रोऽप्यार्द्रा च रोहिणी ।

भरणी च मनुष्याख्यो गणश्च कथितो बुधैः ॥२६॥

टीका- तीनों पूर्वा, और तीनों उत्तरा, आर्द्रा, रोहिणी,  
भरणी इनमें यदि जन्म हो तो मनुष्यगण जानिये ॥ २६ ॥

कृत्तिका च मघाश्लेषा विशाखा शततारका ।

चित्रा ज्येष्ठा धनिष्ठा च मूलं रक्षोगणः स्मृतः ॥२७॥

टीका- कृत्तिका, मघा, आश्लेषा, विशाखा, शतभिषा,  
चित्रा, ज्येष्ठा, मूल, ये नक्षत्र राक्षसगण कहलाते हैं ॥ २७ ॥

गणप्रीतिविचारः

स्वगणे परमाप्रीतिर्मध्यमा देवमर्त्ययोः ।

मर्त्यराक्षसयोर्मृत्युः कलहो देवरक्षसोः ॥२८॥

टीका—जो स्त्री पुरुष एकही गण हों तो अधिक प्रीति हो, देव मनुष्य हों तो मध्यम प्रीति हो मनुष्य व राक्षस गण हों तो मृत्यु हो और देव तथा राक्षस हों तो कलह हो ॥ २८ ॥

राशिमेलनम्

षष्ठे स्त्रीपुंसयोर्वैरं मृत्युः स्यादष्टमे ध्रुवम् ।

द्विर्द्वादशे च दारिद्र्यं नवमे पंचमे कलिः ॥ २९ ॥

टीका—स्त्री की राशिसे पुरुष की राशि ६ हो तो वैर जानिये और पुरुष से स्त्री की आठवीं राशि होवे तो मृत्यु हो स्त्री से आठव पुरुष हों तो शुभ है और २-१२ हो तो दरिद्र हो, ९-५ हो तो कलह हो ॥ २९ ॥

राशिवर्णाः

मीनालिकर्कटा विप्राः क्षत्री मेघो हरिर्धनुः ।

शूद्रो युग्मं तुला कुंभो वैश्यः कन्या वृषो मृगः ॥ ३० ॥

टीका—मीन, वृश्चिक व कर्क ये राशि ब्राह्मणवर्ण हैं । मेघ, सिंह व धन ये क्षत्रिय वर्ण हैं, मिथुन, तुला व कुम्भ ये शूद्र वर्ण और कन्या, वृष व मकर ये वैश्य वर्ण हैं ॥ ३० ॥

वर्णविवर्णविचारः

नोत्तमामुद्रहेत्कन्यां ब्राह्मणीं च विशेषतः ।

म्रियते हीनवर्णश्च ब्रह्मणा रक्षितो यदि ॥ ३१ ॥

विप्रवर्णे च या नारी शूद्रवर्णे च यः पतिः ।

ध्रुवं भवति वैधव्यं शक्रस्य दुहिता यदि ॥ ३२ ॥

टीका—जो कन्या उत्तम वर्ण हो व पुरुषहीन वर्ण हो तो पुरुष की निश्चय मृत्यु हो, इससे उत्तम वर्ण को कन्या से विवाह वर्जित है, इसमें ब्राह्मणी विशेष करके मना है और जो ब्राह्मण वर्ण कन्या से शूद्र वर्ण वर का विवाह हो तो इन्द्र की भी कन्या



हो तो वह निश्चय करके विधवा होवे ॥ ३१ ॥ ३२ ॥

नक्षत्रभागत्रयविचारः

पौष्णादिकंपङ्कमुशान्तिपूर्वमाद्रादिकद्वादशमध्यभागम्  
पौरंदराद्यनवकुम्भचक्रं परंच भागं गणका विदग्धाः ३३

टीका- रेवती नक्षत्र आदि से छ नक्षत्रों को पूर्व भाग कहते हैं, आर्द्रा आदि द्वादश नक्षत्रों को मध्य भाग कहते हैं, और ज्येष्ठा आदि नव नक्षत्रों को पर भाग कहते हैं ॥ ३३ ॥

पूर्वभागे पतिः श्रेष्ठो मध्यभागे च कन्यका ।

परभागे च नक्षत्रे द्वयोः प्रीतिर्महीयसी ॥ ३४ ॥

टीका- पूर्व भागी पति हो और मध्यभागी स्त्री हो तो पति को श्रेष्ठ कहिये और पूर्वभागी स्त्री और पर भागी पुरुष हो तो स्त्री को श्रेष्ठ कहिये और स्त्री पुरुष दोनों पर भागी हों तो आपस में अधिक प्रीति हो ॥ ३४ ॥

राशिवश्यावश्यप्रीतिः

सिंहं विना वशाः सर्वे द्विपदानां चतुष्पदाः ।

भक्ष्या जलचरास्तेषां भयस्थाने सरीसृपाः ॥ ३५ ॥

टीका- सिंह के बिना दूसरे सब चतुष्पद ( चौपाए ) द्विपद ( मनुष्यों ) के वश में हैं और उन ( मनुष्यों ) के जलचर भक्ष्य हैं तथा सांप विच्छ्र आदि भयदायक हैं ॥ ३५ ॥

मकरस्य पूर्वभागो मेषसिंहधनुर्वृषाः ।

चतुष्पदाः कीटसंज्ञाः कर्कः सर्पश्च वृश्चिकः ॥ ३६ ॥

तुला च मिथुनं कन्या पूर्वाद्ध धनुषश्च यत् ।

द्विपदास्तु मृगाद्ध तु कुम्भमीनौ जलाश्रितौ ॥ ३७ ॥

टीका— मकर राशि का पहिला अर्धभागी यानी उत्तराषाढा के तीन चरण श्रवण के डेढ़ चरण पर्यन्त और मेष सिंह आधा धन व वृषभ ये चतुष्पद ( चौपायों ) की संज्ञा जानिये और कर्कराशि की कीट संज्ञा है, वृश्चिक की सर्पसंज्ञा है और तुला मिथुन, कन्या व धन का पहिला आधा भाग ये द्विपद जानिये तथा कुम्भ व मीन जलचर जानिये ॥ ३६ ॥ ३७ ॥

योनिविचारः

अश्विनी वारुणश्चाश्वो रेवती भरणी गजः ।  
 पुष्यश्च कृत्तिका छागो नागश्चरोहिणी मृगः ॥३८॥  
 आर्द्रामूलमपि श्वा च मूषकः फाल्गुनी मघा ।  
 मार्जारोऽदितिराश्लेषा गोजातिरुत्तरद्वयम् ॥३९॥  
 महिषः स्वातिहस्तौ च मृगौ ज्येष्ठानुराधिके ।  
 व्याघ्रश्चित्रा विशाखा च श्रुत्याषाढौ च मर्कटः ॥४०॥  
 वसुभाद्रपदौ सिंहौ नकुलोऽभिजिद्विश्वपाः ।  
 योनयः कथिता भानां वैरमैत्री विचार्यताम् ॥४१॥

टीका— इन चारों श्लोकों का अर्थ योनिचक्र में समझ लेना ।  
 चौदह योनि कोष्ठकके सम्मुख सबके अपने कोष्ठक लिखे हैं ॥३८-४१॥

नक्षत्रयोनिचक्रम्

|       |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |      |      |     |     |     |     |
|-------|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|------|------|-----|-----|-----|-----|
| अश्वि | रे. | पु. | रो. | अ.  | पू  | फा. | पु. | उ.  | फा. | स्व | ज्य  | चि   | पू. | षा. | ध.  | ऽभि |
| श.    | भ.  | कृ. | नृ. | मू. | म.  | आ   | उ.  | भा. | ह.  | ऽनु | वि   | श्र. | पू. | उ.  | षा. |     |
| घोड़ा | ग.  | छा  | ना  | श्व | मूष | .   | वि  | गो. | म.  | हि. | व्या | वान. | सि  | न   | कु. |     |



योनिवरम्

गोव्याघ्रं गजसिंहमश्वमहिषं वैरञ्च वभ्रूरगं  
 वैरं वानरमेपकं च सुमहत्तद्वद्विडालोन्दुरोः ॥  
 लोकानां व्यवहारतो निगदितं ज्ञात्वा प्रयत्नादिदं  
 दंपत्योर्नृपभृत्ययोरपि सदा वर्ज्यं शुभस्यार्थिभिः ॥४२॥

टीका- गाय व वाघ का, हाथी व सिंह का, घोड़ा व भैंस का, नेउला व सर्प का, वानर व मेढा का और बिलाव व मूस का वैर कहा है, ऐसा वैर भाव जानके यत्नपूर्वक स्त्री-पुरुष और स्वामी सेवक का वैर शुभार्थियोंको वर्जनीय है ॥ ४२ ॥

राशिमेलनम्

मरणं पितृमात्रोश्च संग्राह्यं नवपंचकम् ।  
 वरस्य पंचमे कन्या कन्याया नवमे वरः ॥४३॥  
 एतत् त्रिकोणके ग्राह्यं पुत्रपौत्रसुखावहम् ।  
 षडष्टके भवेन्मृत्युर्यत्नं तस्य विचारयेत् ॥४४॥

टीका- जो पुरुष की राशि से कन्या की राशि ९ वीं हो तो तिस करके पिता की मृत्यु हो और जो कन्या की राशिसे पुरुष की राशि ५ वीं हो तो तिनके माता की मृत्यु हो। वैर की राशि से ५ वीं राशि कन्या की राशि से ९ वें वर की राशि हो तो यह त्रिकोण शुभ है। यह पुत्र पौत्र के सुख की दात्री है और जो बूठे आठवें हो तो मृत्यु हो तिससे षडष्टक का यत्न से विचार करना ॥ ४३ ॥ ४४ ॥

त्रिवलविचारः

वरस्य भास्करबलं कन्यायाश्च गुरोर्बलम् ।

द्वयोश्चन्द्रबलं ग्राह्यं विवाहो नान्यथा भवेत् ॥४५॥

टीका— वरको सूर्यबल चाहिये, कन्याको बृहस्पति का बल चाहिये और वर कन्या दोनों को चन्द्रबल चाहिये ॥ ४५ ॥

रविबलविचारः

अष्टमे च चतुर्थे च द्वादशे च दिवाकरे ।

विवाहितो वरो मृत्युं प्राप्नोत्यत्र न संशयः ॥४६॥

टीका— जो वरकी राशि से सूर्य ४ । ८ । १२ हों तो विवाह करने से वर की मृत्यु हो ॥ ४६ ॥

जन्मन्यथ द्वितीयं वा पंचमे सप्तमेऽपि वा ।

नवमे च दिवानाथे पूजया पाणिपीडनम् ॥४७॥

एकादशे तृतीये वा षष्ठे वा दशमेऽपि वा ।

वरस्य शुभदो नित्यं विवाहे दिननायकः ॥४८॥

टीका— जो वरकी राशि से सूर्य १ । २ । ५ । ७ । ९ हो तो इस परिहार वाक्य से सूर्य की पूजा दान जपादिक करके विवाह शुभ है और जो ११ । ३ । ६ । १० रवि होय तो विवाह शुभ कहिये ॥ ४७ ॥ ४८ ॥

गुरुबलविचारः

अष्टमे द्वादशे वापि चतुर्थे वा बृहस्पतौ ।

पूजा तत्र न कर्तव्या विवाहे प्राणनाशिका ॥४९॥

टीका— जो कन्या का बृहस्पति ४ । ८ । १२ होय तो विवाह होने से प्राण का घात करे ॥ ४९ ॥

षष्ठे जन्मनि देवेज्ये तृतीये दशमेऽपि वा ।

भूरिपूजापूजितः स्यात्कन्यायाः शुभकारकः ॥५०॥



टीका-जो कन्या का बृहस्पति ६ । १ । ३ । १० होवे तो बड़ी पूजा दानादिक देके विवाह करे तो शुभ हो ॥ ५० ॥

एकादशे द्वितीये वा पंचमे सप्तमेऽपि वा ।

नवमे च सुराचार्ये कन्यायाः शुभकारकः ॥ ५१ ॥

टीका-जो कन्या का बृहस्पति ११ । २ । ५ । ७ । ९ होवे तो विशेष करके शुभ है ॥ ५१ ॥

कन्याया विवाहे वर्षसंख्या

अष्टाब्दका भवेद्गौरी नववर्षा च रोहिणी ।

दशवर्षा भवेत्कन्या अत ऊर्ध्वं रजस्वला ॥ ५२ ॥

टीका-अष्टवर्ष में कन्या की गौरी संज्ञा, नव वर्ष में रोहिणी, दश वर्ष में कन्या संज्ञा जानिये और इसके उपरान्त कन्या को रजस्वला कहते हैं ॥ ५२ ॥

❀ बृहस्पति उच्च का अपनी राशि का अपन मित्र के राशि का अपने अंशका और वर्गोत्तमका हो तो ४—८—१२ वें भी हो तो शुभ होता है । नीचराशि शत्रु राशि का हो तो शुभ भी अशुभ होता है । गुरु की उच्चराशि ४ अपनी राशि ४-१२ मित्र राशि १-८-४-५ है । मेष सिंह धन राशि में नवाँ अंश अर्थात् ३६ अं० ४० क० के बाद ३० अंश पर्यन्त वृष कन्या मकर का तीसरा अंश अर्थात् ५ अं० ४० कला के बाद १० अंश पर्यन्त । मिथुन तुला कुम्भ का ६ वाँ अंश अर्थात् १६ अंश ४० कला के बाद २० अंश पर्यन्त । कर्क वृश्चिक मीन का ६ वाँ व ६ वाँ अंश अर्थात् १६ अंश ४० कला के बाद बीस अंश तक और २६ अंश ४० कला के बाद ३० अंश पर्यन्त स्वांश गुरुका रहता है । चर राशि ( १-४-७-१० ) का ३ अंश २० कला तक वर्गोत्तम, स्थिर राशि ( २-२-५-११ ) का ३ अंश २० कला के बाद ३ अंश २० कला तक अर्थात् १६ अंश ४० कला तक, और द्विस्वभाव राशि ( ३। ६। ९। १२ ) का २६ अंश ४० कला के बाद ३ अंश २० कला तक अर्थात् ३० अंश पर्यन्त वर्गोत्तम है । स्वोच्चे स्वभे स्वमैत्रे वा स्वांशे वर्गोत्तमे गुरुः ।

रिःफाष्टतुर्यगोऽपीष्टो नीचाऽस्थिः शुभोप्यसत् ॥ १ ॥

कन्याया रविवलविचारः

गौरी गुरोर्बले देया रोहिणी भास्करस्य च ।

कन्याचन्द्रवले देया सर्वदोषविवर्जिता ॥५३॥

टीका— गौरी को बृहस्पति के बल में देवे, रोहिणी को सूर्य के बल में देवे और कन्या को चन्द्रबल में देवे, ॥ ५३ ॥

चन्द्रबलविचारः

आद्ये चन्द्रः श्रियं कुर्यान्मनस्तोषं द्वितीयके ।

तृतीये धन संपत्तिश्चतुर्थे कलहागमम् ॥५४॥

पंचमे ज्ञान वृद्धिश्च षष्ठे संपत्तिमुत्तमाम् ।

सप्तमे राजसम्मानं मरणं चाष्टमे तथा ॥५५॥

नवमे धर्मलाभं च दशमे मानसेप्सितम् ।

एकादशे सर्वलाभं द्वादशे हानिमेव च ॥५६॥

टीका— इधर कन्या और वरका चन्द्रबल

कहा है सो इस चक्रसे समझ लीजिये ॥५४-५६

त्रिवल विचारः

गुर्विन्द्रर्कबलागौरी गुर्विन्दुबलरोहिणी  
रवीन्दुबलजाकन्याप्रौढालग्नबलास्मृता

टीका— गौरी का बृहस्पति, चन्द्रमा व सूर्य

इन तीनों का बल विचारे तो शुभ है । रोहिणी

को गुरु और चन्द्रमा का बल विचारिये ।

कन्या को रवि और चन्द्रमा का बल चाहिए

व प्रौढा को लग्नबल ही बहुत है ॥५७॥

चन्द्रबलचक्रम्

१ | लक्ष्मीप्राप्ति

२ | मनसंतोष

३ | धनसंपत्ति

४ | कलहागम

५ | ज्ञानवृद्धि

६ | संपत्ति

७ | राजसम्मान

८ | मृत्युभय

९ | धन लाभ

१० | मनोवाञ्छा

११ | सर्वलाभ

१२ | हानि



## शुभाशुभ विचारः

जीवो जीवप्रदाता च द्रव्यदाता च चन्द्रमा ।  
 तेजोदाता भवेत्सूर्यो भूमिदाता महीसुतः ॥५८॥  
 जीवहीना मृतो कन्या सूर्यहीनो मृतो वरः ।  
 चन्द्रहीने गतालक्ष्मीः स्थानहानिः कुजंविना ॥५९॥

टीका- बृहस्पति जीवन के दाता हैं, चन्द्रमा धन के दाता हैं, सूर्य तेज के दाता हैं और मंगल भूमि के दाता हैं । बृहस्पति हीन हो तो कन्या की मृत्यु हो, सूर्य हीन हो तो वर की मृत्यु हो, चन्द्रमा हीन हो तो लक्ष्मी क्षीण हो, मंगलहीन हो तो स्थान हानिकरै ॥ ५८ ॥ ५९ ॥

गौरीदानादिकलम्

गौरीं ददन्नागलोके वैकुण्ठे रोहिणीं ददन् ।  
 कन्यां ददन्मृत्युलोके रौरवं तु रजस्वलाम् ॥६०॥

टीका- गौरी दान करे तो पाताल लोक में सुख की प्राप्ति होय, रोहिणी दान करे तो वैकुण्ठवास पावे, जो कन्यादान करै तो मृत्युलोक के सुख की प्राप्ति हो और जो रजस्वला दान करे तो रौरव नरक पड़े ॥ ६० ॥

रजस्वला कन्यालक्षणम्

संप्राप्तैकादशे वर्षे कन्या या न विवाहिता ।  
 मासे मासे पिता भ्राता तस्याः पिबति शोणितम् ॥६१॥

टीका- जो ग्यारहवें वर्ष में कन्या का विवाह न करे और वही प्रति महीना में रजस्वला हो तो मानो उसका रुधिर पिता और ज्येष्ठ भ्राता पान करता है ॥ ६१ ॥

द्वादशैकादशो वर्षे तस्याः शुद्धिर्न जायते ।

पूजाभिः शकुनैर्वापि तस्य लग्नं प्रदापयेत् ॥६२॥

टीका— जो ग्यारह, बारह वर्षकी कन्या हो तो बृहस्पतिकाल देखे और लग्न विचारके पूजा दान करके विवाह करे ॥६२॥

कन्यारजोदर्शने महादोषः

माता चैव पिता चैव ज्येष्ठभ्राता तथैव च ।

त्रयश्च नरकं यान्ति दृष्ट्वा कन्यां रजस्वलाम् ॥६३॥

टीका— माता, पिता, ज्येष्ठ भ्राता ये तीनों रजस्वला को देखें तो नरक के अधिकारी होते हैं ॥ ६३ ॥

### नाडीचक्रम्

नाडीविचारः

| आदि   | मध्य | अन्त्य |
|-------|------|--------|
| अ.    | भ.   | क.     |
| आ     | मृ.  | रा.    |
| प.    | पु.  | आ.     |
| उ.    | पू.  | म.     |
| अ.    | चि.  | स्वा.  |
| व्ये. | अ.   | वि.    |
| मू.   | पू.  | उ.     |
| श.    | ध.   | अ.     |
| प.    | उ.   | रे.    |

आदिमध्यान्तकं वापि अन्तमध्यादि भानि च । अश्विन्यादिक्रमेणैव रेवत्यांतं सुसंलिखेत् ॥ ६४ ॥

ऊर्ध्वगा वेद रेखाः स्युस्तिर्यग्रेखा दश- स्मृताः । सर्पाकारं लिखेद्भानां नाडी चक्रं वदेद्बुधः ॥ ६५ ॥

नाडिदोषस्तु विप्रेषु वर्णदोषश्च क्षत्रिये । गणदोषश्च वैश्येषु योनि- दोषस्तु पादजान् ॥ ६६ ॥

टीका— आदि, मध्य, अन्त्य पुनः अंत, मध्य, आदि इस प्रकार अश्विनी से रेवती



पर्यन्त गिनिये । चार रेखा खड़ी और दश रेखा तिरछी इसी प्रकार सत्ताईस कोठोंको पंडित जन नाड़ी चक्र कहते हैं । नाड़ी का दोष ब्राह्मणको, वर्णका दोष क्षत्रियको, गणका दोष वैश्यको और योनिका दोष शूद्रको विशेष करके जानिये ॥ ६४-६५-६६

नाडीफलम्

एकनाडीस्थनक्षत्रे दम्पत्योर्मरणं भ्रुवम् ।

सेवायां च भवेद्धानिर्विवाहे चाशुभं भवेत् ॥ ६७ ॥

टीका—जो वर कन्या दोनों का एक नाड़ी एक नक्षत्र में जन्म हो तो दोनों की मृत्यु हो, स्वामी सेवक दोनों की एक नाड़ी हो तो उसकी सेवा में हानि होवे और नाड़ी के वेध में विवाह करे तो अमंगल होवे ॥ ६७ ॥

आदिनाडी वरं हन्ति मध्यनाडी च कन्यकाम् ।

अन्त्यनाडी द्वयोर्मृत्युर्नाडीदोषं त्यजेद्बुधः ॥ ६८ ॥

टीका—जो आदि नाड़ी का वेध हो तो वर का अनिष्ट करे, मध्य का वेध हो तो कन्या को दूषित करे और अन्त्य नाड़ी का वेध हो तो दोनों की मृत्यु होवे ॥ ६८ ॥

एकनक्षत्रजातानां नाडीदोषो न विद्यते ।

अन्यर्त्तपातवेधेषु विवाहो वर्जितः सदा ॥ ६९ ॥

टीका—जो वर कन्या का एक ही नक्षत्र में जन्म हो तो एक नाड़ी का दोष न मानिये और दूसरे नक्षत्रों में जन्म हो तो विवाह सर्वथा वर्जित है ॥ ६९ ॥

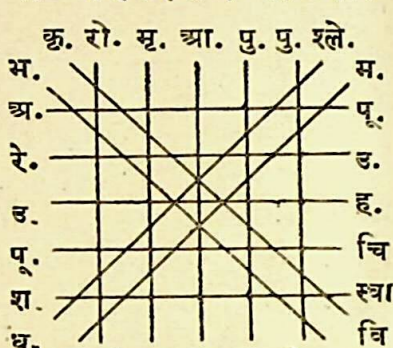
पंचशलाकाचक्रविचारः

पंचोर्ध्वाः स्थापयेद्रेखाः पंच तिर्यङ्मुखास्तथा ।

द्वयोश्च कोणयोर्द्वे द्वे चक्र पंचशालाककम् ॥ ७० ॥

ईशाने कृत्तिका देया क्रमादन्यानि भानि च ।  
 ग्रहास्तेषु प्रदातव्या ये च यत्र प्रतिष्ठिताः ॥७१॥  
 लग्नस्य निकटे या च गता भवति पूर्णिमा ।  
 तन्नक्षत्रस्थितश्चन्द्रो दातव्यो गणकोत्तमैः ॥७२॥

टीका—पाँच रेखा ऊर्ध्व,  
 पाँच तिरछी और दो दो  
 रेखा कोनों में धरे, इसको  
 पंचशलाका का चक्र कहते  
 हैं ॥ ७० ॥ ईशान दिशा से  
 लेकर कृत्तिका आदि नक्षत्र  
 को क्रम से धरिये ॥ ७० ॥



जो लग्न के निकट पूर्णिमा  
 हो तो उस नक्षत्रपर पंडितोंको चन्द्रमा धरना योग्य है ॥७२॥

दशदोषनामानि

लत्ता पातो युतिर्वेधो जामित्रं बुधपञ्चकम् ।  
 एकार्गलोपग्रहौ च क्रान्तिसाम्यं निगद्यते ॥७३॥  
 दग्धातिथिश्च विज्ञेया दशदोषा महाबलाः ।  
 एतान्दोषान्परित्यज्य लग्नं संशोधयेद्बुधः ॥७४॥

टीका—लत्ता १, पात २, युति ३, वेध ४, जामित्र ५, बुधपंचक ६,  
 एकार्गल ७, उपग्रह ८, क्रान्तिसाम्य ९, दग्धातिथि १०, ये दश  
 दोष महाबलवान् हैं, इनसे बचाकर लग्न साधिये ॥ ७३-७४ ॥

लग्नदोषविचारः

नक्षत्रं द्वादशं भानुस्तृतीयं लत्तया कुजः ।



षष्ठं जीवोऽष्टमं मंदो हन्ति दक्षिणतः सदा ॥७५॥

वामेन सप्तमश्चान्द्रिर्नवमे सिंहिकासुतः ।

हन्ति भं पञ्चमं शुक्रो द्वाविंशं पूर्णचन्द्रमाः ॥७६॥

टीका-जिस नक्षत्र का लग्न हो उसी नक्षत्र से दाहिनी ओर सूर्य, भौम, गुरु व शनि ये चार ग्रह लात मारते हैं । १२ को रवि, ३ को भौम, ६ को गुरु, ८ वें को शनि लात मारते हैं और वाम भाग होकर ७ वें नक्षत्र को बुध लात मारते हैं, नवें राहु, पाँचवें शुक्र और बाईसवें २२ नक्षत्र को चन्द्रमा लात मारते हैं ॥ ७५-७६ ॥

लत्ताफलम्

रवेर्लत्ता हरेद्वित्तं कुजस्य कुरुते मृत्तिम् ।

बृहस्पतेर्वन्धुनाशं शनः कुर्यात् कुलक्षयम् ॥७७॥

बुधस्य कुरुते त्रासं लत्ता राहोर्विनाशनम् ।

शुक्रस्य दुःखदा नित्यं त्रासदा तु कलानिधेः ॥७८॥

टीका-सूर्य की लात लगे तो संपत्ति हरे, भौम की लात लगे तो मृत्तु करे, बृहस्पति की लात लगे तो वन्धु का नाश करे, शनि की लात लगे तो कुल का क्षय करे, बुध की लात से त्रास हो, राहु की लात से नाश हो, शुक्र की लात लगे तो दुःखदायक है, और चन्द्र की लात से त्रास हो ॥ ७७-७८ ॥

पातदोषविचारः

सूर्ययुक्तश्च नक्षत्रादोषपातो विधीयते ।

मघाऽश्लेषा चचित्रा चसानुराधा चरेवती ॥७९॥

श्रवणोऽपि चषट्कोऽयं पातदोषो निगद्यते ।

अश्विनीमवधिं कृत्वा गणयेत्लग्नभावधि ॥८०॥

टीका—जिस नक्षत्र में सूर्य हो उसी नक्षत्र में फिर आ जाय तो पात दोष कहिये । मघा, आश्लेषा, चित्रा, अनुराधा, रेवती श्रवण ये छः नक्षत्र पात के हैं । इन नक्षत्रों में सूर्य के संयोग से छः प्रकार के पात दोष कहे जाते हैं । प्रथम सूर्य के नक्षत्र से २७ रेखा खींचे इसके बाद अश्विनी से लग्न के नक्षत्र तक गिने, तो नक्षत्र पात होता है ॥ ७९-८० ॥

पातलक्षणम्

पावकः पवमानश्च विकारः कलहोपरः ।

मृत्युः क्षयश्च विज्ञेयं पातपट्कस्य लक्षणम् ॥८१॥

टीका—अब छः भाँति के पातों के नाम व लक्षण कहते हैं : पावक १, पवमान २, विकार ३, कलह ४, मृत्यु ५, क्षय ६, ये छहों पात अपने नाम के अनुरूप फल देते हैं ॥ ८१ ॥

पातेन पतितो ब्रह्मा पातेन पतितो हरिः ।

पातेन पतितः शंभुस्तस्मात्पातं विवर्जयेत् ॥८२॥

टीका—पात से ब्रह्मा पतित हुये, विष्णु पतित हुये और शिव पतित हुये, इससे विवाह में पात दोष विशेष करके वर्जित है ॥८२॥

देशभेदेन पातविचारः

चित्रांगते वातविचित्रदेशे मैत्रमघा मालवके निषिद्धः ।

पौष्णश्रुतीचोत्तरदेशजातः सर्वत्र वर्ज्यश्च भुजंगपातः ॥

टीका—चित्रा नक्षत्र का पात विचित्र देश में वर्जित है, अनुराधा व मघा का पात मालव देश में निषिद्ध है, रेवती व श्रवण का पात उत्तर में निषिद्ध है, और अश्लेषा का पात सर्व देश में वर्जित है ॥ ८३ ॥



युतिदोषविचारः

यत्र गृहे भवेच्चन्द्रो ग्रहस्तत्र यदा भवेत् ।

युतिदोषस्तदा ज्ञेयो विना शुक्रं शुभाशुभम् ॥८४॥

टीका—जिस नक्षत्र में चन्द्रमा हो उसी नक्षत्र में और कोई ग्रह हो तो युति दोष कहते हैं । परन्तु शुक्र के विना यानो शुक्र संयुक्त शुभ और शुक्र रहित अशुभ है ॥ ८४ ॥

रविणा संयुतो हानिं भौमे च निधनं शशी ।

करोति मूलनाशं च राहुकेतुशनैश्चरैः ॥८५॥

टीका—जो चन्द्रमा सूर्य के साथ हो तो हानि करे, भौम के साथ हो तो मृत्यु करे और राहु, केतु, शनैश्चर के साथ हो तो मूल नाश करे ॥ ८५ ॥

वर्गोत्तमगतश्चन्द्रः स्वोच्चं वा मित्रराशिगः ।

यतिदोषश्च न भवेद्दम्पत्योः श्रेयसी सदा ॥८६॥

टीका—जो चन्द्रमा षड्वर्ग में श्रेष्ठवर्ग का हो अथवा उच्च का हो, वा मित्रराशि का हो तो युति दोष नहीं होता और वधू वर दोनों सुखी रहते हैं ॥ ८६ ॥

वेधदोषविचारः

एकरेखास्थितेर्वेधो दिननाथादिभिर्ग्रहैः ।

विवाहे तत्र मासं तु न जीवति कदाचन ॥८७॥

टीका—जिस नक्षत्र का लग्न हो उसी नक्षत्र-रेखा से सूर्य आदि कोई ग्रह हो तो उसी ग्रह का वेध कहिये, उसमें जो विवाह होवे तो एक महीना में मृत्यु हो जाय ॥ ८७ ॥

अश्विनी पूर्वफाल्गुन्या भरणी चानुराधया ।  
 अभिजिष्ठापि रोहिण्या कृत्तिका चविशाखया ॥ ८८ ॥  
 मृगशूचोत्तरषाढेन पूर्वाषाढा तथार्द्रया ।  
 पुनर्वसुश्च मूलेन तथा पुष्यश्च ज्येष्ठया ॥ ८९ ॥  
 धनिष्ठया तथाऽश्लेषा मघापि श्रवणेन च ।  
 रेवत्युत्तरफाल्गुन्या हस्तेनोत्तरभाद्रपात् ॥ ९० ॥  
 स्वात्या शतभिषा विद्धा चित्रया पर्वभाद्रपात् ।  
 विद्धान्येतानि वर्ज्यानि विवाहे भानि कोविदैः ॥ ९१ ॥

टीका-अश्विनी और पूर्वफाल्गुनी की एक रेखा है, भरणी व अनुराधा की एक रेखा है, ऐसे जो दोनों ठौर एक रेखा हो तो वेध कहिये, ऐसे अष्टादसों नक्षत्रों को जानिये, ये वेध विवाह में विशेष करके वर्जित हैं ॥ ८८-९१ ॥

रविवेधे च वैधव्यं कुजवेधे कुलक्षयम् ।  
 बुधवेधे भवेद्वन्ध्या प्रव्रज्या गुरुवेधतः ॥ ९२ ॥  
 अपुत्रा शुक्रवेधे च सौरे चन्द्रे च दुःखिता ।  
 परपुंसिरताराहोः केतोः स्वच्छन्दचारिणी ॥ ९३ ॥

टीका-जो सूर्य का वेध लगे तो कन्या विधवा हो, मंगल का वेध लगे तो कुल का क्षय हो, बुध का वेध लगे तो वन्ध्या हो, गुरु का वेध लगे तो संन्यासिनी हो, शुक्र का वेध लगे तो पुत्रहीन, शनि व चन्द्रमा का वेध लगे तो दुःखी, राहु का वेध लगे तो पर पुरुष-गामिनी आर केतु का वेध लगे तो स्वच्छन्द चारिणी होती है ॥ ९२-९३ ॥



शनिराहुकुजादित्या यदा जन्मर्क्षसंस्थिताः ।  
विवाहिता च या कन्या सा कन्या विधवा भवेत् ॥९४॥

टीका—शनि, राहु, भौम, सूर्य इनमें से कोई विवाह समय में जन्म नक्षत्र पर होवे तो कन्या विधवा होती है ॥ ९४ ॥

जामित्रदोषविचारः

चतुर्दशं च नक्षत्रं जामित्रं लग्नभात्स्मृतम् ।  
शुभयुक्तं तदिच्छन्ति पापयुक्तं च वर्जयेत् ॥९५॥

टीका—जो लग्न के नक्षत्र से चौदहवें नक्षत्र पर पापग्रह हो तो जामित्र दोष होता है, वह शुभग्रह के साथ ग्राह्य है और पाप ग्रह के साथ हो तो त्याज्य है ॥ ९५ ॥

चन्द्रश्चान्द्रिभृशुर्जीवो जामित्रो शुभकारकः ।  
स्वर्भानुर्भानुमंदारा जामित्रे न शुभप्रदाः ॥९६॥

टीका—चन्द्रमा, बुध, बृहस्पति और शुक्र, ये ग्रह जन्म नक्षत्र से जामित्र पर होवें तो शुभ कहिये और जो राहु, सूर्य शनि तथा भौम ये जामित्र पर हों तो अशुभ हैं ॥ ९६ ॥

चन्द्राद्वा लग्नतो वापि ग्रहा वर्ज्याश्च सप्तमे ।  
तत्र स्थिता ग्रहा नूनं व्याधिवैधव्यकारकाः ॥९७॥

टीका—चन्द्रमा से वा लग्न की राशि से सातवें कोई ग्रह हो तो व्याधि और वैधव्य करे ॥ ९७ ॥

पंचकविचारः

धार्यातिथिर्मासदशाष्टवेदाः सक्रान्तितो यातदिनैश्च  
योज्याः ॥ ग्रहैर्विभक्ता यदि पंचशेषा रोग-

स्तथाग्निर्नृपचौरमृत्युः ॥ ६८ ॥

टीका—अव पंचक कहते हैं । तिथि १५, मास १२, दश १० अष्ट ८, वेद ४, और संक्रान्ति के जो दिन बीते हों उनको जोड़ करके नौ का भाग देवे, जो पाँच शेष बचे तो पंचक जानिये । इस प्रकार रोगपंचक १५ में, अग्निपंचक १२ में राजपंचक १० में, चौरपंचक ८ में और मृत्युपंचक ४ में जानना चाहिये ॥ ९८ ॥

तद्यर्कवारे किलरोगपञ्चकं सोमेचराज्यं क्षितिजेचवह्निः  
सौरे च मृत्युर्धिवणे च चौरौविवाहकाले परिवर्जनीयाः

टीका—रविवार को रोगपंचक, सोम को राजपंचक, मंगल को अग्निपंचक, शनैश्वर को मृत्युपंचक और श्रुगुवारको चौर-पंचक ये विवाह में वर्जित हैं ॥ ९९ ॥

पंचकनिर्णयः

रोगं चौरं त्यजेद्गौत्रा दिवा राज्याग्नि पञ्चकम् ।

उभयोः सन्ध्ययोर्मृत्युरन्यकाले न निन्दिताः ॥ १०० ॥

टीका—रोग तथा चौरपंचक रात्रि को अशुभ है, राज्यपंचक अग्निसंचक दिन में वर्जित है, दोनों संधियों में मृत्युपंचक निन्दित है । अन्य समय में वर्जित नहीं है ॥ १०० ॥

विद्युदादियोगः

सूर्यभात्पञ्चमे विद्युन्नक्षत्रे शूलमष्टमे ।

चतुर्दशे शनेः पातःकेतुरष्टादशे तथा ॥ १०१ ॥

ऊनविंशे भवेदुल्का निर्घातश्च द्विविंशके ।

त्रयोविंशतिके कपः पञ्चविंशे तु वज्रकः ॥ १०२ ॥

\* एक नेत्रे बालबोधसारावली के ४१ पेजको टिप्पणी में टीका देखो ।



टीका-पूर्व के नक्षत्र से पाँचवें कोई ग्रह हो तो, विद्युत् दोष लगे, ८ पर शूलदोष लगे, १४ पर शनिपात दोष लगे, १८ पर केतु दोष लगे, १९ पर उल्का, २२ पर निर्यात, २३ पर कंप, २४ और २५ पर वज्रदोष लगते हैं ॥१०२

विद्युदादियोगफलम्

पुत्रनाशकरी विद्युत् पत्युः शूलो विनाशकः ।

शनेः पातो वंशघाती केतोर्देवरनाशकः ॥१०३॥

द्रव्यनाशकरी चोल्का निर्घातो बन्धुनाशकः ।

कंपः कंपयते नित्यं वज्रे स्त्री व्यभिचारिणी ॥१०४॥

टीका-विद्युत्दोष लगे तो पुत्रका नाश करे, शूल दोष पति का नाश करे, शनिका पात वंशघात करे, केतु दोष देवर का नाश करे, उल्का दोष द्रव्यका नाश करे, निर्घात भ्राता का नाश करे, कंप नित्यही कंपावे, और वज्रदोष लगे तो स्त्री व्यभिचारिणी होती है ॥ १०३ ॥ १०४ ॥

एकार्गलविचारः

योगांके विषमे चैको देयोऽष्टाविंशतिः समे ।

अर्द्धकृत्वाश्विनीपूर्वामङ्गं मर्द्दिनं प्रदीयते ॥१०५॥

टीका-जो योग के अंक विषम हों तो एक जोड़िये और सम अंक हों तो अट्ठाइस जोड़िये, फिर आधा करके अश्विनी से पूर्व जो अंक हो उसे माथे पर लिखिये । उदाहरण—मान लिया योग का अंक ५ है इसमें १ मिलाया तो ६ हुआ इसका आधा ३ होता है, ३ रा कृत्तिका नक्षत्र हुआ, यदि योगांक सम ४ हो तो इसमें २८ युत किया तो ३२ हुआ, इसको आधा किया तो १६ हुआ सोलहवाँ विशाखा नक्षत्र

है । इसी प्रकार सब जाने, आगे के श्लोकों में इसी को स्पष्ट रूप से कहा है ॥ १०५ ॥

विष्कुम्भे चाश्विनी देया प्रीतौ स्वातिर्निगद्यते ।  
सौभाग्ये च विशाखा स्यादायुष्मान् भरणीयुतः ॥  
शोभने कृत्तिका देया अनुराधा च गंडके ।  
रोहिणी च सुकर्माख्ये धृतौ ज्येष्ठा प्रकीर्तिता ॥  
गंडे मूलं मृगः शूले वृद्धौ चार्द्रा निगद्यते ।  
पूर्वाषाढाध्रुवेप्रोक्ताव्याघाते च पुनर्वसुः ॥

| सू.  |   |       |
|------|---|-------|
| रो.  | — | अ.    |
| कृ.  | — | पु.   |
| भ.   | — | पु.   |
| अ.   | — | श्ले  |
| रे.  | — | म.    |
| उ.   | — | पू.   |
| पू.  | — | उ.    |
| श.   | — | ह.    |
| ध.   | — | चि.   |
| श्र. | — | स्वा  |
| अ.   | — | वि.   |
| उ.   | — | ऽदु.  |
| पू.  | — | ज्ये. |
| मू.  |   |       |

हर्षणेचोत्तराषाढा वज्रे पुष्यः प्रकी-  
र्तितः । अभिजिच्च तथा सिद्धा  
वाश्लेषा व्यतिपातके ॥ वरीयसि  
श्रुतिर्देया परिधे च मघा तथा ॥  
शिवे धनिष्ठा दातव्या सिद्धौ पूर्वा  
च फाल्गुनी ॥ साध्ये शतभिषा देया  
शुभे चोत्तरफाल्गुनी । पूर्वा भाद्रपदा  
शुक्ले हस्ते ब्रह्मा प्रकीर्तितः ॥

उत्तराभाद्रपच्चैन्द्रे चित्रा देया च वैधृतौ ।  
सूर्याचन्द्रमसोर्योगे भवेदेकार्गलं तदा ॥  
त्रयोदशतिरोरेखा एकोर्ध्वामूर्धन्यभिस्मृता ।  
योगांके प्राप्तनक्षत्रे ज्ञेयमेकार्गलं बुधैः ॥ १०६-११३ ॥



टीका-एकार्गल चक्र की त्रयोदश रेखा तिरछी खींचे । एक रेखा खड़ी खींचे । योग योग के अंक में जो नक्षत्र कहे हैं वे सूर्य चन्द्र के योग एक रेखा से होवे तो एकार्गल दोष कहिये । विष्कुम्भ योग को अश्विनी से कहा है । ऐसे ही क्रमसे चक्र में समझ लीजिये ॥ ११३ ॥

क्रान्तिसाम्यदोषविचारः

ऊर्ध्वास्तिसस्तिरस्तिस्त्री मध्ये मीनं लिखेद् बुधः ।  
सूर्याचन्द्रमसौ दृष्टौ क्रान्तिसाम्यं निगद्यते ॥११४॥

मीनः कन्यकया युक्तो मेषः सिंहेन संगतः ।  
मकरेण वृषः कांतिश्चापोऽपि मिथुनेन च ॥११५॥

कर्केण वृश्चिको विद्धो वेधश्च तुलकुम्भयोः ।  
क्रान्तिसाम्ये कृतोद्वाहो न जीवति कदाचन ॥११६॥

टीका-तीन रेखा ऊर्ध्व और तीन तिरछी खींच कर ऊर्ध्व मध्य की रेखा पर मीन, कन्या और तिरछी मध्य पर मिथुन,

|   |    |    |      |
|---|----|----|------|
| १ | १२ | ११ |      |
| २ | —  | —  | — १० |
| ३ | —  | —  | — ९  |
| ४ | —  | —  | — ८  |
| ५ | ६  | ७  |      |

धन लिख के क्रम से सब लग्नों को रख कर चक्र बनाइये, उसमें एक रेखा पर चन्द्र, सूर्य पड़े तो क्रान्तिसाम्य दोष कहिये । मीन से कन्या का वेध जानिये, मेष, से सिंह का, मकर से वृष का, मिथुन से धन का, कर्क से वृश्चिक का, तुला से कुम्भ का इन राशियों से परस्पर समझ कर त्याग दीजिये, ऐसे वेध में विवाह किया हुआ मनुष्य कभी नहीं जीता ॥ ११६ ॥

क्रान्तिसाम्ये च कन्याया यदि पाणिग्रहो भवेत् ।  
कन्या वैधव्यतां याति ईशस्य दुहिता यदि ॥११७॥

टीका—जो क्रांतिसाम्य में विवाह होवे तो कन्या विधवा हो, यदि ईश्वर ( महादेव ) की पुत्री हो तो भी इस दोष पर विवाह होने से विधवा हो जायगी ॥११७॥

मर्मवेधादिदोषविचारः

मर्मवेधः कंटकश्च शल्यं छिद्रं चतुर्थकम् ।

एतद्वेधचतुष्कं तु परित्याज्यं प्रयत्नतः ॥११८॥

टीका—अब चार दोष कहते हैं । मर्मवेध १, कंटक २, शल्य ३ और छिद्र ४, इन दोषों को यत्न करके बचाइये, यह गणक जनों की आशा है ॥ ११८ ॥

लग्ने पापे मर्मवेधः कण्टको नवपञ्चके ।

चतुर्थे दशमे शल्यं छिद्रं भवति सप्तमे ॥११९॥

टीका—लग्न में पाप ग्रह हो तो मर्मवेध, चौथे और दशमस्थान में पापग्रह हो तो शल्यदोष, सप्तम स्थान में पापग्रह हो तो छिद्र दोष और नवम और पंचम स्थान में पापग्रह हो तो कंटक दोष होता है ॥ ११९ ॥

मरणं मर्मवेधे स्यात् कण्टके च कुलक्षयः ।

शल्ये च नृपतेर्भीतिः पुत्रनाशश्च छिद्रके ॥१२०॥

टीका—जो मर्मवेध में विवाह होवे तो मृत्यु, कंटक में होवे तो कुटुम्ब का क्षय, शल्यदोष में होवे तो राजभय और छिद्र में हो तो पुत्र का नाश जानिये ॥ १२० ॥

जन्ममास तथा ज्येष्ठ विवाह विचारः

जन्ममासे जन्मभे च नैव जन्मदिनेऽपि च ।

ज्येष्ठे न ज्येष्ठगर्भस्य विवाहं कारयेत्क्वचित् ॥१२१॥

टीका—जन्म का मास, जन्म का नक्षत्र, जन्मका दिन और



जेठ मास ये प्रथम गर्भ की उत्पत्तिवाले के विवाह में वर्जित किये हैं । परन्तु जो गर्भ के विषय में हो गया है वही ज्येष्ठत्व अनेक मतान्तर से प्रधान है ॥ १२१ ॥

न कन्यावरयोज्येष्ठे ज्येष्ठयोः पाणिपीडनम् ।

द्वयोरेकतरे ज्येष्ठे न ज्येष्ठो दोषमावहेत् ॥ १२२ ॥

टीका-जो वर तथा कन्या दोनों प्रथम गर्भ के हों तो ज्येष्ठ मास में विवाह नहीं करना और कन्या या वर इन्हीं में एक ज्येष्ठ हों तो ज्येष्ठ में विवाह कीजिये, दोष नहीं है क्योंकि तीन ज्येष्ठ नहीं होना चाहिये ॥ १२२ ॥

सिंहे गुरौ गते कार्यो न विवाहः कदाचन ।

मेषस्थिते दिवानाथे सिंहेज्ये न शुभप्रदः ॥ १२३ ॥

टीका-बृहस्पति सिंह राशि के हों तब विवाह नहीं करना चाहिये, परन्तु मेष के सूर्य होने पर सिंह का गुरु भी शुभ फलदायक है ॥ १२३ ॥

विशोपकाफलम्

रवौ सार्धत्रयो भागाः पञ्च चन्द्रे गुरौ त्रयः ।

द्वन्द्वे शुक्रेन्दुपुत्रे स्याद्विश्वाभागप्रदायकाः ॥ १२४ ॥

प्रत्येकं सार्धभागाश्च मन्दमङ्गलराहुषु ।

ग्रहा वलयुता विश्वा प्रयच्छन्ति न दुर्बलाः ॥ १२५ ॥

टीका सूर्य के ३ भाग, चन्द्रमा के ५ भाग, गुरु के ३ भाग, बुध के २ भाग, इन भागों के विश्वा शुभ हैं । शनि, मंगल राहु और इन केतु ग्रहों के डेढ़, डेढ़ विश्वा भाग पूर्वक जब तक वलिष्ठ रहें तब तक शुभ हैं, जब ये क्षीण हो जायँ तब निर्बल हैं ॥ १२४ ॥ ॥ १२५ ॥

कनदा ग्रहाः

केन्द्रे सप्तमहीने च द्वित्रिकोणे शुभाऽशुभाः ।

धने शुभप्रदश्चन्द्रः पापा पष्ठे च शोभनाः ॥१२६॥

तृतीयैकादशे सर्वे सौम्याः पापा शुभप्रदाः ।

ते सर्वे सप्तमस्थाने मृत्युदा वरकन्ययोः ॥१२७॥

टीका-केन्द्रस्थान ( लग्न, चतुर्थ, सप्तम, दशम ) में जो शुभ ग्रह हों तो श्रेष्ठ है । अकेला सातवाँ स्थान अशुभ है । शुक्र, बुध, बृहस्पति और शुक्लदशमीसे कृष्णपक्षकी ५ पर्यन्तका चन्द्रमा श्रेष्ठ चलो होता है और सूर्य राहु, शुक्ल पक्ष २ से दशमी १० पर्यन्त का चन्द्रमा ये चार ग्रह क्रूर जानिये । भौम, शनि, केतु, कृष्ण पक्ष ५ से ३० तक चन्द्रमा ये पापग्रह हैं, लग्न से २ स्थान का चन्द्रमा शुभ है । पापग्रह ६ वें स्थान का शुभ है, ३।११ स्थानों में सब ग्रह शुभ हैं और वे सौम्य. क्रूर ( पापग्रह ) ७ वें स्थान में हों तो वर कन्या को मृत्यु देने वाले होते हैं ॥ १२६॥१२७ ॥

शुभाशुभग्रहाः

शनिः सूर्यश्च लग्नेऽस्ते चन्द्रो लग्नेऽष्टमे रिपौ ।

कुजो लग्नेऽष्टमे चास्ते शुक्रो द्यूनेऽष्टमे रिपौ ॥१२८॥

गुरुर्मृत्यौ सैहिकेयो लग्ने तुर्ये च सप्तमे ।

बुधोऽष्टमे च जामित्रे विवाहः प्राणनाशकः ॥१२९॥

क्रूरयोरन्तरं लग्नं चन्द्रं च परिवर्जयेत् ।

वरं हन्ति ध्रुवं लग्नं शीतरश्मिश्च कन्यकाम् ॥१३०॥

टीका-शनि व सूर्य जो लग्न में सातवें हों, चन्द्रमा १।६।८,



भौम १८७, शुक्र ७८६, बृहस्पति ८, राहु, १।७।४ और बुध ८।७ ये ग्रह इतने स्थानों में विवाह में प्राण का नाश करने वाले हैं और पापग्रहों के मध्य चन्द्रमा अथवा लग्न होवे तो दोनों वर्जनीय हैं, क्योंकि पापग्रहयुक्त लग्न वर को, चन्द्रमा कन्या को शीघ्र ही मारता है ॥ १२८-१३० ॥

शुभमध्यलग्नानि

तुला च मिथुनं कन्या पूर्वार्द्धौ धनुषो वृषः ।

एते लग्नाः शुभा नित्या मध्यमाश्चापरे स्मृताः ॥ १३१ ॥

टीका—तुला, मिथुन, कन्या, वृष तथा धन का पूर्वार्ध इतने लग्न शुभ हैं, शेष लग्न मध्यम हैं ॥ १३१ ॥

लत्तादिदोषापवादः

लत्ता मालवके देशे पातश्च कुरुजांगले ।

एकार्गलं च काश्मीरे वेधं सर्वत्र वर्जयेत् ॥ १३२ ॥

ट का—लत्तादोष मालवदेशमें वर्जनीय, पातदोष कुरु व जांगल देश में निषिद्ध है, एकार्गल दोष काश्मीर देश में मना है और वेधदोष सभी देशोंमें वर्जित है ॥ १३२ ॥

नवमांशलग्नचक्रम्

मेषे नवांशा मेषाद्या वृषे च मकरादिकाः ।

मिथुने च तुलाद्याः स्युः कर्कटे कर्कटादिकाः ॥ १३३ ॥

मेषाद्यौ च धनुःसिंहौ गोकन्ये मकरादिके ।

तुलाद्यौ युग्मकुंभौ च कर्काद्यौ मीनवृश्चिकौ ॥ १३४ ॥

गोतुलायुग्मकन्यानां नवांशाः शुभदाः स्मृताः ।

धनुषः प्रथमो भागो विवाहेऽन्ये च मध्यमाः ॥ १३५ ॥

टीका—मेष आदि वारह राशि के नवांशक कहते हैं । लग्न के नवम भाग को नवांशक कहते हैं । मेष, सिंह, धन,

इन तीनों के पहिले नवांशक में मेघ से नवपर्यन्त गिनिये, वृष कन्या, मकर, इन तीनों का नवांशक मकर आदि से कन्या पर्यन्त मानिये, मिथुन, तुला, कुम्भ, इन तीनों का नवांश तुला आदि से मिथुन पर्यन्त और कर्क, वृश्चिक, मीन, इन तीनों का नवांशक कर्क आदि से मीन पर्यन्त गिनिये । इस चक्र में समझ लोजिये । वृष, तुला, मिथुन, कन्या इनका नवांश शुभ है और धन का पहिला भाग, शुभ शेष अशुभमिश्रित हैं और नवांश जो है वह विवाह में मध्यम है ॥ १३३-१३५ ॥

मेपादिराशीनां नवांशचक्रम्

|     |      |      |      |     |      |      |      |     |      |      |      |
|-----|------|------|------|-----|------|------|------|-----|------|------|------|
| मे. | वृ.  | मि   | क.   | सि  | क.   | तु.  | वृ.  | ध.  | म.   | कुं. | मी.  |
| मे. | म    | तु.  | क.   | मे. | म.   | तु.  | क.   | मे. | म.   | तु.  | क.   |
| वृ. | कुं. | वृ.  | सि   | वृ. | कुं. | वृ.  | सि   | वृ. | कुं. | वृ.  | सि   |
| मि. | मी   | ध.   | क.   | मि. | मी   | ध.   | क.   | मि  | मी   | ध.   | कं.  |
| क.  | मे.  | म.   | तु.  | क.  | मे.  | म.   | तु.  | क.  | मे.  | म.   | तु.  |
| सि. | वृ.  | कुं. | वृ.  | सि  | वृ.  | कुं. | वृ.  | सि  | वृ.  | कुं. | वृ.  |
| क.  | मि   | मी.  | ध.   | कं. | मि.  | मी.  | ध.   | कं. | मि   | मी.  | ध.   |
| तु. | क.   | मे.  | म.   | तु. | क.   | मे.  | म.   | तु. | क.   | मे.  | म.   |
| वृ. | सि   | वृ.  | कुं. | वृ. | सि   | वृ.  | कुं. | वृ. | सि   | वृ.  | कुं. |
| ध.  | क.   | मि   | मी.  | ध.  | कं.  | मि   | मी.  | ध.  | कं.  | मि   | मी   |
| १   | २    | ३    | ४    | ५   | ६    | ७    | ८    | ९   | १०   | ११   | १२   |

अंशस्य पतिरंशे चतन्मित्रं वाथ शुभोऽपि वा ।

पश्यतीह शुभोन्नेयः सर्वे दोषाश्च निष्फलाः ॥ १३६ ॥

टीका-नवांश का स्वामी अथवा स्वामी का मित्र और



शुभग्रह नवांश में हों, अथवा इनकी दृष्टि लग्न पर पड़े तो सब दोषों को निष्फल करे ॥ १३६ ॥

होलाष्टकम्

शुक्लाष्टमीं समारभ्य फाल्गुनस्य दिनाष्टकम् ।

पूर्णिमामवधिं कृत्वा त्याज्यं होलाष्टकं बुधैः ॥ १६७ ॥

शुतुद्रयां च विपाशायामैरावत्यां त्रिपुष्करे ।

होलाष्टकं विवाहादौ त्याज्यमन्यत्रशोभनम् ॥ १३८ ॥

टीका—फाल्गुन के शुक्लपक्ष की अष्टमी से पूर्णिमा तक आठ दिन ( होलाष्टक ) वर्जनीय कहते हैं । वह शुतुद्री नदी, विपाषा नदी और इरावती नदी के तीर के देशोंमें और त्रिपुष्कर क्षेत्रमें विवाहादिक शुभकार्य में वर्जित है अन्यत्र-शुभ है ॥ १३७-१३८ ॥

अन्ध-वधिर-कुब्जलक्षणम्

दिने सदां धावृषमेपसिंहा रात्रौ च कन्यामिथुनकुलीरः ।

मृगस्तुलातिर्वधिरोऽपराह्णे संध्यासुकुब्जाघटधन्विमीनाः

टीका—वृष, मेष, सिंह ये दिनमें अन्ध लग्न हैं, कन्या मिथुन, कर्क ये रात्रिमें अन्धे हैं, मकर तुला, वृश्चिक अपराह्ण में बहरे हैं और धन, कुम्भ, मीन ये सन्ध्या में कुबड़े हैं ॥ १३९ ॥

दिवांधो वरहन्ता च रात्र्यंधो धननाशकः ।

दुःखदो वधिरो लग्नः कुब्जो वंशविनाशकः ॥ १४० ॥

टीका—दिन के अन्धे लग्न में पाणिग्रहण हो तो वरकी हानि हो, रात्रि के अन्धे लग्न में हो तो धन का नाश हो, बहरे लग्न में पाणिग्रहण हो तो दुःखदायक है और कुबड़े लग्न में विवाह हो तो वंश का नाश होता है ॥ १४० ॥

गोधूलिकलग्नविचारः

यत्र चैकादशश्चन्द्रो द्वितीयो वा तृतीयकः ।

गोधूलिकःसविज्ञेयःशेषाधूलिमुखाःस्मृताः ॥१४१॥

टीका—जो ग्यारहवें स्थान में चन्द्रमा हो अथवा दूसरे, तीसरे स्थानोंमें हो तो वह गोधूलिक लग्न है और शेष धूलि-मुख कहे जाते हैं ।

गोधूलिकदोषः

कुलिकःक्रांतिसाम्यं च लग्नेषष्टेऽष्टमे शशी ।

तदा गोधूलिकस्त्याज्यः पंचदोषैश्चदूषितः ॥१४२॥

टीका—कुलिकयोग, क्रांतिसाम्य और लग्न से छठवें तथा आठवें चन्द्रमा हो तो वह गोधूलिक लग्न विवाह में त्याग करना क्योंकि लग्न पाँच दोषों से दूषित है ॥ १४२ ॥

गोधूलिकप्रमाणम्

यदा नास्तंगतो भानुर्गोधूल्यां पूरितं नभः ।

सर्वमंगलकार्येषु गोधूलिश्च प्रशस्यते ॥१४३॥

टीका—जब सूर्य अस्त न हुआ हो और गायों के खुरों की धूलि आकाश में पूरित हो रही हो तब यह गोधूलिक सुदृढ सर्व कार्यों में मंगलकारी होता है ॥ १४३ ॥

गोधूलिकनाशकदोषः

अष्टमे जीवभौमौ च बुधौ वाभार्गवोऽष्टमे ।

लग्नो पष्ठाष्टमे चन्द्रस्तदा गोधूलिनाशकः ॥१४४॥

टीका—जो लग्न से आठवें स्थान में गुरु, भौम, बुध और शुक्र हों तो यह गोधूलिनाशक दोष है, उस सुदृढ में सब कार्य वज्रित हैं ॥ १४४ ॥



लग्नपुष्टिकरा ग्रहाः

लग्नादेकादशे सर्वे लग्नपुष्टिकरा ग्रहाः ।

तृतीये चाष्टमे सूर्यः सूर्यपुत्रश्च शोभनः ॥१४५॥

चन्द्रो धने तृतीये च कुजः षष्ठे तृतीयके ।

बुधेज्यौ नवषट्द्वित्रिचतुः पंचदशे स्थितौ ॥१४६॥

शुक्रो द्वित्रिचतुः पञ्च धर्मकर्मतनुस्थितः ।

राहुर्दशाष्ट षट् पञ्च त्रिनवद्वादशे शुभः ॥१४७॥

टीका—लग्न से ग्यारहवें स्थान में सब ग्रह शुभ हों सूर्य, ३, शनि ८, चन्द्रमा २।३, भौम ३।६, बुध व बृहस्पति ९।६।२।३।४।५।१०। इन स्थानों में, शुक्र २।३।४।५।९।१०। १ इतने स्थानों में शुभ फलदायक है ॥ १४५--१४७ ॥

दिनमानज्ञानम्

छायापादे रसोपेतैरेकविंशशतं भजेत् ।

लब्धांके घटिकाज्ञेयाः शेषांके च पलाः स्मृता ॥१४८॥

टीका—अब दिन नापनेको कहते हैं । अपने शरीर की छाया को अपने पाँव से नापिये, जितनी संख्या हो उसमें ६ और मिलावे, फिर एकसौ इक्कीस १२१ में उससे भाग देवे, जो लब्धि आवे वह घड़ी जानना । यदि दिन बढ़ता हो तो चढ़ता दिन जानना और उतरता हो तो बाकी दिन जानना । भागके पीछे जो शेष रहेगा उसे बढ़ाकर पलकर लीजिये तो वहीफल होगा ।

उदाहरण—अपनी छायाको अपने चरण से किसीने नापा तो ७ हुआ इसमें ६ और मिलाया तो १३ हुआ, इसका भाग १२१ में दिया तो ९ लब्धि मिले शेषको ६० से गुणा करे तो २४० हुआ, इसमें १३ का भग देने से १८ पल मिले, फिर

शेष २७ ॥ विपल मिले अर्थात् ६ दं. १८ प. २७ वि. ॥  
प्र. वि. इष्ट समय हुआ ॥ १४८ ॥

रात्रिमानज्ञानम्

पूर्वाषाढानुराधा च ज्येष्ठाश्लेषा च रेवती ।  
विशाखा च यदा मूर्ध्नि तदास्यादष्टमोदयः ॥ १४९ ॥  
सूर्यभान्मौलिभं गण्यं सप्तहीनं च शेषकम् ।  
द्विगुणंचद्विहीनं च गता रात्रिःस्फुटा भवेत् ॥ १५० ॥  
मस्तके मृगशीर्षे च मूले च नवमोदयः ।  
अन्यदृक्त्वं यदा मूर्ध्नि तदा स्यादष्टमोदयः ॥ १५१ ॥

टीका—अब रात्रिमान निर्णय कहते हैं । पूर्वाषाढा, अनुराधा ज्येष्ठा, आश्लेषा, रेवती, विशाखा इन नक्षत्रों में से कोई नक्षत्र माथे पर हो तो सातवें नक्षत्र पर उदय जानिये । और सूर्य के नक्षत्र से मूर्ध्निगत नक्षत्र तक गिनकर सात से घटावे, जो शेष बचे उसे दूना करके फिर दो घटावे, जो शेष बचे उसे दूना करके फिर दो घटा देवे तो वह रात्रि का गत वा भोग्य होगा । जो मृगशिरा वा मूल माथे पर हों तो नवम नक्षत्रका उदय जानिये और जो अन्य नक्षत्र माथे पर हों तो मुख से लेकर आठवें नक्षत्रका उदय जानिये ॥ १४९-१५१ ॥

केन्द्रस्य गुरोर्महत्त्वम्

किं कुर्वन्ति ग्रहाः सर्वे यस्य केन्द्रे बृहस्पतिः ।  
मत्तमातङ्गयथानां शतं हन्ति च केसरी ॥ १५२ ॥

टीका—जिसके केन्द्र याने १४७।१० इन स्थानों में बृहस्पति अकेले हों तो और सब ग्रह क्या कर सकते हैं । जैसे अकेले सिंह सैकड़ों हाथी का समूह नाश करता है वैसेही वह और ग्रह-जनित अरिष्टों का नाश कर देता है ॥ १५२ ॥



शुक्रो दशसहस्राणि बुधो दशशतानि च ।

लक्षमेकं तु दोषाणां गुरुर्लग्ने व्यपोहति ॥१५३॥

टीका—जो लग्न में शुक्र हो तो दश हजार दोषों का, बुध हो तो हजार दोषों का और गुरु लग्न में हो तो लाख दोषों का नाश करता है ॥ १५३ ॥

सर्पाकारचक्रम्

|        |           |          |          |          |        |
|--------|-----------|----------|----------|----------|--------|
| अ.     | आ.पुन.    | उफा.ह.   | व्ये.मू. | श.पू.भा. | आदि    |
| भ. मृ. | पु. पूफा. | चि. अनु. | पूषा.    | ध. उभा.  | मध्य   |
| कृ.रो. | श्ले.म.   | स्वा.वि. | उषा.अ.   | रे.      | अन्त्य |

सर्पाकारं लिखेच्चक्रं विवाहे च त्रिनाडिकम् ।

अश्विनीप्रमुखं भं च दत्त्वा साम्यं विचारयेत् ॥१५४॥

एकनाडीस्थनक्षत्रे दंपत्योर्मरणं ध्रुवम् ।

सेवायां च भवेद्धानिर्विवाहेत्वशं भवेत् ॥१५५॥

टीका—सर्पका आकार लिखकर त्रिनाडी करके अश्विनी आदि ३ नक्षत्रको एक नाडीमें रखिये, ऐसे ९ स्थानोंमें पूछ तक सत्ताइसों नक्षत्र रखिये, एक नाडीमें यदि विवाह लग्नका नक्षत्र पड़े तो वर, कन्या की मृत्यु अवश्य होती है और सेवाकर्म में हानि होती है । अतः विवाहमें शुभ नहीं होता ॥१५४॥१५५॥

नवदोषा वज्र्याः

परिघाट्टं व्यतीपातं वैधृतिं सकलं त्यजेत् ।

विष्कुम्भे घटिकाः पंचशूले सप्त प्रकीर्तिताः ॥१५६॥

षड्गण्डे चातिगण्डे च नव व्याघातवज्रयोः ।

एते तु नव योगाश्च वज्र्या लग्ने सदा बुधैः ॥१५७॥

टीका— इन निषिद्ध नवयोगों को पण्डितों ने वजित किया है । इसमें परिधयोग की ३० घटी, व्यतीपात और वैधृति की संपूर्ण विष्कुम्भ की ५ घटी, शूल की ७ घटी, गंड तथा अतिगंड की ६, व्याघात की ९ और वज्र की ९ घटी विवाहादि शुभ कार्यों में वजित है ॥ १५६ ॥ १५७ ॥

व्यतीपाते भवेन्मृत्युर्गण्डांते मरणं ध्रुवम् ।

अग्निदग्धो भवेद्वज्रे रुजश्चैवापि गंडके ॥१५८॥

वैधव्यं वैधृतौ चैव विष्कुम्भे कामचारिणी ।

वीर्यहीनोऽतिगंडे च व्याघाते मृतवत्सका ॥

परिधे च भवेद्दासी मद्यमांसरता सदा ॥१५९॥

टीका— व्यतीपात और गंडांतमें विवाह करे तो मृत्यु हो जावे, वज्रमें आगसे जल जाय, गंडमें रोग होवे, वैधृति में विधवा, विष्कुम्भ में कामातुर, अतिगंड में बलरहित, व्याघातमें मृतवत्सा यानी पुत्र नहीं जीवे और परिधमें विवाह करे तो कन्या पराई दासी होकर मांस-मदिरादि का सेवन करे ॥ १५८-१५९ ॥

पट्टाकारं चक्रम्

पट्टाकारं लिखेच्चक्रमष्टकोणसमन्वितम् ।

यस्मिन्नृक्षे भवेत्सूर्यस्तदाद्यं मध्यमं त्रयम् ॥१६०॥

त्रयं त्रयञ्च सर्वत्र ततः पूर्वादितो लिखेत् ।

नक्षत्रत्रितये मध्ये पक्षद्वयविनाशनम् ॥१६१॥

पूर्वस्थाने भवेत्क्षत्नी धनधान्यसमागमः ।

नकोणे भवेन्मृत्युर्नारी कुलविनाशिनी ॥१६२॥



दक्षिणेदुर्भगा नारी दारिद्र्यं मृत्युमाप्नुयात् ।

नैऋत्ये पुत्रलाभश्च सुखं सौभाग्यमेव च ॥१६३॥

पश्चिमे विधवा कन्या वायव्येव्यभिचारिणी ।

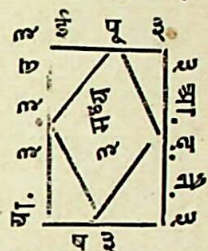
उत्तरे धनधान्यानि चैशान्ये सुखसम्पदः ॥१६४॥

मांगल्यं सर्वकार्येषु पट्टचक्रं विचारयेत् ।

गर्गाचार्येण संप्रोक्तं सर्वसिद्धिप्रदायकम् ॥१६५॥

टीका-सूर्य के नक्षत्र से दिन के नक्षत्र तक गिनिये, पुनः

पट्टाकार चक्रके मध्य कोठा में ३ धरिये, इसी क्रम से पूर्वादि आठों दिशाओं में ३-३ नक्षत्र धरिये । जिस दिशा में दिन का नक्षत्र पड़े उसका फल इस प्रकार कहिये । मध्य में हो तो दोनों कुल का नाश होवे, पूर्वमें हो तो लक्ष्मी धनधान्य की प्राप्ति हो, आग्नेकोणमें मृत्यु व कुलवि-



नाशिनी स्त्री, दक्षिणमें अभागिनी स्त्री, दारिद्र्य, मृत्यु, नैऋत्य में पुत्रलाभ, सौभाग्य, सुख, पश्चिम में वैधव्य होवे, वायव्य में व्यभिचारिणी, उत्तर में धन-धान्य सुख और ईशानकोण में सुख-संपदा मिलती है । यह मंगल देने वाला चक्र सब कार्यों में विचारे, क्योंकि सब कार्यों में सिद्धि देने वाले, इस चक्रको गर्गाचार्य ने बताया है ॥ १६०॥१६५ ॥

इति प्रथमप्रकरणं समाप्तम् ॥



# अथ द्वितीयप्रकरणं प्रारभ्यते ।

वधूप्रवेशमुहूर्तः

हस्तत्रये ब्रह्मयुगे मघायां पुष्ये धनिष्ठाश्रवणोत्तरेषु ।

मूलानुराधाहयरेवतीषु स्थिरेषु लग्नेषु वधूप्रवेशः ॥ १ ॥

टीका—ह० चि० स्वा० रो० मृ० म० पुष्य ध० श्र० उ०  
तीनों, मू० अनु० अश्वि० रे० इन १६ नक्षत्रों में और वृ० सि०  
कुम्भ० इन लग्नों में वधूप्रवेश करना चाहिये ॥ १ ॥

द्विरागमनमुहूर्तः

धातुयुगमं हयो मैत्रं श्रुतियुगमं करयत्रम् ।

पुनर्वसुद्वयं पूषा मूलं चाप्युत्तरात्रयम् ॥ २ ॥

विषमे वत्सरे मासे मार्गे मेषे च फाल्गुने ।

मकरे मिथुने मीने लग्ने कन्या तुला धनुः ॥ ३ ॥

भौमार्किकवर्जिता वारा गृह्यन्ते चद्विरागमे ।

षष्ठीरिक्ता द्वादशी च अमावस्या च वर्जिता ॥ ४ ॥

टीका—रोहिणी, मृगशिरा, अश्विनी, अनु० श्र० ध० ह०  
चि० स्वा० पु० पु० रेवती मू० और तीनों उत्तरा इतने नक्षत्र  
द्विरागमन में श्रेष्ठ हैं । विषम वर्ष तथा अगहन, फाल्गुन वैशाख  
मास श्रेष्ठ हैं । म० मि० मी० क० तु० लग्न श्रेष्ठ और

अथ वधूप्रवेशद्विरागमनादि निर्णयः—

तत्र वधूप्रवेशशब्दार्थः । वधूप्रवेशो नाम नूतन परिणीतायाः  
कन्यायाः प्रथमतः करिष्यमाणो भर्तृगृहे प्रवेशो वधूप्रवेशशब्दवाच्यः ॥

द्विरागमनशब्दार्थः

पूर्वं नववधूप्रवेशे जाते तदन्तरं परावृत्त्यापि पितृ गृहं प्राप्ताया अपि  
वध्वां यथेष्ट वर्षाणि स्थितायाः पुनर्भर्तृ गृहे प्रवेशो द्विरागमनशब्दवाच्यः ॥



मंगल व शनिवार तथा पण्ठी, रिक्ता, द्वादशी अमावस्या ये तिथियाँ वजित हैं १-४ ॥

तेन प्रथम प्रवेशे न शुक्र दोषोऽभिहतः । रात्रौ विवाहमे शस्तः  
सन्मुहूर्ते स्थिरोदये । वधूप्रवेशी नैवात्र प्रति शुक्राद्भयं विदुः ॥ १ ॥ तत्र  
रामाश्रमाचार्यः । सामाहि पञ्चाङ्ग दिने विवाहात्बधू प्रवेशोऽष्ट  
दिनान्तराले ॥ अतः परस्ताद् विषमाद्विमास दिनेषु वर्षात्परतो यथेष्टम् ॥ २ ॥  
उक्तं च नगर प्रवेश विषया द्युपद्वये करपीडने विबुधतीर्थयात्रयोः नृप-  
पीडने नववधू प्रवेशने प्रतिभोगो भवति दोष कृत्वाहि ॥ ३ ॥ शुक्रः  
संमुखे दक्षिणे यदि स्वादगच्छेयुर्नाह शिशु गर्भिणी नवोडा अत्र तु  
नहि नवोडा शब्देन वधूप्रवेशो—उक्तं च नवोडास्तु वैधव्य वदुक्तं  
संमुखे भृगौ तदत्र विबुधै ज्ञेयं केवलं तु द्विरागमे ॥ ४ ॥ तत्र विलम्बित-  
वधू प्रवेशो वैशाखमार्गशीर्षफाल्गुनसौरचान्द्रद्वययोगविवाहवत्कार्यः ॥  
तृतीयवारगमने राहुविचारः आद्यर्के भ्रमते राहुः पूर्वाशादि चतुष्टये ।  
स राहुर्दक्षिणे त्याज्यस्तृतीयगमने स्त्रियः ।

विवाह के बाद पहिले पहलपति के गृह में वधू के प्रवेश को वधू  
प्रवेश तथा वधू प्रवेश हो जाने के बाद पिता के गृह में फिर वह जाय  
पुनः पति के गृह में जाने को द्विरागमन कहते हैं, और द्विरागमन हो  
जाने के बाद वह वधू पित्रालय में जाकर पुनः पति के गृह में आने का  
द्वयङ्ग यात्रा कहते हैं । वधू प्रवेश और द्विरागमन का अर्थ पंकज शब्द  
के समान बालक से बृद्ध पर्यन्त पूर्वोक्त अर्थ के समान जानते हैं ।  
शास्त्रों में कहीं भी वधूप्रवेशार्थ यात्रा का नाम द्विरागमन नहीं लिखा  
है । किसी किसी आधुनिकों ने कोरी कल्पना करके नूतन पद्य रचना कर  
एक वर्ष के बाद वधू प्रवेश को जो द्विरागमन कहते हैं, वह महर्षियों  
की आज्ञा को भङ्ग करते हैं, वधू प्रवेश चाहे कितने ही दिन व्यतीत होने  
परहो उसको वधू प्रवेश कहते हैं उसमें शुक्रके सम्मुख दक्षिणका निषेध  
कहीं भी नहीं है । वात्स्यायन के “स्त्री विवाहः कुले निर्गमः कथ्यते  
पुंविवाहप्रवेशो वशिष्ठादिभिः । निर्गमादादितिगप्रवेशो हितस्तत्र  
सम्बत्सरान्तोऽवधिः कीर्तितः ॥” इस वचन का भावार्थ यह है कि स्त्री  
का विवाह निर्गम पुरुष का विवाह प्रवेश संज्ञक है । पुरुष का विवाह  
होने के बाद कुल में स्त्री का विवाह जब तक सम्बत् न बीते तब तक न  
करे । परन्तु लाल बुझकड़ इसका अर्थ ठीक समझके एक सालतक वधू

अथ द्विरागमनार्थं नक्षत्रादीनां चक्रम्

| रो     | मृ. | अश्वि. | अनु. | श्र.    | घ.    | ह.    | चि.   | स्व. | नक्षत्र |
|--------|-----|--------|------|---------|-------|-------|-------|------|---------|
| पुन    | पू. | रे.    | रे.  | उ.फा.   | उ.पा. | उ.भा. | ०     | ०    | ०       |
| १      | ३   | ५      | ७    | ९       | ११    | १३    | १५    | १७   | वर्ष    |
| मार्ग० |     |        |      | फाल्गुन |       |       | वैशाख |      | मास     |
| मि.    | क.  | तु.    | ध.   | म.      | मी.   | ०     | ०     | ०    | लग्न    |
| १.     | च.  | बु.    | शु.  | शु.     | ०     | ०     | ०     | ०    | ०       |
| १      | २   | ३      | ५    | ७       | ८     | १०    | ११    | १३   | तिथि    |

गर्भाधानसुहृत्तः

श्रुतित्रये मृगे हस्ते मित्रमे ध्रुवसंज्ञक ।

सद् वारे सत्तिथौ श्रेष्ठं स्थिरे लग्ने महीसुराः ॥ ५ ॥

शुभे त्रिकोणे केन्द्रस्थे पापे षष्ठत्रिलोभक ।

पुत्रकामः स्त्रियं गच्छेन्नरो युग्मासु रात्रिषु ॥ ६ ॥

आधारणी यंत्रम्

| आ.पु.  | पु.     | पू.पा. | उ.भा. | मू. | रे.     | अ. |
|--------|---------|--------|-------|-----|---------|----|
| ह. मू. | पू. पा. | उ. पा. | न.    | र.  | मं. वृ. |    |
| वा. १  | २       | ३      | ५     | ६   | ७       | ८  |
| १० ११  | १२      | १३     | नि.   | १   | २       | ३  |
| सा. ६  | ७       | ८      | ९     | १०  | ११      | १२ |

टी०—श्र. घ. श. मृ. ह.

अनु. तीनों उत्तरा रो. इन  
नक्षत्र में शुभवार शुभतिथि  
में स्थिर लग्न में त्रिकोण  
५।९ केन्द्र । १४।७।१३  
इनमें सौम्यग्रह और ३।६

प्रवेशकी अवधि मिथ्या लिखा है, भला स्त्री का विवाह निगमपुरुष का प्रवेशसे जो वह तात्पर्य निकाले हैं सो यह तो विचारें कि पहिले निर्गम वाद प्रवेश है कृपया अपनी भूल स्वीकार करिये पुनः पुस्तक को धार्मिक बुद्धि से सुधारिये ।



११ इनमें पापग्रह हों तो उस समय जो स्त्री प्रसंग करे तो संतान अवश्य होवे, परन्तु रात्र्यंघ लग्न त्याज्य हैं । पुत्र की इच्छा वालों को युग्मरात्रि में ही स्त्री प्रसंग करना चाहिये ॥ ५-६

पुंसवनादिमुहूर्तः

पुनर्वसौ तथा पुष्ये मृगे वै श्रवणे करे ।  
मूलभेहि गुरौसूर्ये भौमे रिक्तां विना तिथिः ॥ ७ ॥  
आद्ये द्वये त्रये मासे लग्ने कन्या भूषे स्थिरे ।  
चापे पुंसवनं कुर्यात् सीमंतं चाष्टमे तथा ॥ ८ ॥

टीका-पु०, पु०, मृ, श्र, ह०, मू० इन नक्षत्रों में पुंसवन संस्कार करे और इसमें गुरु, रवि, मंगलवार में परन्तु रिक्ता ४।९।१४ तिथि वर्जित है । इसमें १।२।३ मास और ६।१२।२५।११।८ इन लग्नों में पुंसवन करे और सीमंत अष्टम ८ वें मास में करे ॥

नामकरण मुहूर्तः

पुनर्वसुद्वये हस्तत्रये मैत्रे हरित्रये ।  
दस्रे ध्रुवे मृगे पौष्णे द्वादशैकादशे दिने ॥ ९ ॥  
अन्यत्रापि शुभे योगे वारे बुधशशांकयोः ।  
भानोगुरोः स्थिरे लग्ने बालनामकृतं शुभम् ॥ १० ॥

टी० पु. पु. ह. चि. स्वा. अनु.  
श्र. ध. श. अ. ध्र. व. मृ. रे. नक्षत्र  
और ११।१२ वें दिन व. चं. र.  
गुरुवार और २।५।८।११ इन  
लग्नों में बालक का नामकरण  
शुभ होता है ॥ ९-१० ॥

| बालक नामकरण यंत्रम् |     |    |           |        |      |         |
|---------------------|-----|----|-----------|--------|------|---------|
| पु.                 | पु. | ह. | चि. स्वा. | अनु    | ज्ये | मू. मृ. |
| उ३                  | ध.  | चि | सू. चं.   | बु.    | वृ.  | वा ल.   |
| १                   | २   | ५  | ८ ल.      | नामकरण |      |         |

## बालनिष्क्रमणम्

मैत्रभे श्रवणे पुष्ये मृगे सूर्यक्षभे तथा ।  
 दास्ये पौष्णे च वसुभे शुभेवारे दिनेश्वरे ॥११॥  
 सिंहत्रये घटे लग्ने मासयोस्त्रिचतुर्थयोः ।  
 यात्रातिथौ च निष्कास्यः शिशुर्नैवार्किभौमयोः ॥१२॥

टीका-अनु. श्र. ध. मृ. पु.

रे. पु. अ. ये नक्षत्र, सिंह कन्या  
 तुला, कुम्भ ये लग्न तीसरे चौथे  
 मास में और यात्रा मुहूर्त्त में  
 कही हुई तिथियों में पहिले  
 कन्या व पुत्र को बाहर निका-  
 लना शुभ है, परन्तु भौम शनि-  
 वार वर्जित है ॥११-१२॥

| अथ बाल निष्क्रमणयन्त्रम् |      |     |      |         |        |
|--------------------------|------|-----|------|---------|--------|
| अनु                      | व्ये | मू. | श्र. | ध.      | रो     |
| मृ.                      | पु.  | पु. | ह.   | स्वा.   | उ. फा. |
| रे.                      | अ.   | उ.  | अनु  | नक्षत्र | पा.    |
| २                        | ८    | १३  | तु.  | १०      | १५     |
| सि.                      | क.   | तु. | कं.  | ल.      | ग्न.   |
|                          |      |     |      |         | ०      |

प्रसूतिकास्नानेत्यागः

पुनर्वसुद्वयं चित्रा विशाखा भरणीद्वयम् ।  
 मूलमार्द्रा मघा हेया श्रवणो दशमस्तथा ॥१३॥  
 सोमशुक्रबुधा नारी प्रसूतीस्नानकर्मणि ।  
 हेया प्रतिपदा षष्ठी नवमी च तिथिचयम् ॥१४॥

टीका-पुनर्वसु, पुष्य, चित्रा, वि० भ० कृ० म० आ० म०  
 श्र० ये दश नक्षत्र प्रसूति स्नान में वर्जित हैं । सोम, शुक्र, बुध,

१-पौष्णाश्विनी मघा सार्प पुरुहूताख्यभानि च । मूलं च तर्क-  
 नक्षत्र शूलाख्यं एषु भेषु वै ॥ १ ॥ उत्पन्नानां कुमारारणाम् अनिष्टानि  
 भवन्ति च । तत्र प्रकुर्वीत शान्ति साराज्ञया ध्रुवम् ॥ २ ॥



ये वार वर्जित और १।६।९।३० ये तिथियाँ वर्जित हैं । अतः इनमें प्रसूती स्त्रियाँ स्नान करें ॥ १३-१४ ॥

प्रसूतिका स्नान मुहूर्तः ।

रोहिण्युत्तररेवत्यो मूलं स्वात्यनुराधयोः ।  
धनिष्ठा च त्रयः पूर्वा ज्येष्ठायां मृगशीर्षके ॥१५॥  
एते यत्रागताभानि प्रसूती स्नानकोविदैः ।  
वारे भौमार्कयोर्जीवे स्नानमुक्तं सदैव हि ॥१६॥

टीका-रोहणी, तीनों उत्तरा,  
रेवती, मूल, स्वाती, अनुराधा,  
धनिष्ठा, पूर्वात्रय, ज्येष्ठा, मृग-  
शिरा ये चौदह नक्षत्र को ले और  
भौम, रवि गुरु ये वार स्नानमें  
विशेष शुभ हैं ॥१५-१६॥

| प्रसूतीस्नानयंत्रम् |     |      |     |     |     |    |    |
|---------------------|-----|------|-----|-----|-----|----|----|
| श्व.                | रो  | मू.  | अ.  | पू. | उ.  | फा | ह. |
| स्वा.               | अनु | ज्ये | पू. | उ.  | फ.  | ध. | श. |
| पू. ३               | रे. | वा   | सु. | च.  | वृ. | १० | ज  |
| ३                   | ४   | ५    | ६   | ८   | १०  | ११ | १२ |
| १३                  | १४  | ४    | ये  | ति  | थि  | ०  | ०  |

नवाम्बरधारणम्

हस्तादिपंचकेऽश्विन्यां धनिष्ठायां च पौष्णमे ।  
गुरौ शुक्रे बुधे वारे धार्य स्त्रीभिर्नवांबरम् ॥१७॥  
पुंभिः पुनर्वसुद्वन्द्वे रोहिण्युत्तरभेषु च ।  
लग्ने मीने च कन्यायां मिथुने च वृषे शुभे ॥१८॥

टीका-ह० चि० स्वा० वि० अनु० अश्वि० ध० रे० पुष्य  
पुनर्वसु रोहिणी तीनों उत्तरा इन १४ नक्षत्रों में गुरु, शुक्र,  
बुध, ये वार, मीन, कन्या, मिथुन, वृष ये लग्न स्त्री को नवीन

वस्त्र धारण करने के लिए शुभ है ॥ १७-१८ ॥

जलपूजनम्

मूलादितिद्वयं मैत्रं श्रुतिचान्द्रकराः शुभाः ।

जलवाप्यर्चनं हेयाः शुक्रमंदार्कभूमिजाः ॥१९॥

टीका—मू० पु० पु० अनु० श्र० मृ० ह० ये नक्षत्र ग्राह्य हैं, शुक्र, शनि, रवि, भौम, ये वार त्याज्य हैं । ऐसे मुहूर्त में प्रसूता स्त्री कूप जलाशय का पूजन करे ॥ १९ ॥

नवान्नभोजनमुहूर्तः

नवान्नभोजने ग्राह्यं वस्त्रे प्रोक्तमशेषतः ।

वारादिकौ सूर्यसोमौ नक्षत्रं श्रवणो मृगः ॥२०॥

टीका—जो नक्षत्र वस्त्र धारण में है वही नक्षत्र और श्र० मृ० नक्षत्र तथा वस्त्र धारण के वार में और सूर्य चन्द्रवार में नवान्न भोजन कराना शुभ है ॥ २० ॥

अन्नप्राशनमुहूर्तः

आद्यान्नप्राशने पूर्वाः सर्पार्द्रा कृत्तिका यमः ।

त्र्युत्तरे रोहिणी मैत्रे द्विदेवेन्द्राश्वराक्षसः ॥२१॥

नक्षत्राणि परित्यज्य वारौ भौमार्कनन्दनौ ।

द्वादशीसप्तमीरिक्ता पर्वनन्दास्तु वर्जिताः ॥२२॥

लग्नेषु च भूषो ग्राह्यो वृषः कन्या च मन्मथः ।

शुक्लपक्षे शुभे योगे संग्राह्यः शुभचन्द्रमा ॥

मासे षष्ठाष्टमे पुंसां स्त्रियो मासि च पंचमे ॥२३॥



| प्रथममन्त्रप्राशनमुहूर्त्तयन्त्रम् |     |      |          |     |      |     |     |
|------------------------------------|-----|------|----------|-----|------|-----|-----|
| ऽश्वि                              | कृ. | रो.  | मृ.      | पु. | पु.  | म.  | उ.  |
| ह.                                 | चि  | स्वा | वि       | ऽनु | ज्ये | मू  | भ.  |
| ध.                                 | ध.  | उ.   | रे.      | मं. | सू.  | च   | बु. |
| शु.                                | वृ. | वा   | २        | ३   | ५    | १०  | १३  |
| ति.                                | २   | ३    | ६        | २   | ल.   | शु. | उ.  |
| या.                                | च.  | द्र. | पु.      | २.  | पुर  | व.  | ६   |
| ८                                  | मा  | सा   | स्त्रिया | ५   | मा   | स   |     |

टीका-वालक के अन्न प्राशन  
 मुहूर्त्त में पूर्वा ३ आश्लेषा,  
 आर्द्रा कृत्तिका व भरणी तीनों  
 उत्तरा रोहिणी अनु० वि० ज्ये०  
 मू० ये नक्षत्र और भौम, शनि  
 ये वार १२।७।४।९।१४ ३०।  
 १।६।११ ये तिथियाँ, व्यतीपा-  
 तादि दुष्ट योग ये सब वर्जित  
 हैं और, मीन वृष, मिथुन

कन्या ये लग्न शुभ हैं। और शुक्लपक्ष तथा शुभयोग में और  
 शुभ चन्द्रमा में तथा छठवें मास में पुत्र के अन्नप्राशन में ग्राह्य  
 हैं और कन्या का अन्नप्राशन पांचवें मास में करें ॥ २१-२३ ॥

चूडाकर्म तथा भूषणधारणम्

पुनर्वसुद्वयं ज्येष्ठा मृगश्च श्रवणत्रये ।  
 हस्तत्रये च रेवत्यां शुक्लपक्षोत्तरायणे ॥२४॥  
 लग्ने गोस्त्रीधनुः कुम्भो मकरो मन्मथस्तथा ।  
 सौम्ये वारे शुभे योगे चूडाकर्म स्मृतं बुधैः ॥२५॥  
 हस्तत्रये हरिद्वंद्वे पूर्वाश्च मृगपंचके ।  
 मूले पौष्णे च नक्षत्रे बुधेऽर्के गुरुशुक्रयोः ॥२६॥

| चूडाकर्ममुहूर्तयन्त्रम् |      |      |     |      |      |    |      |  |  |
|-------------------------|------|------|-----|------|------|----|------|--|--|
| पु.                     | पु.  | ज्ये | मृ. | श्र. | ध.   | ह. | श.   |  |  |
| चि                      | स्वा | रे.  | न.  | शु.  | कल   | प. | तः   |  |  |
| ११                      | १२   | १    | २   | ३    | रा.  | शि | च.   |  |  |
| बु.                     | वृ.  | शु.  | वा  | र.   | २    |    | ११   |  |  |
| १०                      | ३    | ल.   | ग   |      | ३    | ५  | ६    |  |  |
| ७                       | १०   | १    | १३  | त    | धि   | भ. | द्रा |  |  |
| ज्ये                    | ती   | १३   | त.  | व    | ज्ये | है | ०    |  |  |

टीका-पुनर्वसु से दो यानि  
 पु० पु० ज्ये० मृ० श्र० ध०  
 श० ह० चि० स्वा० रे० ये  
 नक्षत्र, शुक्ल पक्ष, उत्तरायण वृ०  
 क० कुं० ध० म० मी० ये  
 लग्न और चन्द्र, बुध शुक्र ये  
 वार सर्वाङ्ग मुँडन में श्रेष्ठ हैं ।

जन्ममास, रिक्ता ये मुगडन और भूषण धारणमें वर्जित हैं । ह०  
 चि० स्वा० श्र० ध० पू० ३० म० अ० पु० पु० ऽश्ले० म० रे०  
 ये नक्षत्र रवि, बुध, गुरु, शुक्र ये वार भूषण धारण करने में  
 शुभ हैं ॥ २४-२६ ॥

विचारम्भमुहूर्तः ।

देवोत्थाने मीनचापे लगने वर्षे च पंचमे ।  
 हस्तत्रये हरिद्वन्द्वे पूर्वाश्विमृगपञ्चके ॥२७॥  
 मूले पौष्णे च तोयेशे बुधेऽर्के गुरुशुक्रयोः ।  
 विचारंभोऽत्र वर्ज्यश्च षष्ठ्यनध्यायरिक्तकाः ॥२८॥  
 रिक्तायां च अमायां च प्रतिपत्सु विवर्जयेत् ।  
 बुधेन्दुवासरे मूर्खः शनिभौमौ मृतिप्रदौ ॥२९॥  
 विचारम्भे गुरुः श्रेष्ठो मध्यमौ भृगुभास्करौ ।  
 बुधेन्दू चोपविद्यायां शनिभौमौ परित्यजेत् ॥३०॥

टीका-देवोत्थान-कार्तिक शुक्ल ११ से आपाद शुक्ल ११ तक  
 ह. चि. स्वा. श्र. ध. तीनों पूर्वा अ. मृ. आ. पु. पु. श्ले. म. रे.  
 श. नक्षत्र में बु. छ. वृ. शु. वार में मीन, धन लग्न और पांचवें



वर्ष में विद्यारम्भ करना चाहिये इनमें पष्ठी, अमावस्या, परिवा, चतुर्थी, नौमी, चतुर्दशी ये तिथियाँ वर्जित हैं । यदि बुध व चन्द्र वार में विद्यारम्भ करे तो बालक मर्ख हो शनि भौम में मृत्यु हो, विद्यारम्भ में गुरुवार श्रेष्ठ है, शुक्र, रवि मध्यम हैं । बुध, सोम उपविद्या में श्रेष्ठ कहे हैं, शनि मंगल सर्वथा त्याज्य है किसी २ के मत से बुधवार भी है ॥ २७-३० ॥

यज्ञोपवीत मुहूर्तः

रोहिणी रसभेऽश्विन्यां न्युत्तरे पूर्विकात्रये ।  
हस्ततये श्रुतिद्वन्द्वे पौष्णे मैत्रे जलेशभे ॥३१॥  
द्वितीयायां तृतीयायां पंचम्यां दशमीतये ।  
बुधशुक्रज्यार्कचन्द्रे वारे पक्षे तथासिते ॥३२॥  
लग्ने वृषे धनुः सिंहे कन्यामिथुनयोरपि ।  
व्रतबन्धः शुभे योगे ब्रह्मक्षत्रविशांपतेः ॥३३॥  
पापो भौमः शनिः केतुः क्रूरो राहुरविस्तथा ।  
सौम्यः सोमो बुधश्चैव गुरुः शक्रस्तथैव च ॥३४॥

टंका-रोहिण मृ. आ. पु.

पुष्य, श्ले. अश्विनी, तीनों पूर्वा-  
तीनों उत्तरा, हस्त, चित्रा स्वाती  
श्र. ध. अनु. शत., रे. नक्षत्र में  
उत्तरायण सूर्य में २।३।५।१०।  
११।१२। तिथि, रवि, चन्द्र,  
बुध, शुक्र, गुरुवार, शुक्लपक्ष  
और वृष, धन कन्या मिथुन

व्रतबन्धमुहूर्त यन्त्रम्

| पु    | अ.   | ह.  | चि  | र्या | श्र. | ध.   | श.  | उजे |
|-------|------|-----|-----|------|------|------|-----|-----|
| म.    | मृ.  | पु. | रे. | उ.   | उ.   | उ.   | सु. | वृ. |
| घ.    | कु.  | मी  | वृ. | मि   | उ.   | त्त. | रा. | य.  |
| २     | ३    | ११० | ११  | १२   | ति.  | शु   | क्ल |     |
| प.    | क्ष. | २   | ६   | ७    | ६    | ल.   | ग्न | शु. |
| त्रा. | ह्य. | ण.  | क्ष | त्री | वै.  | श्य  |     |     |

लग्न तथा शुभ योग, ये व्रतबन्ध में शुभ हैं, इनमें ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य तीनों का व्रतबन्ध शुभ कहा है, किसी के मत से मूल में व्रतबन्ध होना शुभ है और पुनर्वसु त्याग है किन्तु बड़े ग्रंथों में चारों वेदों के ब्राह्मण के मुहूर्त पृथक् पृथक् लिखे गये हैं ॥३१-३४॥

कर्णवेध मुहूर्तः

श्रुतित्रयेऽदितिद्वन्द्वे मैत्रे हस्तद्वये तथा ।

दस्रे विधियुगे मूले पूषाभे सौम्यवासरे ॥३५॥

द्विस्वभावघटे लग्ने कर्णवेधः प्रशस्यते ।

चैतपौषौ हरिस्वापं वर्षं च युगलं त्यजेत् ॥३६॥

टीका—श्र. ध. श. पु. पु. अ. ह.

चि. अनु. रो. मृ. मृ. रे. ये नक्षत्र

सौम्यवार और मि. क. ध. मी. कुं.

लग्न शुभ है । चैत, पौष, आपाद

शुक्ल ११ और सम वर्ष ये त्याज्य हैं ।

वास्तु कर्म मुहूर्तः

पूर्वाषाढादितिद्वन्द्वं

विधियुगमं हरित्रयम् ।

उत्तराफाल्गुनीहस्तत्रयं मूलं च रेवती ॥३७॥

मैत्राऽश्विनी च लग्नानि सिंहः कन्या घटो वृषः ।

मिथुनं मकरो ग्राह्यं वास्तुकर्मणि कोविदैः ॥३८॥

श्रावणश्चाथ वैशाखः कार्तिकः फाल्गुनस्तथा ।

मासेषु मार्गशीर्षश्च वास्तुकर्मणि शस्यते ॥३९॥

अथ कर्णवेधमुहूर्तयन्त्रम् ।

| ०    | ०   | ०   | रो. | मृ. | मू. | रे. | अ.  |
|------|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|
| श्र. | ध.  | श.  | पु. | पु. | अ.  | ह.  | चं. |
| च.   | वु. | वृ. | शु. | वा  | ३   | २   | ६   |
| १२   | ११  | १०  | ९   | ८   | ७   | ६   | ५   |
| मृ.  | फा  | मा  | १   | २   | ३   | ४   | ५   |



वज्रव्याघातशूलानि व्यतीपातश्च गंडकः ।

विष्कुंभः परिघो वज्र्यो वारो भौमश्चभास्करः ॥४०॥

| अथ वास्तुकर्ममुहूर्त यंत्रम् |     |     |      |      |     |     |     |
|------------------------------|-----|-----|------|------|-----|-----|-----|
| पू.                          | पु. | पु. | मृ.  | श्र. | ध.  | रा. | रा. |
| उ.                           | ह.  | चि  | स्वा | मू.  | रे. | ऽनु | वि  |
| न.                           | ५.  | ६.  | ११   | २    | ३   | १०  | ल.  |
| श्र                          | वै. | का  | फा   | मृ   | मा  | मा  | आ   |
| शो                           | शी  | ऽति | शु.  | धृ.  | शु  | शु. | म.  |
| वि                           | शी  | सी  | सी   | शु.  | वा  | ए.  | वै. |

टीका-पूर्वाषाढा, पु. पु. रो, मृ  
श्र. ध. श. उ. फा. ह. चि. स्वा.  
मृ. रे. अनु. अश्वि. ये नक्षत्र और  
सिं. क. कु. वृ. मि. मकर लग्न  
श्राव. का. फा. मार्गशीर्ष, ये  
मास वास्तुकर्म में शुभ हैं ।  
वज्र व्या. व्य. गं. वि. प. ये  
योग और मंगल रविवार ये  
वास्तुकर्ममें त्याज्य हैं ॥१७-४१

वापीकूपतडागदेवालयानांमुहूर्ताः

आर्द्रा शतभिषाऽश्लेषा विशाखा भरणीद्वयम् ।

त्याज्या च द्वादशीरिक्ता षष्ठी चन्द्रक्षयोऽष्टमी ॥४१॥

प्रतिपच्च तिथिर्वारौ त्याज्यौ शनिकुजौ तथा ।

देवमूर्तिप्रतिष्ठायां स्थिरे लग्नोत्तरायणे ॥४२॥

| देवालय मुहूर्त यंत्रम् । |     |      |      |     |     |     |     |
|--------------------------|-----|------|------|-----|-----|-----|-----|
| अ.                       | रो. | मृ.  | पु.  | पु. | म.  | पू. | व.  |
| ह.                       | चि  | स्वा | ग्ये | मू. | पू. | उ.  | ऽनु |
| श्र.                     | ध.  | पु.  | उ.   | रे. | म.  | ३   | २   |
| १                        | ७   | १०   | ११   | ३   | वि  | सू. | चं. |
| बु.                      | वृ. | शु.  | वा   | १   | ६   | ८   | उ.  |

टीका-आ. श. आश्लेषा चि. भ.  
कृ. ये नक्षत्र, १२।४।९।१४।३०  
६।१।८। ये तिथि, शनि भौमवार  
ये सब त्याज्य हैं, और वृष, सिंह,  
वृश्चिक, कुम्भ तथा उत्तरायणका  
सूर्य इनमें वाप्यादि तथा देव  
प्रतिष्ठा करे ॥ ४१-४२ ॥

गृहप्रवेशमुहूर्तः

विशाखा भरणी हेया श्लेषाख्या च मघा तथा ।

अमावास्या च रिक्ता च वारे भौमे रवौ तथा ॥४३॥

गृहप्रवेशो वैशाखे श्रावणे फाल्गुने तथा ।

आश्विने च स्थिरे लग्ने ग्राह्यः पक्षो बुधैः सितः ॥४४॥

| गृह प्रवेश यन्त्रम् |     |        |      |     |      |     |     |  |  |
|---------------------|-----|--------|------|-----|------|-----|-----|--|--|
| अ. रो.              | मृ. | अ. पु. | पु.  | उ.  | ह.   |     |     |  |  |
| चि                  | स्व | अ.     | न्ये | मू. | श्र. | ध.  | श.  |  |  |
| रे.                 | न.  | चं.    | बु.  | वृ. | अ.   | श.  | वा  |  |  |
| व.                  | म.  | पौ.    | मा   | फा  | ज्ये | मा  | स.  |  |  |
| २                   | ३   | ८      | ११   | ये. | ल.   | रत. | शू. |  |  |

टीका—वि. भ. ५३ले. म. ये

नक्षत्र, ३०।४।९ १४ ये तिथि  
 भौम रवि ये वार गृह प्रवेशमें  
 वज्रित है । ४० वैशाख, श्रावण,  
 फाल्गुन आश्विन ये मास, वृ.,  
 मि., वृ., कुम्भ ये स्थिर लग्न  
 और शुक्लपक्ष गृहप्रवेशमें उत्तम  
 हैं ॥ ४३-४४ ॥

हलचक्रमुहूर्तः

अनुराधाचतुष्कञ्च मधादितियुगे करे ।

स्वातिश्रुतिविधिद्वन्द्वे रेवत्यामुत्तरात्राये ॥४५॥

गोस्त्रीभषे हलं कार्य हेयः सूर्यः शनिः कुजः ।

षष्ठी रिक्ता द्वादशी च द्वितीया पर्वयुगमकम् च ॥४६॥

|   |   |   |
|---|---|---|
|   | ३ | ३ |
| ३ |   | ५ |
|   | ५ |   |
| ३ |   | ३ |

त्रिभिस्त्रिभिस्त्रिभिः पंच त्रिभिः  
 पंचत्रिभिर्द्वयम् । सूर्यभादिनभया  
 वद्धानिर्वृद्धिर्हले क्रमात् ॥४७॥

टीका—अनु० ज्ये० पूर्वा० म० पु०  
 यु० ह० स्वा० श्र० रा० मू० रे० २ तीनों



उत्तरा, नक्षत्र हल कर्म मे शुभ हैं । वृ. मी. क. ये लग्न और रवि, शनि, मङ्गलवार ६।४।

| हलचक्रम् |      |     |     |    |     |     |     |
|----------|------|-----|-----|----|-----|-----|-----|
| अनु      | ज्ये | मू. | पू. | म. | पु. | पु. | ह.  |
| स्वा     | अ    | रो  | म.  | उ. | ३   | र.  | न.  |
| २        | ६    | १   | ल.  | र. | चं  | बु. | वृ. |
| शु.      | वा   | १   | ५   | ७  | ०   | ११  | ति. |
| ३        | २    | ३   | १   | ३  | ५   | ३   | ३   |
| ह.       | वृ.  | दा  | वृ. | हा | वृ. | हा. | वृ. |

१४।९।१२३० तिथि व्यतीपात योग ये त्याज्य हैं । सूर्यके नक्षत्र से दिनके नक्षत्र तक गने, यह क्रमसे हलचक्रमे समझ लेना । प्रथम हानि, फिर वृद्धि फिर हानि फिर वृद्धि इसी प्रकार उसका फल जाने ॥४५-४७॥

यात्राविचारः

अनुराधात्रायं हस्तो मृगाऽश्वौ चादितिद्वयम् ।  
यात्रायां रेवती शस्ता निघाद्राभरणीद्वयम् ॥४८॥  
मघोत्तरा विशाखा च सर्पश्चान्ये न मध्यमाः ।  
षष्ठी रिक्ता द्वादशी च पूर्णिमाऽमा च वर्जयेत् ॥४९॥  
लग्ने कन्यामन्मथश्च मकरश्च तुलाधरः ।  
यात्रा चन्द्रवले कार्या शकुनं च विचारयेत् ॥५०॥

टीका—अनु. ज्ये. ह. म. अ. पु. पु. रे नक्षत्र यात्रामें शुभ हैं, आर्द्रा. भ. क. ये वर्ज्य हैं और मघादि नक्षत्र मध्यम हैं ॥३॥  
६।९।१२।१४।३०।१५ तिथि और व्यतीपात योग वर्जित हैं, कन्या मि. तु. मकर ये लग्न शुभ हैं । और जो हो चन्द्रवल, शकुन आदि का विचार यात्रा में अवश्य करे ॥ ५० ॥

दिक्शूल ज्ञानम्

शनौ चन्द्रेत्यजेत्पूर्वा दक्षिणां च दिशं गुरौ ।  
सूर्ये शुक्रे पश्चिमां च बुधे भौमे तथोत्तरम् ॥५१॥

टीका—शनि सोम पूर्व को, गुरु दक्षिण को, रवि शुक्र पश्चिम को और मङ्गल बुध उत्तर को दिशाशूल है। यह यात्रा में वर्जित है ॥ ५२ ॥

यात्रिकनक्षत्राणि

सर्वदिग्गमने हस्तः पूषाश्वौ श्रवणो मृगः ।

सर्वसिद्धिकरः पुष्यो विद्यायां च गुरुर्यथा ॥५२॥

टीका—ह. रे. अ. मृ. पु. श्र. ये नक्षत्र शुभ हैं। उनमें पुष्य ऐसा सिद्धिप्रद है जैसे विद्या में बृहस्पति होता है। ५२ ॥

योगिनीवासनिर्णयः ।

प्रतिपत्सु नवम्यां च पूर्वस्यां दिशि योगिनी ।

अग्निकोणे तृतीयायामेकादश्यां तु सा स्मृता ॥५३॥

त्रयोदश्यां च पंचम्यां दक्षिणास्यां शिवप्रिया ।

द्वादश्यां च चतुर्थ्यां च नैऋत्यां कोणगामिनी ॥५४॥

चतुर्दश्यां च षष्ठ्यां च पश्चिमायां च योगिनी ।

पूर्णिमायां च सप्तम्यां वायुकोणे तु पार्वती ॥५५॥

दशम्यां च द्वितीयायामुत्तरस्यां शिवा वसेत् ।

ऐशान्यां दर्श चाष्टम्यां योगिनी समुदाहता ॥५६॥

टीका—परिवा, नवमी को योगिनी पूर्व में बसती है, अग्निकोण में ३।११, दक्षिण में ५।१३, नैऋत्यमें १२।२४, पश्चिम में १४।६, वायव्य में १५७, उत्तर में १०।२ ईशान्य ३०।८ को योगिनी वास करती है ॥ ५३-५६ ॥

यात्रायां योगिनीफलम्

योगिनी सुखदा वामे पृष्ठे वाञ्छितदायिनी ।

दक्षिणे धनहन्त्री च सम्मुखे मरणप्रदा ॥५७॥



टीका---यात्रा में वार्यां योगिनी  
सुखप्रदा, पीछे बांझाप्रदा,  
दाहिनी धननाशक है और सम्मुख  
हानिप्रदा होती है ॥ ५७ ॥

| ई.   | पू.    | आ.   |
|------|--------|------|
| ८।०  | १।६    | ३।११ |
| २१०  | योगिनी | ५।१३ |
| ७।१५ | ६।१४   | ४।१२ |
| वा.  | प.     | नै.  |

यात्रातिथयः

मासस्य प्रतिपच्छ्रेष्ठा द्वितीया कामकारिणी ।  
आरोग्यदा तृतीया च चतुर्थी कलहप्रदा ॥५८॥  
पंचमी च श्रिया युक्ता षष्ठी कलहकारिणी ।  
भक्ष्यपानसमायुक्ता सप्तमी सुखदा सदा ॥५९॥  
अष्टमी व्याधिदा नित्यं नवमी मृत्युदा स्मृता ।  
दशमी भूरिलाभास्यादेकादशी च हेमदा ॥६०॥  
द्वादशी प्राणसंदेहा सर्वसिद्धा त्रयोदशी ।  
शुक्ला वा यदि वा कृष्णा वर्जनीया चतुर्दशी ॥६१॥  
पौर्णिमायाममायां च प्रस्थानं नैव कारयेत् ।  
तिथिज्ञये च मासांते ग्रहणान्ताद् दिनत्रये ॥६२॥

टीका— १-श्रेष्ठ २ कामचारिणी, ३ आरोग्यप्रद, ४ कलह  
प्रद, ५ लक्ष्मीप्रद, ६ कलहप्रिय, ७ भोजनप्रद, ८ व्याधिप्रद,  
९ मृत्युप्रद, १० लाभप्रद, ११ स्वर्गप्रद, १२ प्राणसंदेह, १३  
सिद्धिप्रदा है दोनों १४ अमावस्या त्याज्य हैं, १५।३० में भूल  
कर भी प्रस्थान ( यात्रा ) न करे और क्षय तिथि, मासांत  
तथा ग्रहण के तीन दिन बाद भी त्याग देवे ॥ ५८-६२ ॥

राहुविचारः

अष्टसु प्रहारार्धेषु प्रथमाद्येष्वहनिशम् ।  
 पूर्वस्यां वामतो राहुस्तुर्यात्तुर्यदिशि व्रजेत् ॥६३॥  
 राहुः प्राच्यां ततो वायुर्दक्षिणेशानपश्चिमे ।  
 आग्नेयोत्तरनैऋत्ये प्रहराद्धं च तिष्ठति ॥६४॥  
 जयश्च दक्षिणो राहुर्योगिनी वामतः शुभा ।  
 पृष्ठतो द्वयमाख्यातं चन्द्रमाःसंमुखे शुभः ॥६५॥

टीका-आठों दिशाओं में राहु जिस प्रकार दिन रात्रि में चलता है, उसे चक्र में विचार करें। यात्रा में राहु दक्षिण शुभ है, योगिनी वाम शुभ है, और पीछे दोनों शुभ हैं पर चन्द्रमा संमुख और दक्षिण ही शुभ है ॥ ६३-६५ ॥

दिवसे पर्वद्वारासचतुर्थघटिकाराहुचक्रम्

| पर्व        | वा.       | द.         | ई.        | प.        | आ.         | उ.         | नै.       | दिशा                 |
|-------------|-----------|------------|-----------|-----------|------------|------------|-----------|----------------------|
| ३॥<br>यावत् | ७॥<br>या. | ११।<br>या. | १५<br>या. | ८॥<br>या. | २५॥<br>या. | २६।<br>या. | ३०<br>या. | ३०घटीउपरा<br>३॥यावत् |

रात्रौ चतुर्थघटिकाराहुविभागचक्रम्

| पर्व         | वा        | द.         | ई.        | प.         | आ.         | उ.         | नै.       | दिशा                 |
|--------------|-----------|------------|-----------|------------|------------|------------|-----------|----------------------|
| ३३॥<br>यावत् | ७॥<br>या. | ४१।<br>या. | ४५<br>या. | ४८॥<br>या. | ५२॥<br>या. | ५६।<br>या. | ६०<br>या. | ३०घटीउपरा<br>३॥यावत् |

चन्द्रवासविचारः ।

चन्द्रश्चरति पूर्वादिक्रमेण दिक्चतुष्टयम् ।  
 मेषादिभेषु यात्रायां संमुखे दक्षिणे शुभः ॥६६॥  
 मेषे च सिंहे धनपूर्वभागे वृषे च कन्यामकरे च याम्ये ।



✽युग्मे तुलाकुम्भसु पश्चिमायां कर्कालिमीने दिशि चोत्तरस्याम् ॥ ६७ ॥

टीका-चन्द्रमा पूर्वादि क्रम से चारों दिशा में चलता है वह यात्रा में मेषादि क्रम से सम्मुख तथा दाहिने शुभ है ।

अर्थात् मेष सिंह धन का चन्द्रमा पूर्व में रहता है, वृष कन्या मकर का दक्षिण में, मिथुन तुला और कुम्भ का पश्चिम में कर्क, वृश्चिक मीन का चन्द्रमा उत्तर दिशा में वास करता है ॥ ६६-६७

| ई.     | पू.        | आ      |
|--------|------------|--------|
| ई.     | ध. मे सि   | अ.     |
| क.     | चं वा.     | वृ. क. |
| वृ.भी. | चक्रम्     | म.     |
| वा.    | मि.तु. कु. | नै.    |
| वा.    | प.         | नै.    |

चन्द्रवासफलम्

सन्मुखे चार्थलाभाय पृष्ठे चन्द्रे धनक्षयः ।

दक्षिणे सुखसंपत्तिर्वामे तु मरणां भवेत् ॥ ६८ ॥

टीका-सन्मुख चन्द्रमा से धन लाभ, पीछे धन हानि दाहिने सुख संपत्ति और बायें मृत्यु होती है ॥ ६८ ॥

रवि विचारः

यामयुग्मे च रात्रौ च वामे पूर्वादिगो रविः ।

यात्रायां दक्षिणे वामे प्रवेशे पृष्ठके द्वयम् ॥ ६९ ॥

टीका-प्रहर रात्रि रहते, प्रहर दिन चढ़ते सूर्य पूर्व में बसता है, फिर दो-दो प्रहर दक्षिण में प्रहर दिन रहते तथा प्रहर रात्रि तक पश्चिम में फिर दो दो प्रहर दिन उत्तर में वास करता है । वह यात्रा में दाहिने बायें शुभ है और गृह प्रवेश में सम्मुख पीछे शुभ है ॥ ६९ ॥

✽ युग्मे तुलायाञ्च घटे प्रतीच्यामिति पाठः समीचीनः ।

## कुलिकयोगः

मनुभानुदिशासर्परसवेदाश्विनः क्रमात् ।  
रविवारान्मुहूर्तोऽयं कुलिको निर्दितः स्मृतः ॥७०॥

टीका-रविवार को १४ वाँ मुहूर्त कुलिक है, सोम को १२ वाँ मीम को १० वाँ, बुध को ८ वाँ गुरु को ६ वाँ शुक्र को १४ वाँ, शनिको २ कुलिक योग होता है, वह शुभ कार्य में वर्जित है ॥ ७० ॥

## कालहोराविचारः

गता नाड्यो द्विगुणिताः पंचभिश्चविभाजिताः ।  
शेषं त्याज्यं युतश्चैकः सप्तशेषं प्रशंसितम् ॥७१॥  
कालहोरेति विख्याता सौम्यः सौम्यफलप्रदः ।  
सूर्यशुक्रबुधश्चन्द्रौ मंदजीवकुजाः क्रमात् ॥७२॥  
यो वारो यत्र दिवसे तदादि गणयेत्क्रमात् ।  
शुभग्रहस्य सुखदो मुहूर्तोऽनिष्टदुःखदः ॥७३॥

टीका-सूर्योदय से गतघटी, द्विगुणित कर उसमें पाँच का भाग देवे, जो शेष बचे उसको घटा कर एक बढ़ा दे फिर सात का भाग दो जो शेष बचे वही होरा होवे । १ बचे तो रवि, २ चन्द्र, ३ मंगल, ४ बुध, ५ गुरु, ६ शुक्र, ७ शनि को क्रम से शुक्र, बुध, चन्द्र, शनि, गुरु मंगल, इस प्रकार प्रतिदिन होरा दिवस होता है । सूर्य से गिने २ घटी ५९ पल प्रथम दिनको ४, १५ दूसरे, ७।२७ तीसरे, ९।५६ चौथे, १२।२५ पाँचवें, १४।५४ छठवें, १७।२४ सातवें दिन को होता है ॥७१-७३॥  
उदाहरण-गत नाडी ७ है इसे २ से गुणा किया तो १४ हुए इसको दो जगह धरे एक जगह १४ में ५ का भाग दिया तो शेष ४ बचे



इसको दूसरे के १४ में हीन किया तो १० वचे इसमें १ युत किया तो ११ हुआ इसमें ७ का भाग दिया तो शेष ४ वचे सोमवार को विचार किया अतः सोमवार से चौथा गुरु है इसीका काल होरा हुआ ।

सर्वाङ्गमुद्भूतविचारः

तिथिं वारं च नक्षत्रं नामाक्षरसमन्वितम् ।  
द्वित्रिचतुर्भिर्गुणितं रससप्ताष्टभाजितम् ॥७४॥  
आदिशून्ये भवेद्धानिर्मध्यशून्ये रिपोर्भयम् ।  
अन्त्यशून्ये भवेन्मृत्युः शेषांके विजयी भवेत् ॥७५॥

टीका—तिथि, वार, नक्षत्र और नाम के अक्षर को जोड़कर पिंड बनावे, उसे दूना करके ६ का भाग देवे फिर उस पिंडको चौगुना करके आठका भाग देवे, जो प्रथम शून्य आवे तो हानि होवे मध्य शून्य में भय, अन्त्य शून्य में मृत्यु हो और जो तीनों में शेष अंक वचे तो विजय होवे ॥ ७४-७५ ॥

उदाहरण—तिथि १७ वार ५ नक्षत्र १३ नाम का मन्त्री २ है उसको एकत्र जोड़ा तो ३७ हुआ, इसको ३ जगह धरा । एक जगह दो से गुणा तो ७४ हुये । दूसरे जगह ३ से गुणा तो १११ हुवा, तीसरे जगह ४ से गुणा तो १४८ हुवा, दो से गुणे अंक ७४ में ६ का भाग दिया तो २ शेष, वचा तीन से गुणे अंक में ७ का भाग दिया तो शेष ६ वचे, तीसरे जगह के गुणित अंक १४८ में ८ का भाग दिया तो शेष ४ वचा तीनों जगह शेष वचा है अतः विजय होगी ।

स्वरशकुनविचारः

शशिप्रवाहे गमनादिशस्तं सूर्यप्रवाहे नहि किंचनापि ।  
प्रष्टुर्जयः स्याद्बहुमानभागेरिक्ते च भागेविफलं समस्तम्

टीका—जो चन्द्रस्वर वायें चले तो यात्रा करे सूर्य स्वर दाहिने में अशुभ होने से यात्रा न करे और जो शून्य भाग में दोनों चले तो सब कार्य निष्फल हो ॥ ७६ ॥

यात्रायां शुक्रविचारः

दक्षिणे दुःखदःशुक्रः सम्मुखे हन्ति लोचनम् ।  
वामे पृष्ठे शुभो नित्यं रोधयेच्चास्तगः शुभः ॥७७॥

टीका—जो यात्रा से शुक्र दहिने हो तो दुःख देता है सम्मुख नेत्र पीड़ा करे और वायें पीछे पड़े तो शुभ है । शुक्रास्त में कोई शुभ कार्य न करें ॥ ७७ ॥

क्रयविक्रयविचारः

पुष्ये भाद्रपदायुग्मं मैत्रंश्रवणमश्विनी ।  
हस्तोत्तरा मृगस्वाती तथाऽऽश्लेषा च रेवती ॥७८॥  
ग्राह्याणि भानि चैतानि क्रयविक्रयणो बुधैः ।  
चन्द्रभार्गवजीवाश्च वाराः शकुनमुत्तमम् ॥७९॥

टीका—पुष्य पूर्वाभा० उत्तराभा० अनु० ध० अश्वि० ह० तीनों उत्तरा, मृ०, स्वा, ऽश्ले०, रे०, ये नक्षत्र क्रयविक्रय में शुभ हैं, ऐसा पंडित लोग कहते हैं और चन्द्र, शुक्र, बृहस्पति ये वार तथा शुभ शकुन विचार कर गाय, भैंस, अश्वादि का क्रयविक्रय करे ॥ ७८-७९ ॥

धनिष्ठापंचकविचारः

धनिष्ठापंचकं त्याज्यं तृणकाष्ठादिसंग्रहे ।  
त्याज्या दक्षिणदिग् यात्रागृहाणां छादनं तथा ॥८०॥

टीका—धनिष्ठा से रेवती तक पंचक कहलाता है इसमें तृण काष्ठादि का सचय, दक्षिण दिशा की यात्रा गृहाच्छादन,



प्रेतदाह, शय्या का वितरण न करना चाहिये ॥ ८० ॥

तैलाभ्यङ्गविचारः

तैलाभ्यङ्गे रवौ तापः सोमे शोभा कुजे मृतिः ।

बुधे धनं गुरौ हानिः शुके दुःखं शनौ सुखम् ॥ ८१ ॥

रवौ पुष्पं गुरौ दूर्वा भौमवारे च मृत्तिका ।

गोमयं शुक्रवारे च तैलाभ्यङ्गे न दोषभाक् ॥ ८२ ॥

टीका—रविवार को तैल लगावे तो ताप हो, सोमवार को शोभा, मंगलवार को मृत्यु, बुध को धन, गुरु को हानि, शुक्र को दुःख और शनिको सुख होय ॥ यदि अवश्य तेल लगाना हो तो रवि को पुष्प, बृहस्पति को दूर्वा, मङ्गल को मृत्तिका, शुक्र को गोबर संयुक्त लगावे तो दोष नहीं होता ॥ ८१-८२ ॥

रोगीस्नानमुद्धृतः

आश्लेषाद्वितयं स्वाती रोहिणी च पुनर्वसुः ।

रोगिस्नाने रेवतीं च वर्जयेदुत्तरात्रयम् ॥ ८३ ॥

रिक्तातिथौ चरे लग्ने वारे च रविभौमयोः ।

स्नानं च रोगिणां प्रोक्तं द्विजभोजनसंयुतम् ॥ ८४ ॥

टीका—अत्र रोगी स्नानमें वर्जित नक्षत्र कहते हैं । आश्ले० म० स्वा० रो० रे० तीनों उत्तरा इन नक्षत्रों को छोड़ कर शेष १८ नक्षत्र में ४।९।१४। इन तिथियों में मे० क० तु० मकर इन लग्नों में, और रवि मङ्गल वारों में ब्राह्मण को भोजन कराकर रोगी स्नान करे ॥ ८३-८४ ॥

आनन्दादियोगाः

आनन्दः कालदंडश्च धूम्राक्षश्च प्रजापतिः ।

सौम्यो ध्वांक्षो ध्वजश्चापि श्रीवत्सो वज्रमुद्गरौ ॥ ८५ ॥

छत्रं मित्रं मानसाख्यं पद्माख्यं लुम्बस्तथा ।  
 उत्पातमृत्युकाणश्च सिद्धिश्चार्थः शुभोऽमृतः ॥ ८६ ॥  
 मुशलो गदमातंगराक्षसश्च चरः स्थिरः ।  
 वर्द्धमानश्च विज्ञेया अष्टाविंशतिरित्यपि ॥ ८७ ॥  
 फलं तु नामसदृशं योगा दैवज्ञभाषिताः ।  
 अश्विनी रविवारे च योगो ह्यानंदसंज्ञकः ॥ ८८ ॥  
 मृगशीर्षे शीतरश्मिः श्लेषायां क्षितिनंदनः ।  
 बुधे हस्तोऽनुराधा च देवराजपुरोहिते ॥ ८९ ॥  
 भार्गवे चोत्तराषाढा शनौ शतभिषा यदा ।  
 तदानंदाख्ययोगः स्यात्कालदंडादयः क्रमात् ॥ ९० ॥  
 टीका-दैवज्ञ ( ज्योतिषी ) इन योगों के फल नामानुसार  
 कहते हैं । अश्विनी को रवि हो तो आनन्द योग होता है । इसी  
 भाँति कालदंडादि योग चक्र से जानिये ॥ ८५-९० ॥

आनन्दादियोगचक्रम्

| आनन्दादि | सू. | च.    | मं.   | बु.   | वृ.   | शु.   | श.  | फल     |
|----------|-----|-------|-------|-------|-------|-------|-----|--------|
| आनन्द    | अ.  | मृ.   | श्ले. | ह.    | अ.    | उ.षा. | श.  | सिद्धि |
| कालदण्ड  | भ.  | आ.    | म.    | चि    | ज्ये. | अ.    | पू. | मृत्यु |
| धूम्र    | कृ. | पु.   | पू.   | स्वा  | मू.   | श्र.  | उ.  | भय     |
| धाता     | रो. | पु.   | उ.    | वि    | पू.   | ध.    | रे. | सौख्य  |
| सौम्य    | मृ. | श्ले. | ह.    | अ.    | उ.    | श.    | अ.  | शुभ    |
| ध्वांक्ष | आ.  | म.    | चि    | ज्ये. | अ.    | पू.   | म.  | अरिष्ट |



|          |       |       |       |       |       |       |       |            |
|----------|-------|-------|-------|-------|-------|-------|-------|------------|
| केतु     | पु.   | पू.   | स्वा  | म.    | श्र.  | उ.    | कृ.   | सिद्धि     |
| श्रीवत्स | पु.   | उ.    | वि    | पू.   | ध.    | रे.   | रो.   | शुभ        |
| वज्र     | श्ले. | ह.    | अ.    | उ.    | श.    | अ.    | मृ.   | कलह        |
| मुग्दर   | म.    | चि    | ज्ये. | अ.    | पू.   | भ.    | आ.    | हानि       |
| छत्र     | पू.   | स्वा  | मू.   | श्र.  | उ.    | कृ.   | पु.   | सिद्धि     |
| मित्र    | उ.    | वि    | पू.   | ध.    | रे.   | रो.   | पु.   | सौख्य      |
| मानस     | ह.    | अ.    | उ.    | श.    | अ.    | मृ.   | श्ले. | धन         |
| पद्म     | चि    | ज्ये. | अ.    | पू.   | भ.    | आ     | म.    | शुभकर्म    |
| लुम्ब    | स्वा  | मू.   | श्र.  | उ.    | कृ.   | पु.   | पू.   | हानि       |
| उत्पात   | वि    | पू.   | ध.    | रे.   | रो.   | पु.   | उ.    | विघ्न      |
| मृत्यु   | अ.    | उ.    | श.    | अ.    | मृ.   | श्ले. | ह.    | मृत्यु     |
| काण      | ज्ये. | अ.    | पू.   | भ.    | आ.    | म.    | चि    | धनहानि     |
| सिद्धि   | मू.   | श्र.  | उ.    | कृ.   | पु.   | पू.   | स्वा  | मनकाम      |
| शुभ      | पू.   | ध.    | रे.   | रो.   | पु.   | उ.    | वि    | सर्वसौख्यं |
| अमृत     | उ.    | श.    | अ.    | मृ.   | श्ले. | ह.    | अ.    | शुभ        |
| मुशल     | अ.    | पू.   | भ.    | आ.    | म.    | चि    | ज्ये. | मानहानि    |
| गद       | श्र.  | उ.    | कृ.   | पु.   | पू.   | स्वा  | मू.   | रोग        |
| मातङ्ग   | ध.    | रे.   | रो.   | पु.   | उ.    | वि    | पू.   | वाहन       |
| राक्षस   | श.    | अ.    | मृ.   | श्ले. | ह.    | अ.    | उ.    | शुभ        |
| चर       | पू.   | भ.    | आ.    | म.    | चि    | ज्ये. | अ.    | चलन        |

|            |     |     |     |     |       |     |      |        |
|------------|-----|-----|-----|-----|-------|-----|------|--------|
| सुस्थिर    | उ.  | कृ  | पु. | पु. | स्वा. | मू. | श्र. | तोष    |
| प्रवर्धमान | रे. | रो. | पु. | उ.  | वि.   | पू. | ध.   | वृद्धि |

अमृतसिद्धियोगः

हस्तः सूर्ये मृगः सोमे वारे भौमे तथाश्विनी ।  
 बुधे मैत्रे गुरौ पुष्यं रेवती भृगुनन्दने ॥६१॥  
 रोहिणी रविपुत्रे च सर्वसिद्धिप्रदायकः ।  
 अयं चामृतसिद्धिः स्याद्योगः प्रोक्तः पुरातनैः ॥९२॥

टीका-अव अमृत सिद्ध योग कहते हैं । हस्त रविवार को

| अथ अमृतसिद्धियोग यन्त्रम् |     |        |        |     |     |         |     |
|---------------------------|-----|--------|--------|-----|-----|---------|-----|
| र.                        | च.  | मं.    | बु.    | गु. | शु. | श.      | वार |
| ह.                        | मृ. | ऽश्वि. | ऽनुपृ. | रे. | रो. | नक्षत्र |     |
| ऽमृ                       | ऽमृ | ऽमृ    | ऽमृ    | ऽमृ | ऽमृ | ऽमृ     | योग |

पड़े तो अमृत योग होता है ।  
 मृ. सो. अ. मं. ऽनु. बु. गु. पु.  
 रे. शु., रो. शनि को हो तो  
 अमृत सिद्धियोग होता है ।

यमघण्ट योगः

मघादित्ये विसाखेन्दौ भौमे चार्द्राऽनिलोगुरौ ।  
 बुधे मूलं विधिः शुक्रे यमघटः शनौः करः ॥६३॥

| अथ यमघटं यन्त्रम् |    |     |     |     |     |    |         |
|-------------------|----|-----|-----|-----|-----|----|---------|
| सू.               | च. | मं. | बु. | गु. | शु. | श. | वार     |
| म.                | वि | आ   | मू. | कृ. | रो. | ह. | नक्षत्र |

टीका-रविवार को मघा वि.  
 सोम. आ. मंगल. मू. बुध.  
 स्वा गुरु रो. शुक्र और शनि

को हस्त हो तो यमघट योग होता है यह योग शुभ कार्य में  
 वर्जित है ॥ ९३ ॥

मृत्युयोगः

नंदा सूर्ये च भौमे च भद्रा भार्गवचन्द्रयोः ।  
 बुधे ज्येष्ठा गुरौ रिक्ता शनौ पूर्णा चमृत्युदा ॥६४॥



| मृत्युयोगचक्रम् |        |     |      |     |      |
|-----------------|--------|-----|------|-----|------|
| रवि             | शुक्र  | बुध | गुरु | शनि |      |
| भौम             | चन्द्र | ०   | ०    | ०   | वार  |
| १               | २      | ३   | ४    | ५   |      |
| ६               | ७      | ८   | ९    | १०  | तिथि |
| ११              | १२     | १३  | १४   | १५  |      |

टीका-रवि, भौम में नन्दा, शुक्र और सोम में भद्रा बुध में जया, गुरुमें रिक्ता शनि में पूर्णा तिथि हो तो मृत्यु योग है यह शुभ कार्य में वर्जित है।

क्रकचयोगः

तिथ्यंकेन समायुक्तो वारांको यदि जायते।

त्रयोदशांकः क्रकचो योगः प्रोक्तः पुरातनैः ॥६५॥

| अथ क्रकचयोगचक्रम् |     |     |     |     |     |      |
|-------------------|-----|-----|-----|-----|-----|------|
| सू.               | चं. | मं. | बु. | गु. | शु. | श.   |
| १२                | ११  | १०  | ९   | ८   | ७   | ६    |
|                   |     |     |     |     |     | तिथि |

टीका-यदि तिथि और वार की संख्या जोड़ने से १३ हो जाय तो क्रकच योग होता है। जैसे सूर्य १ और द्वादश १२

गिन कर तेरह होते हैं यह यंत्र में समझ लेना ॥ ९५ ॥

अन्धादिनक्षत्राणि

अन्धाक्षश्चिपिटाक्षश्चकाणाक्षोदिव्यलोचनः।

गणयेद्रोहिणीपूर्वं सप्तवारमनुक्रमात् ॥६६॥

अंधे च लभते शीघ्रं मंदे चैव दिनत्रयम्।

काणाक्षे मासमेकं तु सुनेत्रे नैव लभ्यते ॥९७॥

टीका-अब अन्धाक्ष, चिपिटाक्ष, काणाक्ष और सुलोचन ये चार

| अथ अन्धादिनक्षत्राण्यन्त्रम् |        |         |         |      |      |  |
|------------------------------|--------|---------|---------|------|------|--|
| रो. पु.                      | उ.     | वि पू.  | घ.      | रे.  | अन्ध |  |
| मृ. श्ले. ह.                 | ऽनु उ. | श.      | अ.      | चिपि |      |  |
| आ. म.                        | चि उये | अ. पू.  | भ.      | काण  |      |  |
| पु.                          | प.     | स्वामू. | श्र. उ. | कृ.  | सुलो |  |

भाँति के नक्षत्र नष्ट वस्तु में विचारने के लिये कहते हैं। रोहिणी आदि सात वार गिने, रो० अन्ध मृग० चिपि० आ० काण पु, सुलोचन इस रीति से और भी समझले ॥ ९६ ॥ अन्ध नक्षत्र में

वस्तु नष्ट हो तो शीघ्र मिले, जो चिपिटाक्ष और मन्द दृष्टि में जाय तो महीने भर में मिले और सुलोचन में जाय तो फिर न मिले ॥ ९७ ॥

नक्षत्र विचारः

पुनर्वसुर्मृगश्चार्द्रा ज्येष्ठा मैत्रं करस्तथा ।

पूर्वाषाढोत्तराषाढे मूलं दक्षिणचारिणः ॥९८॥

कृत्तिका रोहिणी पुष्यश्चित्राश्लेषा च रेवती ।

शतं धनिष्ठा श्रवणो नव मध्यमचारिणः ॥९९॥

अश्विनी भरणी स्वाती विशाखा फाल्गुनीद्वयम् ।

मघा भाद्रपदा युग्मं नव चोत्तरचारिणः ॥१००॥

टीका-पुन. मृ. आ. ज्ये. अनु. ह. पू. पा. उ. पा. मू. ये नक्षत्र पूर्वदक्षिणचारी हैं। कृ. रो. पु. चि. ऽश्ले. रे. श. ध. श्र. ये पूर्व से मध्य को अर्थात् आकाश को चलते हैं अश्वि. भ. स्वा. वि. पू. फा. उ. फा. म. पू. भा. उ. भा. ये पूर्व से उत्तराचारी हैं।

अथ नक्षत्रप्रचारयन्त्रम्

|     |     |       |     |       |     |    |         |        |        |
|-----|-----|-------|-----|-------|-----|----|---------|--------|--------|
| पु. | मृ. | आ.    | ये  | ऽनु   | ह.  | प. | उ. पा.  | मू.    | दक्षिण |
| कृ. | रो. | पु.   | चि. | श्ले. | रे. | श. | घ.      | श्र.   | मध्य   |
| अ.  | भ.  | स्वा. | .   | पू.   | उ.  | म. | पू. भा. | उ. भा. | उत्तर  |



वत्सयोगः ।

अमतींद्रदिशोवत्सो मासानां चत्रिकं त्रिकम् ।

आदौ भाद्रपदं कृत्वा सव्यतो दिक्चतुष्टयम् ॥

यात्राविवाहसंबन्धे द्वारे च गृहहर्म्ययोः ।

भूपतेर्मेतने युद्धे वत्सस्याभिमुखं त्यजेत् ॥

टीका—पूर्व आदि चारों दिशाओं में वत्सरूप तीन २ मास चौथी-चौथी दिशा में सव्य मार्ग से चल के अमते हैं, जैसे भा.

आ. का पूव में, मार्ग. पौ-  
प. माघ. दक्षिण में फा. चै.  
वै. पश्चिम में और ज्ये. आ.  
श्रा. उत्तर में यह वत्सयोग  
यात्रा, विवाह सम्बन्ध, गृह  
द्वार राजमिलन और युद्ध इन  
कार्यों में देखना चाहिये, इन  
योग सामने और दाहिने  
वर्जित हैं ।

|    |          |           |        |
|----|----------|-----------|--------|
|    |          | पू.       |        |
|    | ई.       | भा.       | अ.     |
|    |          | आ. का.    |        |
| उ. | ज्ये.    | वत्सयंत्र | मा.    |
|    | श्रा. आ. |           | पौ मा. |
|    | वा.      | फा.       |        |
|    |          | चै. वै.   | नै.    |
|    |          | प.        |        |
|    |          |           | द.     |

नक्षत्रनारासंख्या

त्रयंयमेऽश्वे चाग्नौ षड्विधौ पंच मृगेत्रयम् ।

एकमाद्रा च नक्षत्रे चत्वारि च पुनर्वसौ ॥ १ ॥

पुष्ये त्रयं पञ्च सार्पे मघायां चैव पञ्चकम् ।

द्वयं द्वयं च फाल्गुन्या ज्ञेयं हस्ते तु पञ्चकम् ॥ २ ॥

चित्रास्वात्योरेकमेकं चतुष्कं च द्विदैवते ।

त्रयंस्यादनुराधायां ज्येष्ठायां च त्रयं स्मृतम् ॥ ३ ॥

मूले रुद्रश्चतुष्कं च पूर्वाषाढे तथोत्तरे ।

त्रयं चाभिजितः प्रोक्तः श्रवणे च भयं तथो ॥ ४ ॥

धनिष्ठायां च चत्वारः शतं शतभिषासु च ।

द्वयं द्वयं भाद्रयोश्च द्वात्रिंशदपि चांत्यके ॥ ५ ॥

टीका-अ. ३, भ. ३, कृ. ६, रो. ५, मृ. ३, आ. १, पु. ४, पु. ३, आश्ले ५, म. ५, पू. फा. २, उ. २, उ. २, ह. ५, चि. १, स्वा. १, वि. ४, ऽनु. ३, ज्ये. ३, मू. ११, पू. पा. ४, उ. पा. ४, मि. ३, श्र. ३, ध. ४, श. १००, पू. भा. २, उ. रे. ३२ इस प्रकार तारक संयुक्त नक्षत्र उदय होते हैं ॥ १-५ ॥

अथ २८ नक्षत्राणां तारासंख्यायंत्रम्.

| अ.   | भ. | कृ. | रो.  | मृ. | आ   | पु. | पु. | आ    | म. | पू.फा. | उ.फा. | ह. | चि. |
|------|----|-----|------|-----|-----|-----|-----|------|----|--------|-------|----|-----|
| ३    | ३  | ६   | ५    | ३   | १   | ४   | ३   | ५    | ५  | २      | २     | ५  | १   |
| स्वा | वि | ऽनु | ज्ये | मू. | पू. | उ.  | अ.  | श्र. | ध. | श.     | पू.   | उ. | रे. |
| १    | ४  | ३   | ३    | ११  | ४   | ४   | ३   | ३    | ४  | १००    | २     | २  | ३२  |

रोहिणीदोषज्ञानम्

लग्नेऽष्टमे व्यये सूर्ये क्षेत्रपालस्य दूषणम् ।

आकाशदेव्याश्चन्द्रे तु लग्ने षष्ठेऽष्टमे व्यये ॥ ६ ॥

द्वादशे दशमे भौमे डाकिनीदूषणं स्मृतम् ।

वनदेव्युद्धवो दोषः सप्तमे द्वादशे बुधे ॥ ७ ॥

जामित्रेद्वादशे जीवेदैव दोषो निगद्यते ।

अस्ते व्यये दैत्यपूज्ये जलदेव्याश्च दूषणम् ॥ ८ ॥



शनैश्चरे व्यये चास्ते दोषः स्यादामवातजः ।

जामित्रे द्वादशे राहुः कुमतिज्ञातिदूषणम् ॥ ६ ॥

टीका-जो सूर्य ८।१२ अथवा १ लग्न में होवे तो क्षेत्रपाल का दोष जानै उस समय क्षेत्रपाल की पूजा करै । जो चन्द्रमा १ । ६।८।१२ हो तो देवी का दोष जानै, उसकी पूजा मानता करे तो कष्ट दूर हो, जो जन्मकाल में मङ्गल १०।१२ हो तो डाकिनी दोष कहे और बुध ७ । १२ हो तो वनदेवी दोष कहे, जो बृहस्पति १२ । ७ हो तो देवदोष जाने, जो शुक्र, ७ । १२ हो तो जलस्थ देवी दोष जानै जो शनिश्चर ११ । ७ हो तो आमवात दोष कर और जो राहु ७।१२ हो तो कुमति जन्म तथा स्वजातीय दोष से उत्पत्ति कहे ॥ ६-९ ॥

लग्नपरत्वदोषज्ञानम्

पितृदोषो भवेन्मेषे क्षुधाहानिर्विवर्णता ।

वृषे गगनदेव्यास्तु ज्वरो दुःस्वप्नमक्षिरुक् ॥ १० ॥

मिथुने च महामायादोषो वेलाज्वरोनिलः ।

कर्के च शाकिनीदोषो हास्यरोदनमौनता ॥ ११ ॥

सिंहे जले प्रेतदोषो दिवा शीतज्वरोऽरुचिः ।

गृहदोषश्च कन्यायां क्रोधात्तस्ये तथारुचिः ॥ १२ ॥

क्षेत्रपालभवो दोषस्तुले सन्तानपीडनम् ।

वृश्चिके नागदोषश्च ज्वालादेहे कुबुद्धिता ॥ १३ ॥

चापे देहेभवेद् दोषो ज्वरः शोकोदरव्यथा ।

मकरे चंडिकादोषो देहभंगो ज्वरोऽनिलः ॥ १४ ॥

मलिनप्रेतदोषश्च कुम्भे देहस्य पीडनम् ।

मीनेचाप्यंगनादोषो ज्वरो जंजालदर्शनम् ॥ १५ ॥

टीका—जो मेष लग्न में जन्म हो या ऐसे ग्रह पड़े हों तो पितृदोष होंगे और कुरूप होंगे, जो वृष में जन्म हो तो आकाश देवी दोष करे, ज्वर हो भयानक स्वप्न देखे नेत्र पीड़ा पावे १० मिथुन में हो तो महामाया दोष करे, सामयिक ज्वर आवे, अग्नि भय होंगे । जो कर्क में हो तो शाकिनी दोष से रोवें, हंसे, कभी मूक ( गूँगा ) हो ॥ ११ ॥ जो सिंह में हो तो प्रेतवाधा करे, दिनमें ज्वर आवे, जो कन्या में हो तो दुष्ट संग्रह दोष से शारीरिक बाधा, क्रोध, आलस्य, अरुचि होंगे ॥ १२ ॥ जो तुला में जन्म हो तो क्षेत्रपाल दोष करे, संतान का पीड़ा करे जो वृश्चिक में हो तो सर्प से भय, देह पीड़ा, ज्वर को उत्पन्न करे कुबुद्धि होंगे ॥ १२ ॥ धन में जन्म हो तो देह दोष ज्वर, शोक, देहपीड़ा शुरू होंगे । और जो मकर लग्न में जन्म हो तो चंडिका का दोष हो अंग भंग हो और ज्वर होंगे ॥ १४ ॥ कुम्भ में हो तो प्रेत दोष करे मलिन रहे, देह पीड़ा हो, योगिनी महा ज्वर करे ॥ १५ ॥

क्षेत्रदोषः

व्यये धर्मे तृतीये च षष्ठे पापग्रहो यदा ।

हतो गरैर्जलैः शस्त्रैस्तस्य दोषः कुलोद्भवः ॥ १६ ॥

शनौ जले कुजे शस्त्रैर्युते सूर्यः स्वबंधुजः ।

राहौ विक्रमतो नेष्टः शांतिपूजाद्विजार्चनैः ॥ १७ ॥

स्वक्षेत्रे गोत्रदोषोऽपि परक्षेत्रे परोद्भवः ।

शत्रुक्षेत्रे शत्रुदोषो मित्रे स्वजनसंभवः ॥ १८ ॥



टीका-जो १२।९।३।६ इनमें पापग्रह हो तो विष जल, तथा शस्त्र से मृत्यु पावै, यह दोष कुलोद्भव दोष है ॥१६॥ जो इन स्थानों में शनि हो तो जल में डुबा जावे, मंगल हो तो हथियार से मरे और राहु हो तो कुत्सित प्रकृति उपजै, चोर और कुमार्गगामी हो तो ब्राह्मण की पूजा करने से शांति हो जाय, जो स्वक्षेत्री ग्रह पड़े तो गोत्रदोष हो और जो परक्षेत्री दूषित ग्रह पड़े तो पर मनुष्य जनित पाँडा हो जो शत्रुक्षेत्री हो शत्रु से क्लेश पावै और मित्रक्षेत्री हो तो मित्रों से क्लेश पावै ॥१७-१८॥

वार नक्षत्रशुभाशुभयोगः

आदित्ये चाश्विनी हस्तमूलंपुष्योत्तरात्रयम् ।  
सिद्धियोगो धनिष्ठा च तिथिरप्यष्टमी तथा ॥१६॥  
सूर्ये विशाखा भरणी ज्येष्ठा मैत्रं मघा तथा ।  
चतुर्दशी द्वादशी च विरुद्धा सप्तमी तिथिः ॥२०॥  
सोमे पुष्योऽनुराधा च श्रवणो रोहिणी मृगः ।  
नवमी दशमी चापि सिद्धियोगाः प्रकीर्तिताः ॥२१॥  
चन्द्रे चित्रा विशाखा च तथाषाढाद्वयं बुधैः ।  
एकादशी तथा षष्ठी वर्जनीया त्रयोदशी ॥२२॥  
भौमे मूलाश्विनी सार्पे मृगश्चोत्तरभाद्रपात् ।  
सिद्धाऽष्टमी तृतीया च सप्तमी च त्रयोदशी ॥२३॥  
निद्या शतभिषार्द्रा च धनिष्ठा पूर्वभाद्रपात् ।  
मघा चोत्तरषाढा च द्वितीया दशमी कुजे ॥२४॥  
अनुराधा च पुष्ये च कृत्तिका रोहिणी मृगः ।  
द्वादशी सिद्धियोगाश्च द्वितीया सप्तमी तिथिः ॥२५॥

बुधे मूलं धनिष्ठा च रेवती चाश्विनी मृगः ।  
 तृतीया नवमी चापि वर्जयेत् प्रतिपत्तिथिः ॥२६॥  
 गुरौ च दशमी पंच पौर्णमासी विशेषतः ।  
 पौष्णाश्विन्यनुराधा च सिद्धिः पुष्यः पुनर्वसुः ॥२७॥  
 जीवे शतभिषार्द्रा च कृत्तिकोत्तरफाल्गुनी ।  
 विधिर्मृगोऽष्टमी षष्ठी चतुर्थी च विवर्जिता ॥२८॥  
 शुक्रे चित्रार्यमा पूषा श्रवणश्च पुनर्वसुः ।  
 सिद्धा चैकादशी षष्ठी प्रतिपच्च त्रयोदशी ॥२९॥  
 भार्गवे रोहिणी पुष्यो ज्येष्ठाश्लेषा मघा तथा ।  
 द्वितीया सप्तमी चापि वर्जनीया सदा बुधैः ॥३०॥  
 शनौ च रोहिणी स्वाती श्रवणः पूर्वफाल्गुनी ।  
 मघा च नवमी सिद्धा चतुर्थी च त्रयोदशी ॥३१॥  
 शनौ हस्तोत्तराषाढा चित्रा चोत्तरफाल्गुनी ।  
 रेवती च सदा वर्ज्या तिथिः षष्ठी च सप्तमी ॥३२॥

टीका-अष्टमी रवि को अ. ह. मृ. पुष्य, ३ उ, धनिष्ठा  
 हो तो सिद्धियोग है ॥ १९ ॥ जो रवि १४ । ७ । १२ को  
 वि, भ, ज्ये, अनु, मघा हो तो कुयोग है ॥ २० ॥ जो सोम  
 ६ । १० को पुष्य, अनु, श्रव रो, मृ, हो तो सिद्धि योग  
 होता है, जो सोम ११ । ६ । १३ को चि, पूर्वाषाढ, उत्तरा  
 षाढ हो तो कुयोग है ॥ २१ ॥ २२ ॥ जो भौम ८ । ३ ।  
 ७ । १३ को मृ अ, आश्ले, म उ, भा हो तो सिद्धियोग  
 है ॥ २३ ॥ जो भौम २ । १० को श, आ, ध, पू, भा, मघा,



उ, पा, हो तो कुयोग है ॥ २४ ॥ जो बुध १२।२।७  
को अनु पुष्य कृ, रो, म, हो तो सिद्धि योग होता है ॥ २५ ॥  
जो बुध ३।९।१ को मू, ध, रे, अ, म, हो तो कुयोग  
है ॥ २६ ॥ जो गुरु ५।१०।१५ को रे, अ, अनु, पुन  
पुष्य हो तो सिद्धि योग है ॥ २७ ॥ जो गुरु ८।४।६  
को श, आ, कृ, उ, भा, म, हो तो कुयोग है ॥ २८ ॥ जो  
शुक्र ११।६।१३ को चि, उ, फा, रे, श्र, पुनर्वसु ये हों  
तो सिद्धि योग है ॥ २९ ॥ जो शुक्र ३।७ को रो, पु

|     |     |      |      |      |     |     |     |      |       |    |    |    |    |      |
|-----|-----|------|------|------|-----|-----|-----|------|-------|----|----|----|----|------|
| र.  | अ.  | ह.   | मू.  | पु.  | उ.  | ध.  | न.  | च.   | त्रि. | ८  | ति | ति | ०  | शुभ  |
| र.  | वि. | भ.   | ज्ये | अ.   | म.  | न.  | च.  | त्र. | १४    | १२ | ७  | ति | थि | अशुभ |
| च.  | पु. | अ.   | श्र. | र.   | मृ. | न.  | च.  | त्र. | ६     | १० | ति | थि | ०  | शुभ  |
| च.  | चि  | वि.  | पू.  | षा.  | उ.  | षा. | न.  | ११   | १३    | ६  | ति | थि | ०  | अशुभ |
| मं. | मू. | अ.   | आ    | मृ.  | उ.  | न.  | च.  | ८    | ३     | १३ | ७  | ति | थि | शुभ  |
| मं. | श.  | आ    | ध.   | पू.  | म.  | उ.  | षा. | न.   | २     | १० | ति | थि | ०  | अशुभ |
| बु. | अ.  | वृ.  | कृ.  | रो.  | मृ. | न.  | २   | ७    | १२    | ति | थि | ०  | ०  | शुभ  |
| बु. | मू. | ध.   | रे.  | अ.   | मृ. | न.  | १   | ३    | ६     | ति | थि | ०  | ०  | अशुभ |
| गु. | रे. | अ.   | ऽनु  | पु   | पु. | न.  | ५   | १०   | १५    | ति | थि | ०  | ०  | शुभ  |
| गु. | श.  | आ    | कृ.  | उ.   | रो. | मृ. | न.  | ८    | ६     | ४  | ति | थि | ०  | अशुभ |
| शु. | चि  | उ.   | रे.  | श्र. | पु. | न.  | च.  | ११   | ६     | १  | ३  | ति | थि | शुभ  |
| शु. | रो. | पु.  | ज्ये | आ    | म.  | न.  | २   | ७    | ति    | थि | ०  | ०  | ०  | अशुभ |
| श.  | रो. | स्वा | श्र. | पू.  | म.  | न.  | ६   | ४    | १३    | ति | थि | ०  | ०  | शुभ  |
| श.  | ह.  | उ.   | चि   | उ.   | रे. | न.  | ६   | ७    | ति    | थि | ०  | ०  | ०  | अशुभ |

आश्ले म, ज्येष्ठा हो तो कुयोग है ॥ ३ ॥ जो शनि ९।४  
१३ को रा, स्वा, श्र, पू फा म हो तो सिद्धि योग है, जो  
शनि ६।७ को ह, उ, पा, चित्रा, उत्तरा रे, हो तो कुयोग  
होता है ॥ ३१-३२ ॥

नक्षत्राणांचरादिसंज्ञा

चरं चलं स्मृतं स्वाती पुनर्वसु श्रुतित्रयम् ।  
क्रूरमुग्रं मघा पूर्वार्द्रितयं भरणी तथा ॥३३॥  
ध्रुवं स्थिरं विनिर्दिष्टं रोहिणी चोत्तरात्रयम् ।  
तीक्ष्णदारुणमाश्लेषा ज्येष्ठार्द्रा मूलमेव च ॥३४॥  
लघुक्षिप्रं स्मृतं पुष्यो हस्तोश्विन्यभिजित्स्मृतम् ।  
मृदु मैत्रं स्मृतं चित्राऽनुराधा रेवती मृगः ॥३५॥  
मिश्रं साधारणं प्रोक्तं विशाखा कृत्तिका तथा ।  
नक्षत्रेष्वेषु कर्माणि नामतुल्यानि कारयेत् ॥३६॥

नक्षत्राणांसप्तधासंज्ञायन्त्रम्

| स्वा.पु. | घ.   | घ.  | श.  | चर    | चल          |
|----------|------|-----|-----|-------|-------------|
| म.       | पू.  | पू. | म.  | क्रूर | उग्र        |
| रो.      | उ.   | उ.  | ३   | ध्रु. | स्थिर       |
| श्ले.    | ज्ये | आ   | मू. | ०     | तारु        |
| ह.       | पु.  | अ.  | अ.  | ०     | लघु         |
| चि       | ऽनु  | मू. | रे. | ०     | मैत्र       |
| वि       | कृ.  | ०   | ०   | ०     | मिश्र साध्य |

ट का-अब अठारह नक्षत्रों की  
सात संज्ञा भिन्न कहते हैं उनमें  
प्रथम स्वाती पु० श्र० घ०श० ये  
नक्षत्र चर कार्य में शुभ हैं, पूर्वा  
३ म० भ० ये क्रूर संज्ञक में और  
रोहिणी उत्तरात्रय ये ध्रुव संज्ञक  
नक्षत्र स्थिर कार्य में आश्लेषा, आ०  
म० ये तीक्ष्णसंज्ञक नक्षत्र तीक्ष्ण  
कार्य में ग्राह्य हैं ह०पु० अश्विनी  
ये लघु-क्षीप्र संज्ञक नक्षत्र शीघ्र



स्वल्प कार्य में ग्राह्य हैं, चि० अनु० मृ० रेवती ये मृदु मैत्र संज्ञक नक्षत्र केवल मैत्री कार्य में शुभ हैं और वि० कृ० ये मिश्र साधारण नक्षत्र सामान्य कार्य में शुभ हैं इन सबों का फल संज्ञानुसार जाने ॥ ३३-३६ ॥

शनिचक्रम्

शनिचक्रं नराकारं लिखेद्यत्र शनिर्भवेत् ।

तन्नक्षत्रं मुखे दत्त्वा यावन्नाम नरस्य च ॥३७॥

तावद्विचारयेत्तत्र ज्ञेयं तत्र शुभाशुभम् ।

एकं मुखे च नक्षत्रं चत्वारि दक्षिणे करे ॥३८॥

त्रयं त्रयं पादयोश्च वामहस्ते चतुष्टयम् ।

ललाटे द्वितयं नेत्रे हृदि पञ्च गुदे द्वयम् ॥३९॥

एकं च दक्षिणे कुक्षौ नक्षत्राणि क्रमेण च ।

हानिमुखे दक्षहस्ते लाभो वामे च रागता ॥४०॥

हृदि श्रीर्मस्तके राज्यं पादे पर्यटनं फलम् ।

नेत्रे सुखं गुदे मृत्युः कुक्षौ शोकं विचिंतयेत् ॥४१॥

जपादिपूजनार्चाभिः कल्याणं जायते सदा ।

अन्यान्येव विचार्याणि वाहनानि बहूनि च ॥४२॥

टीका-अत्र शनिचक्र का विचार कहते हैं, शनि चक्र नराकार लिखे, जिस नक्षत्र में शनि हो वह मुखपर देकर उससे जन्म नक्षत्र तक गिने फिर शनि तक नक्षत्रादि क्रम से प्रत्येक अङ्ग पर सब नक्षत्र स्थापित करे जिस अङ्ग में जन्म नक्षत्र पड़े वहाँ का फल जाने

एक नक्षत्र मुखमें धरे, ४ दहिने हाथ में, ३ दक्षिण पाँव, ३ वाम पाँव ४ वाम कर २ ललाट, ३ नेत्र ५ हृदय २ गुदा और १ दक्षिण कांख में क्रम पूर्वक धरे, को मुख में जन्म नक्षत्र पड़े तो हानि करे, वाम हस्त पर रोग, हृदय पर लक्ष्मी, ललाट में राजपद, दक्षिण हस्त में लाभ, चरणों में भ्रमावै, नेत्र में सुख, गुदा में मृत्यु और कांख में पड़े तो शोक करे । उस निमित्त, जप, ब्राह्मण भोजनादि से कल्याण होवे । इसी प्रकार अनेक वाहनादिकों का भी विचार करे ॥ ३७-४२ ॥

नराकारशनिचक्रम्



शनिराशिफलम्

मेघे शनौ गुर्जरेषु प्रभासे चार्बुदे वृषे ।  
मिथुने जायते पीडा स्थले मूलस्थलेषु च ॥४३॥  
कर्के काश्मीरके बाधा शक्रप्रस्थे मृगाधिपे ।  
शनैश्चरे च कन्यायां मालवाख्ये च संचयम् ॥४४॥  
तुलावृश्चिकचापेषु यदि याति शनैश्चरः ।  
न वर्षन्ति तदा मेघाः पृथ्वी दुर्मिच्छपीडिता ॥४५॥  
सुभिन्नं मकरे कुंभे जायते बहुधा शनौ ।  
मीने च सर्वलोकानां दुर्मिच्छं तु क्षयो भवेत् ॥४६॥

टीका—मेघ का शनि हो तो गुर्जर देश में पीडा करै वृष का प्रभास क्षेत्र और अर्बुद देश में मिथुन का मूलस्थ देश में कर्क



का काश्मीर देश में सिंह का इन्द्र प्रस्थ देशमें, कन्या का मालवा में पीड़ा करे, तुला, वृश्चिक व धनका हो तो मेघ न वरसै और पृथ्वी दुर्भिक्ष से पीड़ित हो कुम्भ मकर का हो तो अन्न का सुकाल करे, मीन का हो तो सर्वत्र अकाल पड़े और दुर्भिक्ष से पीड़ा होवे ॥ ४५-४६ ॥

एकस्मिन्मासे पञ्चवारफलम्

यत्र मासे रवेर्वारा जायन्ते पञ्च संततम् ।  
 दुर्भिक्षं छत्रभंगश्च तदस्ते च महद्भयम् ॥४७॥  
 सोमस्य पञ्च वाराश्च यत्र मासे भवन्ति हि ।  
 धनधान्यसमृद्धिश्च सुखयुक्तास्ति मेदिनी ॥४८॥  
 यत्र मासे महीसूनोर्जायन्ते पञ्च वासराः ।  
 रक्तेन पूरिता पृथ्वा छत्रभंगस्तदा भवेत् ॥४९॥  
 बुधस्य पञ्चवाराश्च जायन्ते च निरन्तरम् ।  
 प्रजाश्च सुखसम्पन्नाः सुभिक्षं च प्रजायते ॥५०॥  
 यत्र मासे पञ्चवारा जायन्ते च बृहस्पतेः ।  
 विग्रहः पश्चिमे देशे पीडा युद्धं च जायते ॥५१॥  
 शुक्रस्य पञ्चवाराश्च यत्र मासे निरन्तरम् ।  
 प्रजावृद्धिः सुभिक्षं च सुखं यत्र प्रवर्तते ॥५२॥  
 शनिवारा यदा पञ्च पाताले कम्पते फणी ।  
 ईशानदेशभंगश्च वह्निदाहो महर्घता ॥५३॥

टीका-यदि महीने में पांच रविवार हो तो अन्न महंगा, छत्र

भङ्ग तथा महाभय होवे ॥ ४७ ॥ जो महीने में पांच सोमवार पड़े तो धन धान्य की वृद्धि और सर्वत्र सुख करे ॥ ४८ ॥ जो एक मास में पांच मंगलवार पड़े तो पृथ्वी रुधिर से परित तथा छत्र-भङ्ग हो जावे ॥ ४९ ॥ जो मासमें पांच बुधवार पड़े तो प्रजा सुखी होकर सुभिक्ष रहे ॥ ५० ॥ जो मास में पांच गुरुवार पड़े तो पश्चिम में विग्रह, पीड़ा युद्ध, होना सम्भव है ॥ ५१ ॥ जो महीने में पांच शुक्रवार पड़े तो प्रजा बढ़कर सुभिक्ष और सुख हो ॥ ५२ ॥ जो मासमें पांच शनैश्चर पड़े तो पाताल में शेषनाग कांप जाय ईशान देश का भङ्ग हो, अग्नि का भय और अन्न महंगा होवे ॥ ५३ ॥

अभिजिन्मुहूर्तफलम्

अंगुल्यो विंशतिः सूर्ये शंकुः सोमे च षोडश ।  
 कुजे पंचदशांगुल्यो बुधवारे चतुर्दश ॥ ५४ ॥  
 त्रयोदशगुरोर्वारे द्वादशार्कजशुक्रयोः ।  
 शंकुमूले यदा छाया मध्याह्ने च प्रजायते ॥ ५५ ॥  
 तदा चाभिजिदाख्याता घटिकैका स्मृता बुधैः ।  
 अत्र कार्याणि सर्वाणि सिद्धिं यांति कृतानि च ॥ ५६ ॥  
 जातोऽभिजिति राजा स्याद्व्यापारे सिद्धिरुत्तमा ।  
 महाक्रूरवियोगेन सर्वमंगलदायिनी ॥ ५७ ॥

टीका-रविवार को २० अंगुल की और सोम को १६ मंगल १५ बु. १४, वृ. १३, शुक्र १२, शनिको १२ अंगुलका शंकु ( सीक ) खड़ी करे । जब दो प्रहर के अंत अभिजित् मुहूर्त एक घड़ी का होता है, वह सब कार्य में सिद्धिप्रद होता है ।



| अथाभिजिन्मुहूर्तयंत्रम् |    |    |     |     |     |     |    |
|-------------------------|----|----|-----|-----|-----|-----|----|
| वार                     | र. | च  | मं. | बु. | गु. | शु. | श. |
| अं.                     | २० | १० | १५  | १४  | १३  | १२  | ११ |

यदि अभिजिन् नक्षत्र में जन्म हो तो जातक राजा हो और सब प्रकार के व्यापार में सिद्धिप्रद होता है ॥ ५४-५७ ॥

शुक्रोदयफलम्

अर्थवृद्धिः फाल्गुने स्याच्चैत्रे च धनसंपदः ।  
 वैशाखे विग्रहो राज्ञां ज्येष्ठे वृष्टिश्च भूयसी ॥५८॥  
 आषाढे चोदिते शुके जलं भवति दुर्लभम् ।  
 श्रावणे च पशोः पीडा भाद्रे धान्यसमृद्धयः ॥५९॥  
 आश्विने सर्वसंपत्तिः शुभः कार्तिकमार्गयोः ।  
 पौषे माघे छत्रभङ्गो यद्युदेति भृगोः सुतः ॥६०॥

टीका-जो शुक्र का उदय फाल्गुन में हो तो अन्न सस्ता होवे, चैत्र में धन सम्पत्तिकरै, वैशाख में उदय हो तो राजाओं में विग्रह ( लड़ाई ) करे, ज्येष्ठ में उदय हो तो वर्षा विशेष करे ॥ ५८ ॥ आषाढ़ में हो तो जल न होवे श्रावण में हो तो पशुओं को पीड़ा करे, भादों में हो तो अन्न बहुत उपजावे ॥ ५९ ॥ जो आश्विन में हो तो सर्व संपत्ति करे, और जो कार्तिक या अगहन में हो तो शुभ है पर जो पौष या माघमें उदय हो तो छत्र भंग करे ॥ ६० ॥

होलिका धूमफलम्

पूर्ववायुर्होलिकायाः प्रजाभूपालयोः सुखम् ।  
 पलायनं च दुर्मितं दक्षिणे जायते ध्रुवम् ॥६१॥  
 पश्चिमे तृणसम्पत्तिरुत्तरे धान्यसम्भवः ।  
 यदि खे च शिखावृद्धिर्दुर्गराज्ञोऽपि संचयेत् ॥६२॥

टीका—जो हालिका दहन के समय पूर्व को पवन चले तो राजा प्रजा को सुख करे, दक्षिण पवन चले तो देश भरमें दुर्भिक्ष करे, पश्चिम पवन चले तो तृण संपत्ति बढ़े, उत्तर पवन चले तो धान्य वृद्धि हो और जो होली का धूआं आकाश को सीधा चढ़े तो राजा तथा किला को भी नाशकरता है ॥ ६१-६२ ॥

वर्षाशकुनः

एकादश्यां कार्तिकस्य यदि मेघः समीक्ष्यते ।

आषाढे च तथा वृष्टिर्जायते नात्र संशयः ॥६३॥

मार्गशीर्षस्य चाष्टम्यां दृश्यन्ते विद्युतो यदा ।

तदा वृष्टिः श्रावणे च मासि संजायते ध्रुवम् ॥६४॥

कृष्णपक्षे दशम्यां च वृष्टिः पौषे च जायते ।

तदा भाद्रपदे मासे वृष्टिर्भवति भूयसी ॥६५॥

वृष्टिश्चेन्माघसप्तम्यां ज्येष्ठे मूले च वर्षते ।

नक्षत्रे वारिवाहश्च तदान्नैः पूर्यते मही ॥६६॥

पंचम्यां प्रथमे पक्षे श्रवणे च प्रवर्षते ।

पयोवाहस्तदाधान्यैर्धरा व्याप्ता जलैरपि ॥६७॥

टीका—जो कार्तिक की एकादशी को मेघ छाया करे तो आषाढ़े महीने में अशुभ वर्षा होती है ॥६३॥ मार्गशीर्ष की अष्टमी को विद्युत दिखाई दे तो श्रावण में वृष्टि हो ॥६४॥ जो पौष कृष्ण दशमी को मेघ वरसे और ज्येष्ठ में मूल नक्षत्र वरसे तो वर्षा के सब नक्षत्र उत्तम वरसे और अन्न उपजे ॥ ६५ ॥ श्रावण कृष्ण पञ्चमी में वरसे तो अन्न और जल बहुत होवे ।



आषाढे पूर्णिमाफलम्

आषाढे पूर्णिमायां तु यन्नक्षत्रं विचारयेत् ।  
 पूर्वाषाढे सुभिक्षं च मूले दुर्भिक्षमुच्यते ॥  
 उत्तराषाढकेऽश्वानां पीडा कटकसंगतिः ॥६८॥

टीका-अब आषाढ पूर्णिमा के नक्षत्र का इस प्रकार विचार करे जो पूर्वाषाढा हो तो सुभिक्ष, मूल हो तो दुर्भिक्ष और उत्तराषाढा हो तो घोड़ा को पीड़ा होती है ।

ज्येष्ठप्रतिपदफलम्

ज्येष्ठस्य प्रथमे पक्षे प्रतिपच्च यदा भवेत् ।  
 रवेर्वारस्तदा वायुर्वाति वृक्षांतकारकः ॥६९॥  
 अत्यन्तविग्रहो भौमे बुधे दुर्भिक्षमुच्यते ।  
 अनावृष्टिः शनेर्वारे जलं क्वापि न लभ्यते ॥७०॥  
 सोमशुक्रसुरेज्यानां यदि वारि प्रजायते ।  
 धनधान्यसुतोत्पत्तिर्गेहे गेहे महोत्सवः ॥७१॥

टीका-ज्येष्ठ कृष्ण प्रतिपदा तिथि को रविवार पड़े तो पवन वेग से चले और वृक्ष टूटें, भौम पड़े तो विग्रह, बुध पड़े तो दुर्भिक्ष हो, शनि पड़े तो जरूरी नहीं न हो, सोम शुक्र और गुरु पड़ें तो धन धान्य और सन्तान से सुख होता है ॥ ६९-७१ ॥

पौषसंक्रान्ति फलम्

पौषमासस्य संक्रांतौ रविवारो यदा भवेत् ।  
 धान्यानां त्रिगुणं मूल्यं भौमवारे चतुर्गुणम् ॥  
 त्रिगुणं शनिवारे च बुधे शुके समं भवेत् ॥७२॥

सुराचार्ये च सोमे च मृत्यमर्धं सुनिश्चितम् ।

क्रूरो हि लाभकृद्भान्ये सौम्यो हानिप्रदो भवेत् ॥७३॥

टीका—पौष संक्रान्ति के दिन जो रविवार पड़े तो अन्न का दाम तिगुना हो जाय, भौम को चौगुना शनि को तिगुना बुध-शुक्र को समान और गुरु-सोम को आधे तथा संक्रान्ति के दिन शुभवार पड़े तो घाटा और क्रूर वार पड़े तो नफा हो ।

मीनसंक्रान्ति फलम्

मीनसंक्रमणे सूर्ये वारे वाति समीरणः ।

भौमे पीडा पशूनां च दर्भिर्क्षां च शनैश्चरे ॥७४॥

वृक्षपातः प्रजापीडा मिथ्या संचरते महीम् ।

हिंसाकामातुरा लोके यदि वृष्टिश्च तद्दिने ॥७५॥

संक्रान्तौ यदि मीनस्य बुधवारः प्रजायते ।

छत्रभंगो महामारी रोदनं भयाचतया ॥७६॥

संक्रान्तौ सोमवारश्चेत्प्रजानां परमं सुखम् ।

भानुभौमार्किवारेषु पापयुद्धं महर्घता ॥७७॥

टीका—जो मीन की संक्रान्ति रविवार को हो तो वर्ष भर पवन चले, मंगल को हो तो पशुओं को पीड़ा, शनि को पड़े तो दुर्मिक्ष और इस दिन में भद्रा हो तो पृथ्वी पर वृक्ष गिरें, दुखी मिथ्यावादी हिंसक और कामातुर होंवें । बुध की पड़े तो छत्र भंग महामारी, चित्तमें चिन्ता और भय उपजावै, सोम को पड़ें तो सुख हो, रवि, भौम और शनिवार को मीन की संक्रान्ति पड़े तो पाप युद्ध और अन्न महंगा होवे ॥ ७४-७५ ॥

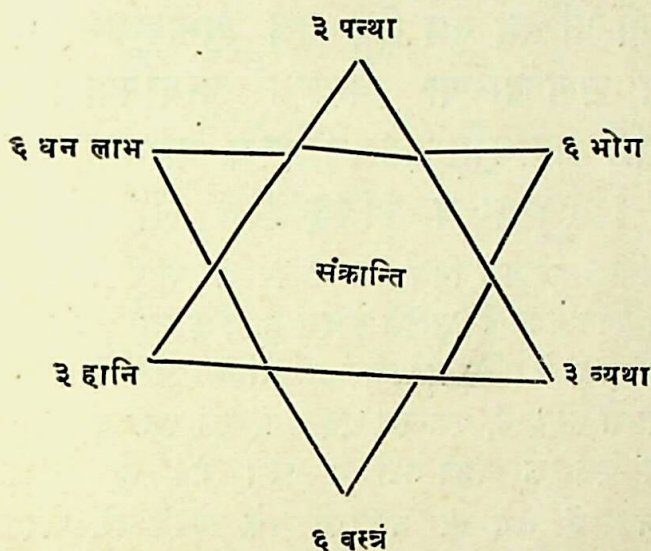


संक्रांत्याचारनक्षत्रादात्मभावोधिगणयते ।

त्रिकं षट्कं त्रिकं षट्कं त्रिकं षट्कं पुनः पुनः ॥७८॥

पंथा भोगो व्यथा वस्त्रं हानिश्च विपुलं धनम् ।

षट्के भागे फलं श्रेष्ठं मासे मासे विचारयेत् ॥७९॥



टीका—संक्रांति समय के नक्षत्र से नाम नक्षत्र तक गिने, जो ३ तक हो तो रास्ता चलावे, ९ तक सुख भोग, १२ तक व्यथा, १८ तक वस्त्र सुख, २१ तक हानि और २७ तक विपुल धन तथा भोग मिले इस प्रकार मास विचार करे ॥ ७८-७९ ॥

रोहिणी निर्णयः

राशिचक्रं लिखित्वादौ मेषसंक्रान्तिभादिकम् ।  
 अष्टाविंशतिकं तत्र लिखेन्नक्षत्रसंकुलम् ॥८०॥  
 सिंधौ द्वयं द्वयं दद्यादन्यत्रैकैकमेव च ।  
 चत्वारः सागरास्तत्र संधयश्चाष्टसंख्यया ॥८१॥  
 शृंगाणि तत्र चत्वारि तटान्यष्टौ स्मृतानि च ।  
 रोहिणी पतिता यत्र ज्ञेयं तत्र शुभाशुभम् ॥८२॥  
 जाता जलप्रदस्यैषा चन्द्रस्य परमप्रिया ।  
 समुद्रेति महावृष्टिस्तटे वृष्टिश्च शोभना ॥  
 पर्वते विंदुमात्रा च खंडवृष्टिश्च संधिषु ॥८३॥

टीका—अब वर्षा निर्णय के विषय में मुख्य विचार प्रथम रोहिणी पतन कहते हैं। पहिले द्वादश कोठा कुंडलो चक्र करके रोहिणी चक्र में गर्भित करे और उस रोहिणी चक्र में २८ नक्षत्र धरे, दो-दो समुद्र में, एक-एक शृङ्गन में, एक-एक नक्षत्र संधियों में और एक-एक नक्षत्र तटों में धरे। मेष की संक्रान्ति जिस नक्षत्र में लगे उस नक्षत्र को पूर्वके समुद्रमें धरे, बाद जहाँ जहाँ इस प्रकार पहिले लिखे हैं तदनुसार धरे, फिर विचारे जो रोहिणी समुद्र में पड़े तो वर्षा अधिक होवे, शृङ्गों में पड़े तो वर्षा थोड़ी हो, संधियों में पड़े तो कभी बरसे, कभी न बरसे, तटमें रोहिणी पड़े तो अच्छी वृष्टि होवै अश्विनी के स्थान में संक्रान्ति दिन का नक्षत्र धर कर विचार करै ॥ ८०-८३ ॥



## अथ रोहिणी चक्रम्

पू.

|                 |        |                     |        |               |
|-----------------|--------|---------------------|--------|---------------|
| सन्धि           | तट     | सिन्धु              | तट     | सन्धि         |
| उत्तरा भाद्र २७ | रे     | अश्विनी १ भरणी २    | कृ     | ४ रोहिणी      |
| पू० भा० २६      | २८     |                     | ३      | शुग ५         |
| सन्धि           | श्रृं. |                     |        | सन्धि         |
| शततारकार २५     |        |                     | श्रृं. | आर्द्रा       |
| तट. धनिष्ठा २४  |        |                     |        | तटपुनर्वसु ७  |
| सन्धि           |        |                     |        | सिन्धु        |
| श्रवण २३        |        |                     |        | पुण्य ८       |
| ऽभिजित्. २२     |        |                     |        | अश्लेषा ६     |
| तट उत्तराषा २१  | श्रृं. |                     | श्रृं. | तट मघा १०     |
| सन्धि           |        |                     |        | सन्धि         |
| पूर्वाषाढा २०   |        |                     |        | पू० फा० ११    |
| मू० १६          | ट      |                     |        | उत्तरा फा. १२ |
| सन्धि           | नु     | सिन्धु              | तट     | सन्धि         |
| ज्येष्ठा १      | ०      | स्वाती १५ विशाखा १६ | चि     | ह. १३         |
|                 |        |                     | १४     |               |

उदाहरण-मेघकी संक्रान्ति मघा नक्षत्र में है, मघा से २३

प.

वाँ रोहिणी होता है तो पूर्व समुद्र में मघा नक्षत्रों को जहाँ पर जिस प्रकार से लिखे हैं तदनुसार लिखने पर रोहिणी उत्तर के समुद्र में पड़ती है अतः महावृष्टि योग है ।

नरचक्रम्

नराकारं लिखेच्चक्रं सूर्यो यत्र व्यवस्थितः ।

तन्नक्षत्रादिकं कृत्वा त्रयं दद्याच्च मस्तके ॥८४॥

मुखे त्रयं स्कंधयोश्च दद्यादेकैकमेव च ।

बाहुद्वये तथैकैकं पाशयोरेकैकमेव च ॥८५॥

हृदि पंच गुदे चैकं नाभौ चैकं प्रदापयेत् ।

जंघयोरेकमेकं च षड्भानि पादयोर्द्वयोः ॥८६॥

मस्तके पट्टबन्धी स्यान्मुखे मिष्ठान्नभोजनम् ।

स्कंधे गजेन्द्रगामी स्याद् बाहौ स्नेहच्युतो भवेत् ॥८७॥

पाणौ च जायते चौरौ हृदयेऽपीश्वरो नरः ।

स्वल्पतोषी भवेन्नाभौ परदाररतो गुदे ॥८८॥

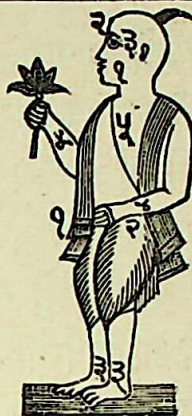
स्यात्प्रवासी तु जानौ च पादे स्वल्पायुषस्तथा ।

नरचक्रं सूर्यनक्षत्राज्जन्मभावोधिगणयते ॥८९॥

टीका—अब नरचक्र कहते हैं । सूर्य के नक्षत्र से जन्म नक्षत्र तक गिने, जिस अङ्ग में जन्म नक्षत्र पड़े उसपर से फल कहे । जो माथेपर जन्म नक्षत्र पड़े तो कुटुम्बनायक होवे, जो मुख में पड़े तो मीठा भोजन मिले, कंधेपर पड़े तो हाथीपर चढ़े, भुजाओंमें पड़े तो स्थान भंगहो जाय, हाथोंमें पड़े तो चोरहो हृदयमें पड़े

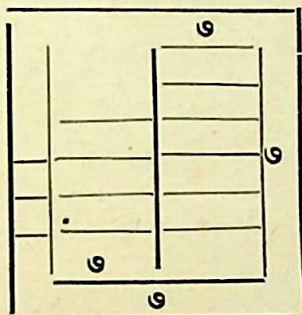


तो मालिक हो, नामि में पड़े तो थोड़े भोजन में सन्तुष्ट रहे और जो गुदा में जन्म नक्षत्र पड़े तो परस्त्री गाभी हो, जाँघों में पड़े तो परदेश वास करे और चरणों में पड़े तो आयुष्य थोड़ी पाकर थोड़ी ही अवस्था में मृत्यु हो, यही नराकार चक्र में नक्षत्र का शुभाशुभ फल होता है ॥ ८४-८९ ॥



ग्रामवासफलम्

ग्रामनाम्नोभवेदृक्षं तदाद्याःसप्त मस्तके ।  
पृष्ठे सप्त हृदि सप्त पादयोः सप्त तारकाः ॥६०॥  
मस्तके च धनी मान्यः पृष्ठे हानिश्च निर्धनः ।  
हृदये सुखसंपत्तिः पादे पर्यटनं फलम् ॥६१॥



टीका-जिस ग्राम में या नगर में वास करना चाहे, उस ग्राम के नाम से नक्षत्र वनावे जो नक्षत्र ग्राम को पावे उसी के प्रथम नाम पर्यन्त अट्ठाइसों नक्षत्र जाने । उसमें से ग्राम के नक्षत्र अदि देकर सात नक्षत्र ग्राम के माथे पर

घरे ७ पीठ पर ७ हृदय पर रखकर और ७ पाँवों पर रख कर अपने नक्षत्र को देखे । जो माथे पर पड़े तो धनी होवे, सम्मान पावे, पीठ में हानि और निर्धन, हृदय में पड़े तो सुख सम्पत्ति पावे और पाँवों में पड़े तो पर्यटन करे ॥ ९०-९१ ॥

## मूलवृक्षफलम्

मूलेऽष्टौ मूलवृक्षस्य घटिकाः परिकीर्तिताः ।  
 स्तम्भेषु षट्कघटिकास्त्वचि चैकादशस्मृतम् ॥६२॥  
 शाखायां च नव प्रोक्ताः पत्रे प्रोक्ताश्चतुर्दश ।  
 पुष्पे पञ्च फले वेदाः शिखायां च त्रयं स्मृतम् ॥६३॥  
 मूले नाशो हि मूलस्य स्तम्भे हानिर्धनक्षयः ।  
 त्वचि भ्रातुर्विनाशश्च शाखायां मातृपीडनम् ॥६४॥  
 परिवारक्षयं पत्रे पुष्पे मंत्री च भूपतेः ।  
 फले राज्यं शिखायां चेदल्पजीवी च बालकः ॥६५॥

टीका-अब मूल संज्ञक जो नक्षत्र हैं, उनके विचारने की रीति मूल चक्राकार कहते हैं । मूल वृक्ष बना कर ८ घड़ी मूल में धरे, ६ स्तम्भ, ११ त्वचा, ९ शाखा, १४ पत्र, ५ पुष्प, ५ फल, और ३ शिखा में ऐसे ६० घटिका से धरे, जो मूलकी ८ घड़ी में बालक का जन्म हो तो फल नाश हो स्तम्भ की ६ घड़ी में हो तो धन की हानि होवे, त्वचा की १२ घड़ी में हो तो भ्राता का नाश होवे । शाखा की ९ घड़ी में हो तो पीड़ा करे, जो पत्रकी १४ घड़ी में हो तो परिवार क्षय हो, फूलों की पांच घड़ी में हो तो राजमन्त्री हों, फलों की ४ घड़ी जन्म हो तो राजा अथवा वंश में व देश में श्रेष्ठ हो और शिखा की ३ घड़ी में जन्म

| मूल वृक्ष यन्त्रम् |    |            |
|--------------------|----|------------|
| शिखा               | ३  | अल्पायु    |
| फल                 | ४  | राज्य      |
| पुष्प              | ५  | राजमन्त्री |
| पत्र               | १४ | परिवार     |
| शाखा               | ९  | माताना     |
| त्वचा              | ११ | भ्राताना   |
| स्तम्भ             | ६  | धनहानि     |
| मूल                | ८  | मूलनाश     |



हो तो आयु अल्प पावे ॥ ९२-९५॥

शुक्रादिग्रहविचारः

रेवत्यादिमृगांतं च यावत्तिष्ठति चन्द्रमाः ।

तावच्छुक्रो भवेदंधः संमुखे दक्षिणे शुभः ॥६६॥

प्राक्पश्चादुदितः शुक्रः पंच सप्त दिने शिशुः ।

विपरीतं तु वृद्धत्वं तद्वदेव गुरोरपि ॥६७॥

तृतीये दशमे षष्ठे प्रथमे सप्तमे शशी ।

शुक्लपक्षे द्वितीयस्तु पञ्चमे नवमे शुभः ॥६८॥

टीका-रेवती से मृगशिरा तक जब तक चन्द्रमा रहते हैं तब तक शुक्र अन्ध रहते हैं वह सम्मुख और दाहिने शुभ हैं, जब पूर्व वा पश्चिम में शुक्र उदय हो तो वह पाँच या सात दिन तक बाल रहे अर्थात् पूर्व में उदय हो तो पाँच दिन और पश्चिम में उदय हो तो सात दिन तक बाल रहता है और पूर्व में शुक्र का अस्त हो तो वह सात दिन पहिले वृद्ध कहलाता है और पश्चिम में अस्त हो तो ५ दिन वृद्धता रहती है, इसी प्रकार बृहस्पति का भी बाल-वृद्धत्व जानना । चन्द्रमा कृष्ण पक्ष में ३ । १० । ६ । १ । ७ शुभ है और शुक्ल पक्ष में २ । ५ । ९ शुभ है ॥ ९६-९८ ॥

ताराविचारः

तारा शुभप्रदाः सर्वास्त्रिपंच सप्तवर्जिताः ।

प्रथमे दशमे षष्ठे तृतायैकादशे तथा ॥६९॥

यदि स्यात्सबलश्चन्द्रस्तारापि क्लेशदायिनी ।

तृतीया पंचमी तारा सप्तमे च नृणां भवेत् ॥१००॥

जन्मभाद् गणयेद्धीमान् क्रमाच्च दिनभावधि ।  
 नवभिस्तु हरेद्भागं शेषं तारा विनिर्दिशेत् ॥ १ ॥  
 जन्मसंपद्विपत्क्षेमप्रत्यरिः साधको बधः ।  
 मैत्रातिमैत्रं ताराः स्युस्त्रिरावृत्या नवैव हि ॥ २ ॥

टीका-३ । ५।७ को छोड़ कर सब तारायें शुभ कारिणी

| अथ तारावल यन्त्रम् |        |   |    |     |     |     |     |     |       |
|--------------------|--------|---|----|-----|-----|-----|-----|-----|-------|
| सू.म               | रा.के. | ३ | ६  | ६१० | १   | शु. |     |     |       |
| च.                 | ११०    | ६ | ३  | ७   | शु. | २   | ५   | अशु |       |
| म                  | ६      | ४ | श. | २   | १   | ७   | ३   |     |       |
| बु.                | ६      | ८ | २  | ४   | १०  | ११  | शु. | ३   | ७१०   |
| गु.                | २      | ५ | ७  | ६   | ११  | शु. | गु. | भा  | ०     |
| शु.                | १      | २ | ३  | ४   | १   | ८   | ६   | ११  | १२ शु |

हैं । और १ । ३ । १० ।  
 ११ । तारा भी शुभ हैं  
 यदि चन्द्रमा वली हो तो  
 क्लेश देने वाली तारायें  
 भी ३।५।७ वे मनुष्य को  
 कल्याण देनेवाली होती है  
 २००॥ जन्म नक्षत्र से दिन  
 नक्षत्र तक गिन कर भी  
 का भाग देवे जो शेष बचे  
 उसको, तारा जाने । जन्म

संवत्, विपत्, क्षेम, प्रत्यरि, साधक, बध, मैत्र, अतिमैत्र ये संज्ञा  
 तीन आवृत्ति से विचार करे । १९९-२०२ ॥

गोचरग्रह फलम्

त्रिषष्टे दशमे भौमो राहुः केतुः शनिः शुभः ।  
 षष्टेऽष्टमे द्वितीये वा चतुर्थे दशमे बुधः ॥ ३ ॥  
 द्वितीये पंचमे जीवः सप्तमे नवमे शुभः ।  
 विहाय शुक्रो दशमे षष्टे स्यात्सप्तमे शुभः ॥ ४ ॥



ग्रहाणां गोचरं ज्ञेयं फलं विज्ञैः शुभाशुभम् ॥ ५ ॥

टीका—३।६।१० स्थान में भौम, राहु, केतु और शनि ये शुभ हैं, ६।८।२।४।१० बुध शुभ हैं, २।५।७।९ में गुरु शुभ हैं, ११ में सव ग्रह शुभ हैं, यह गोचर ग्रहों का फल पंडित लोगों को जानना चाहिये ॥ ३ ॥ ५ ॥

पूर्णक्षीणचंद्रनिर्णयः

दशम्यवधिकृष्णे तु पक्षे पूर्णो हि चन्द्रमा ।

ततः परं क्षीणचन्द्रः शुभकार्येषु वर्जितः ॥ ६ ॥

टीका—कृष्णपक्ष की दशमी तक चन्द्रमा पूर्ण है, फिर १० दिन क्षीण है, वह शुभ कार्य में वर्जित है ॥ ६ ॥

नित्यक्षौरनिर्णयः

पुनर्वसुद्वयं क्षौरे श्रुतिगुप्तं करत्रयम् ।

रेवतीद्वितयं ज्येष्ठा मृगशीर्षं च गृह्यते ॥ ७ ॥

क्षौरे प्राणहरास्त्याज्या मघा मैत्रं च रोहिणी ।

उत्तरा कृत्तिका वारा भानुभौमशनैश्चराः ॥ ८ ॥

रिक्ता षष्ठ्यष्टमी ज्ञेया क्षौरं चंद्रक्षयो निशि ।

सन्ध्या विष्टिश्च गंडान्ते भोजनान्ते च गोमृहे ॥ ९ ॥

क्षौरकममुहूतः

| पू. | पु. | श्र. | ध.  | ह. | चि   | स्वा |
|-----|-----|------|-----|----|------|------|
| रे. | अ.  | ज्ये | मू. | न. | क्ष. | त्र  |
| बु. | गु. | शु   | २   | २३ |      |      |
| ७   | १०  | ११   | १२  | १२ | ति   | थि   |

टीका—पु० पु० श्र० ध० चि० स्वा० रे० अ० ज्ये० मू० ये क्षौर कर्म में ग्राह्य हैं और नक्षत्र प्राण हर्ता हैं उन्हें त्याग दे । म. अनु. रो. भ. उ. कृ. और भौम, शनि, रवि, ये वार ६।४।६।८।१४

ये तिथियाँ, रात्रि और सन्ध्या ये समय और गंडान्त, भद्रा, भोजन करने के बाद तथा गोशाला में क्षौर कर्म भूलकर भी न करे, ये सब स्थान वर्जित हैं ॥ ६-७ ॥

राज्याभिषेकमुहूर्तः

रेवतीयुगले पुष्ये रोहियां मृगमैत्रयोः ।  
श्रवणोत्तरशुक्रेषु राज्ञां स्यादभिषेचनम् ॥१०॥

टीका—रे० अ० पु० रो० म० श्र० उ० ज्येष्ठा इन नक्षत्रों में राज्याभिषेक करना शुभ है ॥ १० ॥

तिर्यङ्मुखादिनक्षत्राणि

रेवतीयुगलं ज्येष्ठा मैत्रं हस्तत्रयं मृगः ।  
पुनर्वसुश्च विज्ञेयो गणस्तिर्यङ्मुखो बुधैः ॥११॥  
वृक्षारोपणवाणिज्ये सर्वसिद्धिञ्च कारयेत् ।  
वाहनानि च यंत्राणि गमनं च विधीयते ॥१२॥  
पूर्वात्रयं मघाश्लेषा विशाखा कृत्तिका यमः ।  
मूलं चाधोमुखो ज्ञेयो नवकोऽयं गणो बुधैः ॥१३॥  
भूकार्यमुग्रकार्यं च खननं विवरस्य च ।  
युद्धं चाधोमुखं यच्च तत्कार्यं कारयेद् बुधः ॥१४॥  
उत्तरात्रितयं पुष्यो रोहिण्यार्द्राश्रुतित्रयम् ।  
ऊर्ध्ववक्त्रो गणो ज्ञेयो नक्षत्राणां मनीषिभिः ॥१५॥  
प्रासादच्छत्रगेहानि प्राकारध्वजतोरणम् ।  
नानाभिषेकमश्वं च कुर्यादूर्ध्वमुखे गणे ॥१६॥

टीका—रे० अ० ज्ये० अनु० ह० वि० स्वा० मृ० पु० इन



तिर्यङ्मुख नक्षत्रोंमें वृक्षारोपण वाणिज्य वाहन, यंत्र और गमन इस कार्य को करे। पूर्वा-त्रय, आदलेपा, वि० कृ० म० मृ० इन अधोमुख नक्षत्रोंमें भूमि ग्रामादि कार्य, उग्र, संधान, खनन, कूपादि कार्यों को करना चाहिये। उत्तरात्रय पुष्य रो० आ० श्र० ध० श० इन ऊर्ध्वमुख नक्षत्रोंमें प्रासाद, निर्माण, छत बनाना राज्याभिषेक, घोड़े आदि पर चढ़ना में शुभ है ॥ १५-१६ ॥

| अथ तिर्यङ्मुखोर्ध्वमुखयन्त्रम् |     |      |     |      |     |      |     |     |        |
|--------------------------------|-----|------|-----|------|-----|------|-----|-----|--------|
| रे.                            | पू. | ज्ये | अनु | ह.   | चि. | स्वा | मृ. | पु. | तिर्य  |
| पू.                            | पू. | पू.  | म.  | श्ले | वि. | कृ.  | भ.  | मू. | ऽत्रो  |
| उ.                             | उ.  | उ.   | पु. | रो.  | आ   | श्र. | ध.  | श.  | ऊर्ध्व |

भैषज्यमुहूर्तः

पुनर्वसुद्वयं पौष्णं मृगाश्वौ च करत्रयम् ।  
मूलं श्रुतित्रयं मैत्रं भिषक्कर्मणि गृह्यते ॥१७॥  
सोमशुक्रसुरेज्यानां वाराः शकुनमुत्तमम् ।  
लग्नेषु चापमीनेषु वृषो ग्राह्यस्तुलाधरः ॥१८॥

टीका—पु० पु० रे० मृ० अ० ह० चि० स्वा० मू० श्र० श्र० ध० श० और अनु० ये नक्षत्र सोम, शुक्र, गुरु ये वार, धन, मीन वृष, तुला ये लग्न उत्तम हैं। इन सबका विचार करके वैद्य औषधि करावे ॥ १७-१८॥

| भैषज्यमुहूर्तयन्त्रम् |      |     |     |      |    |      |      |  |  |
|-----------------------|------|-----|-----|------|----|------|------|--|--|
| पु.                   | पु.  | रे. | मृ. | ऽवि. | ह. | चि   | स्वा |  |  |
| मू.                   | श्र. | ध.  | श.  | अ.   | न. | क्ष. | त्र  |  |  |
| च.                    | शु.  | गु. | ६   | १२   | ७  | २    | ल    |  |  |

पशुनिर्गमनिर्णयः

अभावस्याऽष्टमी त्याज्या पूर्णिमा च चतुर्दशी।

रविवारो वर्जनीयो गो पशूनां च निर्गमः ॥१६॥

चित्रोत्तरा रोहिणी च श्रवणोऽपि विवर्जितः ।

एतेषु पशुजातीनामशुभो निर्गमो भवेत् ॥२०॥

| अथ पशुनिष्कासनमुहूतयन्त्रम् |         |     |     |      |     |     |    |     |        |
|-----------------------------|---------|-----|-----|------|-----|-----|----|-----|--------|
| अ                           | भ.      | कृ. | मृ. | आ    | पु. | कृ. | म. | पू. |        |
| ह.                          | स्वा    | वि  | ऽनु | ज्ये | म.  | पू. | ध. | स.  | पू. भा |
| रे.                         | नक्षत्र | च.  | म.  | बु.  | गु. | शु. | श  | वार | पू.    |
| ५                           | ४       | ३   | ५   | ६    | ७   | ८   | ९  | १०  | १३     |

टीका-३०।८।१५।१४  
ये तिथियाँ, रविवार  
और तीनों उत्तरा, श्र०  
रो० चि० इन नक्षत्रों  
में पशुओं को एक स्थान  
से दूसरे स्थानमें लेजाना  
वर्जित है ।

उत्तरायां विशाखायां रोहिण्यां च पुनर्वसौ ।

नवम्यां च चतुर्दश्यामष्टम्यां नानयेत् पशून् ॥२१॥

टीका—तीनों उत्तरा, वि० रो० पुन० इन ६ नक्षत्रों में  
और ९।१४।८ ये तिथियाँ पशु ग्रहण में त्याज्य हैं ॥ २१ ॥

क्रयविक्रयमुहूर्तः

पूर्वा मैत्रद्वय मूलं वासवं रेवती करः ।

पुनर्वसुद्वयं ग्राह्यं पशूनां क्रयविक्रये ॥२२॥

पुष्पो भाद्रपदायुगमं स्वाती श्रुतिरथाश्विनी ।

हस्तोत्तरा मृगो मैत्रं तथाश्लेषा च रेवती ॥२३॥

ग्राह्याणि भानि चैतानि क्रयविक्रये बुधैः ।

चंद्रभार्गवजीवानां वाराः शकुनमुत्तमस्य ॥२४॥

टीका-पूर्वात्रय, अनु० ज्ये० मू० ध० रे० ह० पु० पु० इन



१४ नक्षत्रों में पशुओं की खरीद विक्र। श्रेष्ठ है ॥ २२ ॥ पुष्य पूर्वा भा० उत्तरा भा० स्वा० श्र० अश्वि० ह० उत्तरात्रय म० अनु० आश्ले० रे० ये १४ नक्षत्र और चन्द्र, बुध, शुक्र ये चार क्रय-विक्रय में शुभ हैं ॥ २३ ॥ २४ ॥

तिथिगण्डान्तम्

नन्दातिथेश्च नामादौ पूर्णानां च तथांतके ।

घटिकैका शुभा त्याज्या तिथिगंडे घटीद्वयम् ॥२५॥

| तिथिगंडान्तयंत्रम् |       |       |  |   |
|--------------------|-------|-------|--|---|
| ५ अंत              | घटी २ | आ. घ. |  | २ |
| १० अंत             | घटी २ | आ. घ. |  | २ |
| १५ अंत             | घटी २ | आ. घ. |  | २ |

टीका-नन्दा तिथि १।६।११ के आदिकी और पूर्णा ५।१०।१५ के अंत की एक एक घड़ी शुभ है और २ घड़ी तिथि गंडांत है २५

नक्षत्रगंडांतम्

ज्येष्ठाऽश्लेषा रेवती च नामांते घटिकाद्वयम् ।

आदौ मूले मघाश्विनयोर्भगंडघटिकाद्वयम् ॥२६॥

| अथ नक्षत्रगंडांत यंत्रम् |    |    |   |       |       |
|--------------------------|----|----|---|-------|-------|
| ज्ये                     | अं | घ. | २ | मू.   | आ. घ. |
| श्ले                     | अं | घ. | २ | म.    | आ. घ. |
| रे.                      | अं | घ. | २ | अश्वि | आ. घ. |

टीका-ज्येष्ठा, आश्लेषा और रेवती इनके अंतकी २ घड़ी मूल मघा और अश्विनीके आदिकी २ घड़ी नक्षत्र गंडांत है। इन्हें शुभ कार्य में छोड़ देना कहा है ॥ २६ ॥

लग्नगंडांतम्

मीनवृश्चिककर्कान्ते घटिकार्ध परित्यजेत् ।

आदौ मेषस्य चापस्य सिंहस्य घटिकार्द्धकम् ॥२७॥

टीका—मीन, वृश्चिक कर्क  
के अन्तकी और मेष धन सिंह  
के आदि की आधी घड़ी को  
कार्य में त्याग दे ॥ २७ ॥

| अथ लग्नगण्डांतम् |    |    |   |      |    |
|------------------|----|----|---|------|----|
| १२ अं.           | प. | ३० | १ | आ प. | ३० |
| ८ अं.            | प. | ३० | ६ | आ प. | ३० |
| ४ अं.            | प. | ३० | ५ | आ प. | ३० |

गण्डान्तफलम्

तिथिगंडे भगंडे च लग्नगंडे च जातकः ।  
न जोवति यदाजातो जीविते च धनी भवेत् ॥२८॥

टीका—उपरोक्त तिथि, नक्षत्र और लग्न के गंडांत में पैदा  
हुआ बालक नहीं जीता, यदि जीवे तो धनी हो ॥ २८ ॥

संवर्ताख्ययोगः

सप्तम्यां च रवेर्वारे बुधश्च प्रतिपद्दिने ।  
संवर्ताख्यस्तदा योगो वर्जनीयः सदा बुधैः ॥२९॥

टीका—सप्तमी को रविवार तथा बुधको प्रतिपद् तिथि पड़े तो  
संवर्ताख्य योग होता है । यह शुभ कार्य में सदा वर्जित है ॥२९॥

सिद्धियोगः

शुक्रे नंदा बुधे भद्राशनौ रिक्ता कुजे जया ।  
गुरो पूर्णा तिथिर्ज्ञेया सिद्धियोग उदाहृतः ॥३०॥

टीका—शुक्रको नंदा, बुध को भद्रा  
शनिको रिक्ता भौमको जया और गुरु  
को पूर्णा तिथि हो तो सिद्धि योग  
होता है । यह शुभ कार्य में सिद्धि-  
प्रद है ॥ ३० ॥

| अथ सिद्धियोगयन्त्रम् |    |    |     |     |     |
|----------------------|----|----|-----|-----|-----|
| वार                  | गु | श. | मं. | बु. | शु. |
| तिथि                 | ५  | ४  | ३   | २   | १   |
| तिथि                 | १० | ६  | ८   | ७   | ६   |
| तिथि                 | १५ | १४ | १३  | १२  | ११  |



विष्कुम्भादियोगाः

विष्कुम्भः प्रीतिरायुष्मान् सौभाग्यः शोभनस्तथा ।  
 अतिगंडः सुकर्मा च धृतिः शूलस्तथैव च ॥३१॥  
 गंडो वृद्धिध्रुवश्चैव व्याघातो हर्षणस्तथा ।  
 वज्रसिद्धिर्व्यतीपातो वरीयान् परिघः शिवः ॥३२॥  
 सिद्धिः साध्यः शुभः शुक्लो ब्रह्मेन्द्रो वैधृतिः क्रमात् ।  
 सप्तविंशतिराख्याता नामतुल्यफलप्रदाः ॥३३॥

टीका-विष्कुम्भ १, प्रीति २, आयुष्मान् ३, सौभाग्य ४, शोभन ५, अतिगंड ६, सुकर्मा ७, धृति ८, शूल ९, गंड १० वृद्धि ११, ध्रुव १२, व्याघात १३, हर्षण १४, वज्र १५, सिद्धि १६, व्यतीपात १७, वरीयान् १८, परिघ १९, शिव २०, सिद्धि २१, साध्य २२, शुभ २३ शुक्ल २४, ब्रह्म २५, ऐन्द्र २६ वैधृति २७ ये योग अपने २ नाम के तुल्य ही फलको देते हैं ॥३१-३३॥

करणानि

तिथिं तु द्विगुणीं कृत्वा हीनमेकेन कारयेत् ।  
 सप्तभिस्तु हरेद्भागं शेषं करणमुच्यते ॥३४॥

टीका-शुक्ल प्रतिपदादि से वर्तमान तिथि तक गिनकर दूनी करे एक घटाकर सात का भाग देवे, और जो अङ्क बचे उस तिथि का दूसरा करण जान ले । प्रत्येक तिथिमें दो करण होते हैं ।

उदाहरण-वर्तमान तिथि ५ है, इसको दो से गुणा तो १० हुआ, इसमें १ घटाया तो ९ हुआ, इसमें ७ का भाग देने से २ शेष बचे अतः शुक्लपक्ष की पञ्चमी तिथिमें उत्तरार्ध में दूसरा वाला करण होना निश्चय हुआ “तिथिको दूनी, एकै ऊनी, सातै हरणं, शेषे करणम् ।

बवश्च बालवश्चैव कौलवस्तैतिलस्तथा ।  
 गरश्चवणिजो विष्टिः सप्तैते करणानि च ॥३५॥  
 कृष्णपक्षे चतुर्दश्यां शकुनिः पश्चिमे दले ।  
 चतुष्पदश्च नागश्च अमावस्या दलद्वये ॥३६॥  
 शुक्लप्रतिपदायां च किंस्तुघ्नः प्रथमे दले ।  
 स्थिराण्येतानि चत्वारि करणानि जगुर्बुधाः ॥३७॥  
 शुक्लप्रतिपदांते च बवाख्याः करणो भवेत् ।  
 एकादशे च विज्ञेयाश्चरस्थिरविभागतः ॥३८॥

टीका—बव, बालव, कौलव, तैतिल, गर, वणिज, विष्टि ये सात करण चर संज्ञक हैं ॥ ३५ ॥ कृष्ण चतुर्दशी के अन्तदल के शकुनि नामक करण और अमावस्या के पूर्वदल में चतुष्पद नामकरण तथा अन्तदल को नाग नामक करण जाने । शुक्ल प्रतिपदा के पूर्व दल को किंस्तुघ्न नामक करण जाने, इन चारों करणों को बुधजन स्थिर कहते हैं । शुक्ल परिधा के अन्तिमदल को 'बव' नामक करण कहते हैं । इस प्रकार चर स्थिर के विभाग से ११ करण माने गये हैं ॥ ३५-३८ ॥

कृष्णपक्षे करणानि

| १    | २     | ३      | ४    | ५     | ६    | ७      | ८    | ९     | १०     | ११   | १२    | १३   | १४     | १५      | ति      |
|------|-------|--------|------|-------|------|--------|------|-------|--------|------|-------|------|--------|---------|---------|
| बालव | तैतिल | वणिज   | बव   | कौलव  | गर   | विष्टि | बालव | तैतिल | वणिज   | बव   | कौलव  | गर   | विष्टि | चतुष्पद | पूर्वदल |
| कौलव | गर    | विष्टि | बालव | तैतिल | वणिज | बव     | कौलव | गर    | विष्टि | बालव | तैतिल | वणिज | शकुनि  | नाग     | परदल    |



| शुक्लपक्षे करणानि |      |        |       |      |        |       |      |      |        |       |      |        |       |      |        |
|-------------------|------|--------|-------|------|--------|-------|------|------|--------|-------|------|--------|-------|------|--------|
| १                 | २    | ३      | ४     | ५    | ६      | ७     | ८    | ९    | १०     | ११    | १२   | १३     | १४    | १५   | ति     |
| किंमसुहस          | बालव | तैत्ति | वाणिज | वव   | कौलव   | गर    | विधि | बालव | तैत्ति | वाणिज | वव   | कौलव   | गर    | विधि | पूर्वत |
| वव                | कौलव | गर     | विधि  | बालव | तैत्ति | वाणिज | वव   | कौलव | गर     | विधि  | बालव | तैत्ति | वाणिज | वव   | परत    |

नक्षत्राधिपतयः

दस्रो नलो यमो धाता चंद्रो रुद्रोऽदितिर्गुरुः ।  
 भुजंगमश्च पितरो भगोऽर्यमदिवाकरौ ॥३६॥  
 त्वष्टा वायुः शक्रवह्नी मित्रः शक्रश्च निरृतिः ।  
 जलं विश्वेविधिर्विष्णुर्वासवो वरुणस्तथा ॥४०॥  
 अजैकपादाहिर्बुध्न्यः पूषेति कथिता बुधैः ।  
 अष्टाविंशतिसंख्यानां नक्षत्राणामधीश्वराः ॥४१॥

टीका-अश्विनी के अश्विनीकुमार भरणी के यम, कृत्तिका के अग्नि, रोहिणी के ब्रह्मा, मृग के चन्द्रमा, आ० के रुद्र, पुन० के अदिति, पुष्य के गुरु, आश्ले० के सर्प, म० के पितर पू० फा० के भग, उ० फा० के अर्यमा, ह० के सूर्य, चि० के त्वष्टा, स्वा० के वायु, वि० के इन्द्राग्नी, अनु० के मित्र, ज्येष्ठा के इन्द्र, मू० के राक्षस, पू० पा० के जल, उ० पा० के विश्वेदेव, अभि० के विधि, श्र० के विष्णु, ध० के वासव, श० के वरुण, पू० भा० के अजैकपाद, उ० भा० के अहिर्बुध्न्य और रेवती के पूषा, ये नक्षत्रों के स्वामी हैं । जिस देवता की प्रतिष्ठा पूजा करनी हो, उसी का नक्षत्र ले ॥३९-४१॥

## नक्षत्रदेवता ( १ )

| नक्षत्र | अ.      | भ.       | क.      | रो.      | मृ.      | आ.       | पु.      | पु.      | श्ले.    | म.       | पू.      | उ.       | ह.       | चि       |
|---------|---------|----------|---------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|
| संख्या  | १       | २        | ३       | ४        | ५        | ६        | ७        | ८        | ९        | १०       | ११       | १२       | १३       | १४       |
| देवता   | अश्विनी | ज्येष्ठा | अश्विनी | ज्येष्ठा | ज्येष्ठा | ज्येष्ठा | ज्येष्ठा | ज्येष्ठा | ज्येष्ठा | ज्येष्ठा | ज्येष्ठा | ज्येष्ठा | ज्येष्ठा | ज्येष्ठा |

## नक्षत्र देवता ( २ )

| नक्षत्र | स्वा | वि   | ऽनु  | ज्ये | मू.  | पू.  | उ.   | ऽमि  | श्र. | घ.   | श.   | पू.  | उ.   | रे.  |
|---------|------|------|------|------|------|------|------|------|------|------|------|------|------|------|
| संख्या  | १५   | १६   | १७   | १८   | १९   | २०   | २१   | २२   | २३   | २४   | २५   | २६   | २७   | २८   |
| देवता   | वायु | वायु | वायु | वायु | वायु | वायु | वायु | वायु | वायु | वायु | वायु | वायु | वायु | वायु |

इति द्वितीयप्रकरणं समाप्तम् ।

## अथ तृतीयप्रकरणं प्रारभ्यते

अङ्गस्पर्शादि प्रश्नः

शिरो मुखं कर्णनेत्रे स्पृष्ट्वा पृच्छति यो नरः ।

सुवर्णधनधान्यानां लाभस्तत्र न संशयः ॥ १ ॥

स्कन्धग्रीवाकंठहस्तस्पर्शो लाभो हि दुःखतः ।

कुक्षिनाभिसमालम्भे भक्ष्यपानादि सिद्ध्यति ॥ २ ॥

जंघालिङ्गकटिस्पर्शो कन्यालाभः सुतोद्भवः ।

जानुगुल्फपदस्पर्शो महाक्लेशः प्रजायते ॥ ३ ॥



केशस्पर्शो भवेन्मृत्युः फलस्पर्शो शुभं भवेत् ।  
 तृणांगारकसंस्पर्शो कार्यसिद्धिर्न जायते ॥ ४ ॥  
 काष्ठंपकपदस्पर्शो ग्रहपीडाभयं भवेत् ।  
 सुगंधमद्यभांडादिस्पर्शो सिद्धिः प्रजायते ॥ ५ ॥  
 शून्यालये श्मशाने च शुष्ककाष्ठे क्षते तरौ ।  
 गुल्मभस्माधमस्थाने प्रश्ने क्लेशः प्रजायते ॥ ६ ॥  
 देवगेहे नदीतीरे दिव्यस्थाने शुभं भवेत् ।  
 शुभं दिक्ष्वीरितं सिद्धिर्विदिक्षु च न जायते ॥ ७ ॥

टीका-जो प्रश्न पूछने वाला अपने शिर, मुख, कान, नेत्र, हाथ को छूए हो तो निस्सन्देह धनधान्य पावे । कंधा, ग्रीवा, कंठ, हाथ छुए हो तो दुःख से लाभ हो । कांख, नाभी छुए हो तो कन्या वा पुत्र होवे । जानु, गुल्फ, पाँव, छुए हो तो महाक्लेश पावे । केश छुए हो तो मृत्यु होवे । फल छुए हो तो शुभ हो । तृण, अग्नि छुए हो तो कार्य सिद्धि न हो, काष्ठ, कीच, वस्त्र छुए हो तो ग्रह भय होवे । सुगन्ध वा मद्यपात्र छुए हो तो सिद्धि हो और शून्य गृह, श्मशान, सूखे काष्ठ पर घायल, तरु, लताओं, भस्म पर बैठे पूछे तो क्लेश पावे । देवस्थान, नदी के तीर, पवित्र स्थान में और शुद्ध दिशाओं के सन्मुख होकर पूछे तो शुभ कहे, जो विदिशा से पूछा तो अशुभ कहे ॥ १-७ ॥

लग्नप्रमाणम्

तिस्रो मीने च मेघे च घटीपंच श्रुतिः पलम् ।  
 चतस्रश्च वृषे कुम्भे पलाः प्रोक्तास्तु षोडश ॥ ८ ॥

मिथुने मकरे पंच घटिकाः विशिखाः पलम् ।  
 पंच कर्के च चापे च शशिवेदाः पलाः स्मृताः ॥ ६ ॥  
 कन्यापंच तुले पंच पलाश्चन्द्रस्तथाग्नये ।  
 घटिकाः पंच सिंहेऽलौ द्वयं वेदाः पलाः स्मृताः ॥ १० ॥  
 एवं लग्नप्रमाणं स्यात्कथितं पूर्वसूरिभिः ॥ ११ ॥

टीका—मीन, मेष, ३।४५ वृष, कुम्भ ४।१६ मिथुन, मकर ५।३ कर्क धन ५।४१ कन्या, तुला ५।३१ और सिंह, वृश्चिक ५।४२ इस प्रकार लग्न प्रमाण पंडित लोग कहते हैं ॥ ८-११ ॥

ग्रहदानम्

सूर्ये धेनुश्चताम्रं च गोधूमं रक्तचन्दनम् ।  
 चंद्रे शंखश्चन्दनं च वस्त्रं चासिततंडुलाः ॥ १२ ॥  
 कुजे वृषः प्रदातव्यो रक्तवस्त्रं गुडौदनम् ।  
 बुधे कर्पूरमुद्गाश्च हरिद्राश्च हरिन्मणिः ॥ १३ ॥  
 पीतवस्त्रद्वयं जीवे हरिद्रा चणकानि च ।  
 अश्वःशुक्रे सितो देयः शुक्लधान्यानि यानि च ॥ १४ ॥  
 शनौ तैलं तिला देयाः कृष्णागोदानमुत्तमम् ।  
 राहौ च महिषी आगो माषाश्च तिलसर्पपाः ॥ १५ ॥  
 अजमेषौ च दातव्यौ केतौ धान्यञ्च मिश्रितम् ।  
 स्वर्णगोविप्रपूजाभिः सर्वेषां शांतिरुत्तमा ॥ १६ ॥

टीका—सूर्य को लाल गौ, तांबा, गेहूँ और रक्त चन्दन ।  
 चन्द्र को शंख, चंदन, श्वेत वस्त्र, श्वेत चावल । भौम को वृषभ,



रक्त वस्त्र, गुड़ौदन । बुध को, करूर, मूँग, हरदी, हरितमणि ।  
 बृहस्पति को दो पीतवस्त्र, हरदी, चना की दाल । शुक्र को  
 श्वेतघोड़ा, श्वेत धान्य । शनि को तैल, तिल, काली गौ ।  
 राहुको भैंस, बकरा, उड़द, तिल, सरसों । केतुका बजरा, मेढ़ा,  
 सतजा, सोना, गेहूँ और ब्राह्मण पूजा इत्यादिक सब ग्रहों के  
 दोष को शान्त करते हैं ॥ १२-१६ ॥

द्वादशराशिगतगुरुफलम्

मेघे गुरौ सुभिक्षं च सुवृष्टिश्च सुखी नरः ।  
 वृषे गुरौ स्वल्पवृष्टिः प्रजापीडा च विग्रहः ॥१७॥  
 अनावृष्टिः प्रजानाशो वैरं च मिथुने गुरौ ।  
 कर्के गुरौ महावृष्टिः देशभंगो महर्घता ॥१८॥  
 सिंहे गुरौ सुभिक्षं च सुवृष्टिश्च प्रजासुखम् ।  
 कन्यागुरौ रोगपीडा सुभिक्षं सस्यजन्म च ॥१९॥  
 तुले गुरौ सस्यनाशो बहुक्षीरं प्रजायते ।  
 अलौ जीवे च दुर्भिक्षं राजचौरोरगाद्वयम् ॥२०॥  
 चापे गुरौ शुभा वृष्टिः शुभं सस्यमहर्घता ।  
 दुर्भिक्षं मकरे जीवे राज्ययुद्धं पशुक्षयः ॥२१॥  
 कुम्भे गुरौ च दुर्भिक्षं धातुमूलमहर्घता ।  
 दुर्भिक्षं दक्षिणे देशे भूषे जीवे न चान्यगे ॥२२॥

टीका—जब मेघ राशि में बृहस्पति आवे तब सुभिक्ष हो वर्षा  
 अधिक हो, मनुष्य सुखी रहें और वृषराशि में बृहस्पति आवे तो  
 वर्षा कम हो, प्रजा को पीडा हो, आपस में लड़ाई हो, मिथुन

में बृहस्पति आवें तब वर्षा बिलकुल न हो, सिंह के बृहस्पति होवें तो सुभिक्ष करें, वर्षा अधिक हो, प्रजा सुखी रहे कन्या के गुरु होवे तो रोगपीडा धान्योत्पत्ति और अन्न सस्ता हो, तुला के गुरु खेती का नाश और दूध बहुत करे, वृश्चिकके गुरु राजा, चोर सर्प-भय, तथा दुर्भिक्ष करे, धन के गुरु वर्षा खेती बहुत करें, रस महंगा करें, मकर के महादुर्भिक्ष, राजाओं में युद्ध और पशुओं का नाश करे, कुम्भ के दुर्भिक्ष, धातु महंगी करे तथा मीन के गुरु दक्षिण देश में सुभिक्ष करे अन्य देश में नहीं ॥ १७-२२ ॥

माससंक्रांतिवृष्टिफलम्

मार्गकार्तिकसंक्रान्तौ वृष्टिर्वर्षति मध्यमा ।

पौषे माघे नृणां सौख्यं सस्यपूर्णं वसुंधरा ॥२३॥

चैत्रफाल्गुनवैशाखज्येष्ठानां संक्रमे घनः ।

यदि वर्षति सर्वत्र सुभिन्नं च प्रजासुखम् ॥२४॥

आषाढे संक्रमे वृष्टौ व्याधिश्च श्रावणे सुखम् ।

भाद्रे च बहवो रागाः सुखं सर्वत्र चाश्विने ॥२५॥

इत्येषामपि संक्रान्तौ वृष्टिश्चापि शुभाशुभम् ।

टीका-जो कार्तिक मार्गशीर्ष की संक्रांतिको वृष्टि हो तो वर्षा ऋतु में मध्यम वर्षा होवे, पौष-माघमें संक्रांतिके दिन सेव वरसे तो पृथ्वी पर प्रजा सुखी रहे और सब अन्न की अधिक उत्पत्ति हो, फाल्गुन चैत-वैशाख और ज्येष्ठ की संक्रांति में मेघ वरसे तो सर्वत्र सुभिक्ष रहे और प्रजा सुखी रहे । आषाढ में संक्रांति के दिन जल वरसे तो प्रजा में रोग अधिक हो । श्रावण में संक्रांति के दिन जल वरसे तो प्रजाओं को अधिक सुख हो



को अधिक सुख हो, जो भादों में संक्रान्ति के दिन मेघ वरसै तो अनेक रोग हों और जो कुवार में संक्रान्ति को जल वरसै तो आनन्द हो, यही बारहों मास के संक्रान्ति की वृष्टि का शुभाशुभ फल जानना ॥ २३-२५ ॥

शुक्लपञ्चमि फलम्

चैत्रस्य शुक्लपञ्चम्यां पूर्वे वायुर्धनागमः ॥२६॥  
भाद्रे गुणत्रयं मूल्यं रसानां जायते तदा ॥२७॥  
ज्येष्ठस्य शुक्लपञ्चम्यां वृष्टिः पश्चिममारुतः ।

तदा चतुर्गुणं मूल्यं धान्यानां कार्तिके भवेत् ॥२८॥  
श्रावणे शुक्लपञ्चम्यां वृष्टिर्वाति दिनद्वयम् ।

दक्षिणे पश्चिमे ज्ञेयं दुर्भिक्षं धान्यसंचयम् ॥२९॥

टीका-अब शुक्ल पंचमी का फल कहते हैं । जो चैत्र शुक्ल पञ्चमी को वायु पूर्व चले और मेघ वरसै तो भादों में रस गोरस, घृत, तिगुने मोल बिके, जो ज्येष्ठ शुक्ल पंचमी को पश्चिम पवन चले और मेघ वरसै तो कार्तिक में अन्न चौगुने मोल बिके, जो श्रावण शुक्ल पंचमी को दो दिन पवन चले, मेघ वरसै तो दक्षिण पश्चिम में अकाल, धान्यक्षय हो ॥ २६-२९ ॥

नक्षत्रवृष्टि फलम्

चित्रास्वातिविशाखायां श्रवणे चैव वर्षति ।

सर्वरत्नं परित्यज्य कर्तव्यश्चान्नसंचयः ॥३०॥

टीका-जो चित्रा स्वाती विशाखा और श्रवण नक्षत्र में वर्षा हो तो रत्नको भी छोड़कर सबको अन्नका संचय करना शुभ है ।

वायुपरीक्षा

आषाढे पूर्णिमायां चेदनिलो वाति नैऋते ।

अनावृष्टिर्धान्यनाशो जलं कूपे न दृश्यते ॥३१॥

आषाढे पूर्णिमायां तु वायव्ये यदि मारुतः ।

धर्मसिद्धिस्तदा लोके धनधान्यं गृहे गृहे ॥३२॥

आषाढे पूर्णिमायां चेदीशाने वाति मारुतः ।

सुखिनो हि तदा लोका गीतवाद्यपरायणाः ॥३३॥

वह्निकोणो वह्निभोतिः पश्चिमे च जलाद्भयम् ।

अन्यत्र यदि वायुः स्यात्सुभिन्नं जायते तदा ॥३४॥

टीका—आषाढ़ की पूर्णिमा को नैऋत्य कोण में पवन बहे तो वर्षा थोड़ी हो और धान्य भी थोड़ा उपजै तथा कूप सूख जाय, आषाढ़ पौर्णिमा को वायव्य में पवन चले तो लोक धर्मशील रहें, धन धान्य की वृद्धि हो, ईशान में वायु बहे तो लोक आनन्द से रहें और जो आग्नेय में पवन चले तो अग्नि का भय हो, पश्चिम में पवन चले तो जल का भय हो और उत्तर पूर्व, दक्षिण दिशाओं की हवा चले तो सुभिक्ष होवे ॥ ३१-३६ ॥

उत्पाताः

सर्वमासे पूर्णिमायां भूमिकम्पो यदा भवेत् ।

उल्कातारावज्रपातैर्ग्रसितौ शशिसूर्यकौ ॥३५॥

धम्रकेतुः शक्रचापे ग्रहणो बहुधा तथा ।

तदाऽसौ सर्ववस्तूनां जायते च महर्घता ॥३६॥

टीका—यदि सभी मास की पौर्णिमा को भूमिकम्प, दिनमें तारा टूटे, उल्कापात, वज्रघात और चन्द्र, सूर्य ग्रह वा केतु उदय वा इन्द्र धनुष उदय हो तो सब वस्तु महँगी होगी, ग्रहण में हो तो अवश्य महँगी होगी ॥ ३५-३६ ॥



आषाढ द्वतीयादिदिनचतुष्टयफलम् ।

आषाढे शुक्लपंचम्यां द्वितीयायां च वर्षति ।  
 यदि मेघस्तदा वृष्टिः श्रावणे जायते ध्रुवम् ॥३७॥  
 तृतीयायां पूर्ववायुः पूर्वं याति च वारिदः ।  
 यदि व्योम्नि तदा भाद्रे वर्षन्ति विपुलं जलम् ॥३८॥  
 चतुर्थ्यां दक्षिणो वायुर्मेघः पूर्वं च गच्छति ।  
 आश्विने च यदा माघे वृष्टिर्भवति निश्चयम् ॥३९॥

टीका--जो आषाढ शुक्ल पञ्चमी वा द्वितीया को मेघ बरसे तो श्रावण में विशेष वर्षा हो । ज्येष्ठ तीज को पूर्व को पवन ग्रह कर मेघ पूर्व आकाश में जावे तो भादों में जल ज्यादा बरसे, जो चौथ को पवन दक्षिण दिशा में चले और पूर्व को मेघ जाय तो कुवार में विशेष वर्षा हो ॥ ३८-३९ ॥

वायुवर्षाज्ञानम्

पंचम्यामुत्तरे वायुर्दृश्यते च यदा बुधैः ।  
 तदा च कार्तिके मासे वृष्टिर्भवति भूयसी ॥४०॥  
 चतुष्टये च दिवसे यदा वर्षति वारिदः ।  
 अतिवृष्ट्या च दुर्भिक्षं जायते नात्र संशयः ॥४१॥  
 दिनद्वयं यदा वाता वान्ति दक्षिणपश्चिमे ।  
 तदा नश्यन्ति धान्यानि दुर्भिक्षं च प्रजायते ॥४२॥  
 तृतीयायां च पंचम्यां वायुः पूर्वोत्तरे यदि ।  
 तदा धान्यानि जायन्ते सर्वं कृतयुगोपमम् ॥४३॥

टीका—जो आपाढ़ शुक्ल पञ्चमी को उत्तर पवन बहे तो कार्तिक में अधिक वर्षा हो जो आपाढ़ की २।३ ४।५ को बरसे तो पृथ्वी पर अतिवृष्टि से दुर्भिक्ष पड़े, जो आपाढ़ सुदी २।३ को पवन दक्षिण से पश्चिम को जावे तो धान्य का नाश हो और दुर्भिक्ष पड़े, जो आपाढ़ सुदी ३।५ को पूरव वा उत्तर का पवन चले तो बहुत अन्न उपजे और सतयुग के समान सर्वत्र हो जाय ॥ ४०--४३ ॥

पौषमासे मूलभरणीफलम्

पौषे मूलभरण्यन्तं चन्द्रे वारे च गर्जति ।

आर्द्रादितो विशाखांते सूर्यक्षेत्रे च न वर्षति ॥४४॥

टीका—जो पौष मास में मूल भरणी पर्यन्त चन्द्र नक्षत्र में बादल न हो तो आर्द्रा से विशाखा तक सूर्य नक्षत्र में वर्षा न होवे ॥ ४४ ॥

\* परस्परक्षेत्रस्थितग्रह फलम्

यदि तिष्ठति भौमस्य क्षेत्रे कोऽपि ग्रहस्तदा ।

ऋतुमासास्तु धान्यानां जायते च महर्घता ॥४५॥

शुक्रक्षेत्रे कुजे मासे द्वये नूनं महर्घता ।

चन्द्रे च दिननाथे च सर्वरोगः शुभं तथा ॥४६॥

शनौ राहौ सर्वधान्यं समर्घं राजविग्रहम् ।

बुधक्षेत्रे रवौ चन्द्रे विरोधः सर्वभूभुजाम् ॥४७॥

उत्पत्तिस्तु सुधान्यानां पंचमासे प्रजायते ।

सुभिच्छं तु महावृष्टिः पशूनां तृणसंकुलम् ॥४८॥

टीका—यदि मंगल के क्षेत्र में कोई ग्रह हो तो ६ मास तक



चावल मँहंगा रहे, जो शुक्र के क्षेत्र में भौम का उदय हो तो २ मास मँहंगा रहे, जो चन्द्रमा अथवा सूर्य का उदय हो तो रोग करे, परन्तु शुभ रहे। जो शनि वा राहु उदय हो तो सर्वान्न मँहंगा और राजविग्रह करे। जो बुध के क्षेत्र में चन्द्र, सूर्य उदय हों तो राजाओं में विरोध करे, पाँच मास में धान्य उपजे, अति वृष्टि करे और पशुओं को तृण बहुत होवे ॥ ४५-४८ ॥

शुक्रक्षेत्रे बुधश्चन्द्रे चन्द्रक्षेत्रे भृगोः सुतः ।

पाखण्डिनां भवेद् वृद्धिर्धान्यानां च महर्घता ॥४६॥

बुधक्षेत्रे शनौ चन्द्रे सप्तधान्यमहर्घता ।

शुक्रक्षेत्रे गुरौ भौमे कार्पासादिमर्घता ॥५०॥

भौमक्षेत्रे शनौ राहुस्ताम्रादीनां महर्घता ।

पशुनाशो धान्यवृद्धिर्गुडादीनां महर्घता ॥५१॥

गुरुक्षेत्रे शनौ राहौ स्वल्पवृष्टिस्तृणक्षयः ॥५२॥

भौमे राज्ञां विरोधः स्याद् बुधे वृष्टिश्च भूयसी ।

तृणवृद्धिः पशूनां च सौख्यं धान्यवहूनि च ॥५३॥

भौमक्षेत्रे यदा संति राहुभौमार्कभार्गवाः ।

षण्मासं गुडकार्पासघृतक्षीरमहर्घता ॥५४॥

मन्दक्षेत्रे यदा सन्ति मंदराहुबुधास्तदा ।

चतुष्पदानां नाशश्च द्विपदानां च जायते ॥५५॥

टीका—जो शुक्र की राशि में बुध व चन्द्रमा हों और चन्द्रमा की राशि में शुक्र हो तो पाखण्ड बड़े और अन्न मँहंगा

हो, बुध के क्षेत्रमें शनि वा चन्द्रमा हो तो सातों अन्न महंगा विकें, शुक्र के घर में गुरु वा भौम हो तो कपासादि नीरस वस्तुएँ महगी विकें, जो भौम के घर में शनि वा राहु हो तो ताम्रादि धातु महंगी विकें, शनि के घर में शनि वा राहु तो सुमिश्र हो । जो सूर्य, चन्द्र के घर में शनि राहु हों तो पशु मरें और गुड़ा-दिक महंगे होवें और धान्य अधिक हो, जो गुरु के घर में शनि राहु हों तो स्वल्प वृष्टि और तृणादिकों का क्षय हो, गुरु के क्षेत्र में मंगल हो तो राजाओं में विरोध हो । जो गुरु के घर में बुध हो तो वर्षा अधिक, तृण बहुत और पशुओंको सुख हो और धान्य विशेष हों, भौम के घर में राहु, भौम, सूर्य वा शुक्र हों तो ६ मास तक गुड़, कपास, घृत और दुग्ध महंगे रहें और जो शनि क्षेत्र में राहु, शनिश्चर और बुध ये ग्रह स्थित हों तो जानवरों का और द्विपद जो पक्षी तथा मनुष्य हैं उनका नाश होवे ॥

भौमक्षेत्रे यदा सन्ति शुक्रमन्दनिशाकराः ।

तदा मुक्तापशूनां च शंखस्य च महर्घता ॥५६॥

भौमक्षेत्रे भार्गवश्च धान्यानां च महर्घता ।

शनिक्षेत्रे रवौ चद्रे वस्त्राणां च महर्घता ॥५७॥

शुक्रक्षेत्रे गुरुर्भौमः प्रजापीडा प्रजायते ।

ग्रहराशिसमायोगे फलमेतत्प्रकीर्तितम् ॥५८॥

टीका—जो भौम-क्षेत्र में शुक्र, शनि और चन्द्रमा रहें तो क्रम से मोती, शंख और पशु महंगे हो जायँ । जो भौम-क्षेत्र में शुक्र हो तो अन्न महंगा हो, शनि-क्षेत्र में रवि, चन्द्र के उदय से



वस्त्र मँहेंगे हों उसमें भी अरुण, पीत अवश्य हो । जो शुक्र क्षेत्र में गुरु वा भौम उदय करे तो प्रजा पीड़ा हो । उक्त ग्रह राशि का योग पड़े तो ऐसे फल कहे ॥ ५६-५८ ॥

ग्रहाणामुदयफलानि

चन्द्रोदये कुजक्षेत्रे तुषधान्यस्य वृद्धये ।  
 चन्द्रोदये भृगुक्षेत्रे स्वल्पवृद्धिः क्रयाणके ॥५९॥  
 प्रजापीडा बुधक्षेत्रे सोमशुक्रोदये भवेत् ।  
 रविक्षेत्रे तुलावृद्धिः शनिसोभृगूदये ॥६०॥  
 चन्द्रक्षेत्रे शुक्रचन्द्रबुधानामुदये भवेत् ।  
 षण्मासं स्याच्च दुर्भिक्षमतिवृष्टिश्च जायते ॥६१॥  
 उदितौ च बुधक्षेत्रे यदि राहुशनैश्चरौ ।  
 पशुक्षयः प्रजापीडा धान्यानां च महर्घता ॥६२॥  
 शुक्रक्षेत्रे सोमसूर्ये सूर्यपुत्रादयो यदा ।  
 उदयास्तमहापीडा जायते च महर्घता ॥६३॥

टीका-जो भौम क्षेत्र में चन्द्रोदय हो तो धान्य वृद्धि करे शुक्र के क्षेत्र में चन्द्रोदय हो तो खरीद करने वाले को स्वल्प वृद्धि करे । बुध के क्षेत्र में चन्द्र व शुक्र उदय हो तो प्रजा को पीड़ा करे । जो रवि क्षेत्र में शनि वा चन्द्र उदय हो तो तौल बड़े । जो चन्द्र के क्षेत्र में शुक्र, चन्द्र-बुध उदय करें तो छः मास दुर्भिक्ष रहे और वर्षा अधिक हो । जो बुध के क्षेत्र में राहु और शनैश्चर का उदय हो तो पशुओं का क्षय हो, प्रजा को पीड़ा हो, अन्न मँहंगा हो । शुक्र के क्षेत्र में बुध, सूर्य और शनि उदय हो तो उदय से अस्त पर्यन्त संसार में पीड़ा हो और अन्न मँहंगा होवे ॥ ५९-६३ ॥

यदोदयः शनिक्षेत्रे भौमभास्करयोर्भवेत् ।  
 घृतानां च तदा वृद्धिर्गुडानां च महर्घता ॥६४॥  
 यदासावुदितश्चैव शनिक्षेत्रे शनैश्चरः ।  
 तदास्यात्तृणकाष्ठानां लोहानां च महर्घता ॥६५॥

टीका—जो शनि के क्षेत्र में सूर्य, भौम का उदय हो तो घृत की वृद्धि हो, रक्त वस्त्र तथा मांगलिक वस्तु आदि सभी सस्ती हो जायें तथा गुड़ादि महँगे हों । जो शनि क्षेत्र में शनि का उदय हो तो तृण, काष्ठ, लोहा महँगे हों ॥ ६४-६५ ॥

नक्षत्रगतगहफलम्

आर्द्रायान्तु यदा भौमः शनिरग्नेस्तथा भवेत् ।  
 बुधो भाद्रे च दुर्भिक्षं भृगुनन्दने ॥६६॥  
 गुरुर्यदा विशाखायां तदा धान्यमहर्घता ।  
 मंगलं वर्षकाले च शनौ सर्वत्र मंगलम् ॥६७॥  
 सुभिक्षं चानुराधायां यदि कोऽपि ग्रहो भवेत् ।  
 कल्याणं च सुभिक्षां चाश्लेषायां संस्थिते गुरौ ॥६८॥  
 कार्पासा बहवो मंदे भौमे कटकपीडनम् ।  
 बुधे तिलाश्च माषाश्च महर्घा वर्षकालतः ॥६९॥  
 सूर्ये सर्वाणि धान्यानि महर्घाणि भवन्ति च ।  
 शुक्रे च महती वर्षाः सस्यानि सकलानि च ॥७०॥



टीका-जो आर्द्रा का भौम व कृत्तिका का शनि और पूर्व-  
भाद्रपद का बुध हो तो दुर्भिक्ष करे और जो शुक्र हो तो सस्ती  
हो ॥६६॥ जो विशाखा के गुरु हों तो अन्न महंगा हो परन्तु वर्ष  
पर्यन्त मंगल रहे, जो शनि हो तो सर्वत्र मंगल हो और मंगल कार्य  
होवे ॥ ६७ ॥ जो अनुराधा का कोई ग्रह हो तो सुभिक्ष हो और  
जो आश्लेषा का गुरु हो तो प्रजा का कल्याण हो और अन्न की  
सस्ती हो ॥६८॥ आश्लेषा के शनि हों तो कपास बहुत हो, जो  
भौम हो तो फौज को पीड़ा करे, आश्लेषा के बुध हों तो वर्ष तक  
तिल और उड़द महँगे हो जाँय, जो आश्लेषा के सूर्य हों तो सब  
अन्न महँगे हों और जो आश्लेषा के शुक्र हों तो वर्षा बहुत हो  
और सब प्रकार के अन्न बहुत उत्पन्न होवें ॥ ६९-७० ॥

मूलादिनक्षत्रगतगुरुफलम्

मूले कुलिथमुद्गानां गुरौ वृद्धिः प्रजायते ।  
भौमे मुद्गस्य नाश स्याद् बुधे च सर्वसंपदः ॥७१॥  
पूर्वाषाढागते भौमे पीडा च पशुपक्षिणाम् ।  
केतौ तत्रगते मंदे जायते च महर्घता ॥७२॥  
उत्तराषाढके जीवे गुडानां च महर्घता ।  
भौमे च पशुजातानां जायते हि महर्घता ॥७३॥  
अभिजिन्नामनक्षत्रे यदा छायासुतो भवेत् ।  
सर्वसस्यानि जायन्ते सुभिन्नं च कुजे तथा ॥७४॥  
श्रवणे च यदा जीवस्तदा स्युः सर्वसंपदः ।  
बुधे राजसुतत्रासः शनौ भूरीक्षुकारकः ॥७५॥

कृत्तिकायां च रोहिण्यां यदा जीवो हितिष्ठति ।  
 मध्यमानि च सस्यानि तदा वृष्टिश्च मध्यमा ॥७६॥  
 आर्द्रायां मृगशीर्षे च यदा वाचस्पतिः स्थितिः ।  
 दुर्भिक्षं स्यादनावृष्टिः प्रजानां च सदाऽशिवम् ॥७७॥  
 फाल्गुनीद्वयहस्तेषु मघायां च यदा गुरुः ।  
 सुभिक्षं च सुवृष्टिश्च प्रजानां स्यादरोगता ॥७८॥

टीका-जो मूल का गुरु हो तो कुरुत्थि और मूँग बहुत हो  
 जो भौम हो तो मूँग का नाश हो, बुध हो तो सर्व संपदा हो  
 ॥७१॥ जो पूर्वाषाढा का भौम हो तो पशुपक्षियों को अति पीड़ा  
 हो, केतु हो तो सर्व वस्तु मँगा करे और तैसेही शनैश्चर करे  
 ॥ ७२ ॥ जो उत्तराषाढा का गुरु हो तो गुड़ मँगा हो, तो  
 पशु मँगे होवें और जो अभिजित् का शनि वा भौम हो तो सर्वान्न  
 उपजे और सुभिक्ष हो । ७३-७४ ॥ श्रवण का गुरु हो तो सब  
 सम्पदा करे, बुध हो तो राजपुत्र को पीड़ा करे, शनि हो तो ऊख का  
 विनाश हो ॥ ७५ ॥ जो कृत्तिका वा रोहिणी का गुरु हो तो  
 अन्नमध्य उपजे और वर्षा मध्यम हो ॥ ७६ ॥ जो आर्द्रा तथा  
 मृगशिरा के गुरु हो तो दुर्भिक्ष हो, थोड़ी वर्षा और प्रजा सदा  
 कल्याण रहित हो ॥ ७७ ॥ मघा, पूर्वा उत्तराफाल्गुनी और  
 हस्त इन नक्षत्रों पर गुरु हो तो सुभिक्ष और आरोग्यता होवे ॥७८॥

चित्रास्वात्योर्यदा जीवस्तदा चित्रपयोधराः ।  
 विचित्राणि भवन्त्येव सस्यानि च क्वचित्क्वचित् ॥७९॥  
 विशाखामैत्रयोजीवे धान्यं वर्षा च मध्यमा ।



ज्येष्ठामूले मासयुग्मं वृष्टिर्मासद्वयेन च ॥८०॥  
 पूर्वाषाढोत्तराषाढस्थितो यदि बृहस्पतिः ।  
 तदारोग्यं सुभिन्नं च सुवृष्टिश्च प्रजायते ॥८१॥  
 अनावृष्टिश्च दुर्भिन्नं रेवत्यां संस्थिते गुरौ ।  
 धनिष्ठायां च शुक्रेऽपि पीडा भवति हस्तिनाम् ॥८२॥

टीका-चित्रा तथा स्वाती का गुरु हो तो विचित्र वर्षा हो, कहीं २ विचित्र पृथ्वी फूले फले और धान्य कहीं २ हो ॥७९॥ विशाखा और अनुराधा का गुरु हो तो वर्षा और अन्न मध्यम रहे, ज्येष्ठा और मूल के गुरु में दो मास में वर्षा हो ॥ ८० ॥ पूर्वाषाढा तथा उत्तराषाढा के गुरु में प्रजा आरोग्य रहे, वर्षा अच्छी हो और सुभिक्ष रहे ॥८१॥ जो रेवती का गुरु हो तो वर्षा न हो तथा अन्न मँहगे होंगे, धनिष्ठा का शुक्र हो तो हाथियों को पीडा हो ॥ ८२ ॥

इति तृतीयप्रकरणं समाप्तम् ।

## चतुर्थप्रकरणं प्रारभ्यते

### तत्रादौ होडाचक्रम्

अब नक्षत्रों का विचार करते हैं । एक नक्षत्र के चार चरण होते हैं । जिस चरण में जन्म हो और उस चरण के आदि अक्षर से बालक तथा कन्या का नाम धरे, यथा :—

चू, चे, चो, ला, अश्विनी १ ली, लू, ले, लो, भरणी २ आ, ई, उ, ए, कृत्तिका ३ ओ, वा, वी, वू, रोहिणी ४ वे,

वो, का, की, मृगशिरा ५ कु, घ, ङ, छ, आर्द्रा ६ के, को, हा, ही, पुनर्वसु ७ हू, हे, हो, डा, पुष्य, ८ डी, इ, डे, डो, आश्लेषा ९ मा, मी, मू, मे, मघा १० मो, टा, टी, टू, पूर्वाफा० ११ टे, टो, पा, पी, उत्तराफा० १२ पू, प ण, ठ, हस्त १३, पे, पो, रा, री, चित्रा १४ रू, रे, रो, ता, स्वाती १५ ती, तू, ते, तो, विशाखा १६, ना, नी, नू, ने, अनुराधा १७ नो, या, यी, यू, ज्येष्ठा १८ ये, यो, भा, भी, मूल १९ भू, धा, फा, ढा, पूर्वाषाढा २० भे, भो, जा, जी, उत्तराषाढा २१ जू, जे, जो, खा, अभिजित् २२ खी, खू, खे, खो, श्रवण २३, गा, गी, गू, गे धनिष्ठा २४ गो, सा, सी, सू, शतभिषा २५ से, सो, दा, दी, पूर्वाभाद्रपदा २६ दू, थ, ऋ, ज, उत्तराभाद्रपदा २७ दे, दो, चा, ची रेवती ॥ २८ ॥

अथ सपादनक्षत्रद्वयतो राशिक्रमः

सप्तविंशतिभानां च नवभिर्नवभिर्नवैः ॥

अश्विनीप्रमुखानां च मेषाद्या राशयः स्मृताः ॥१॥

अश्विनी, भरणी, कृत्तिका पादं मेषः १,

कृत्तिकायास्त्रयः पादा रोहिणीमृगशिरोर्द्धं वृषः २,

मृगशिरोर्द्धमार्द्रापुनर्वसुपादत्रयं मिथुनः ३,

पुनर्वसोः पादमेकं, पुष्याश्लेषान्तं कर्कः ४,

मघाचपूर्वाफलगुन्युत्तराफलगुन्योः पादमेकं सिंहः ५,

उत्तराफलगुन्याः त्रयः पादाः हस्तचित्रार्द्धं कन्या ६,

चित्रार्द्धं स्वातिविशाखापादत्रयं तुला ७, विशाखा



पादमेकमनुराधाज्येष्ठान्तं वृश्चिकः ८, मूलं च पूर्वा-  
षाढोत्तराषाढापादमेकं धनुः ६, उत्तरायास्त्रयः पादा  
अभिजिच्छ्रवणधनिष्ठाद्धं मकरः १०, धनिष्ठाद्धं  
शतभिषापूर्वाभाद्रपदारेवत्यन्तं मीनः १२ ॥  
तनुर्धनं सुखं मित्रं पुत्रशत्रुकलत्रकाः ।  
मरणं धर्मकर्माव्यया द्वादश राशयः ॥ २ ॥

इति सपादनक्षत्रराशिक्रमः

द्वादशभावाः

| १ | २  | ३   | ४      | ५     | ६     | ७     | ८      | ९    | १०   | ११ | १२   |
|---|----|-----|--------|-------|-------|-------|--------|------|------|----|------|
| ॥ | धन | सुख | सुहृद् | पुत्र | शत्रु | कलत्र | मृत्यु | धर्म | कर्म | आय | व्यय |

ग्रहाणां विशोपकादृष्टिः

तृतीये दशमे पंच नव पंचमयोर्दश ।  
दशपंचाष्टमे तुर्ये सप्तमे विंशतिस्तथा ॥ ३ ॥  
विश्वास्तु ग्रहदृष्टीनामेषु स्थानेषु प्रोच्यते ।  
पंचविंशोपकं प्रोक्तं पादमेकं क्रमाद् बुधैः ।  
आयव्यये धने षष्ठे लग्ने खेटो न दृश्यते ॥ ४ ॥

टीका-अब सब ग्रहों की दृष्टि कहते हैं । तीसरे, दशवें पर  
पाँच विश्वा पाददृष्टि को १ चरण । नवें, पाँचवें पर १० विश्वे  
का अर्धदृष्टि २ चरण जाने, चौथे, आठवें पर १५ विश्वा का  
पाददृष्टि ३ चरण जाने तथा सातवें पर बीसों विश्वा का सम्पूर्ण

४ चरण से देखते हैं । आय ११ व्यय १२, धन २, लग्न १, पण्ड ६, इन स्थानों में कोई ग्रह की दृष्टि नहीं होती है ॥४॥

तृतीये दशमे मन्दो नवमे पंचमे गुरुः ।

विंशति वीक्ष्यते विश्वांश्चतुर्थे चाष्टमे कुजः ॥ ५ ॥

टीका—तीसरे ३, दशम में १०, शनि । नव ९ में पाँच ५ में गुरु और चौथे ४ आठ ८ में मंगल ये इस प्रकार तीनों ग्रह बीस विश्वा संपूर्ण दृष्टि जहाँ तहाँ देखते हैं ॥ ५ ॥

रविवारयुक्तामावास्याफलम्

रविवारेण संयुक्ता यदा स्यान्माघज्येष्ठयोः ।

अमावास्या तदा पृथ्वी रुण्डमुण्डा च जायते ॥ ६ ॥

टीका—माघ और ज्येष्ठ की अमावस्या को जो रविवार पड़े तो रुण्ड मुण्ड पृथ्वी में परे अर्थात् पृथ्वी में बहुत लोग मरें ॥६॥

दिनरात्रिप्रमाणम्

अयनात् त्रिगुणा मासा एक पंचाशता युताः ।

दलिता घटिका ज्ञेयाः पलास्त्रैगुण्यवासराः ॥ ७ ॥

टीका—जिस दिन मकर का अयन लगे उसने वर्तमान दिन तक जो मास पूरा बीता हो उसे तिगुना करे, फिर ५१ उसमें जोड़ कर आधा करे बाकी हो वही घड़ी जाने । और महीनों से अधिक जो दिन बढ़े तो तिगुना करे जो अङ्क हो उतने पल उन घड़ियों में जोड़ कर उसी दिनका दिन प्रमाण शुद्ध इस प्रकार जाने और कर्क के अयन के दिन मीन से इस प्रकार गणित से रात्रि प्रमाण जाने, परन्तु उत्तरायण के सूर्य में दिन बढ़ता है



इसलिये दिन प्रमाण और दक्षिणायन में रात्रि बढ़ती है इसलिये रात्रि प्रमाण जाने ॥ ७ ॥

उदाहरण—सु० ८ को देखना है । पूस वदी २ को मकर का अयन हुआ, वर्तमान मास तक ४ मास गत हुआ, ४ को ३ से गुणा तो १२ हुआ, इसमें ५१ जोड़ा तो ६३ हुआ, इसका आधा ३१॥ दंड दिन मान उस दिनका है और ४ मास से ६ तिथि ज्यादा है, इसको ३ से गुणा १८ हुआ, यही पल हुआ अर्थात् ३१ घ० १८ पल दिनमान हुआ ॥ ८ ॥

त्रयोदशदिनात्मकपक्षफलम्

एकपक्षे यदा यान्ति तिथयश्च त्रयोदश ।

त्रयस्तत्र क्षयं यान्ति वाजिनो मनुजा गजाः ॥ ८ ॥

टीका—जो एक पक्ष में तरह १३ तिथि हों तो मनुष्यों का नाश करे और घोड़े तथा हाथियों का क्षय करे । यह त्रयोदश दिन का पक्ष तीनों योनि को निषिद्ध है ॥ ८ ॥

वह्निचक्रम्

सूर्ययुक्ताच्च नक्षत्राद् दिनभं च त्रयं त्रयम् ।

आदित्यश्च बुधःशुक्रःशनिश्चन्द्रः कुजस्तथा ॥ ९ ॥

जीवो राहुश्च केतुश्च होमे क्रूरा न शोभनाः ।

आदित्ये तु भवेच्छोको बुधे सम्पत्तिरुत्तमा ॥ १० ॥

शुके चैव धनप्राप्तिः शनौ पीडा च जायते ।

चंद्रे भवति लाभश्च भौमे च बुधबंधनम् ॥ ११ ॥

गुरौ परमकल्याणं राहौ हानिश्च सर्वदा ।

केतौ च प्राणसंदेहो वह्निचक्रमुदाहृतम् ॥१२॥

टीका—जिस नक्षत्र के सूर्य हों वहाँ से तीन तीन नक्षत्र सूर्यादि ग्रहों को बाँट देवे। सूर्य, बुध, शुक्र, शनि, चन्द्र, मंगल बुध, गुरु, राहु, केतु इस क्रमसे दिनके नक्षत्रका विचार करे, जो क्रूरके भागमें पड़ें तो शोक प्रद है, बुध उत्तर संपत्ति, शुक्र धर्म-प्रद, शनि-पीड़ा, चन्द्र-लाभ भौम बन्धन करे, गुरु परम कल्याण, राहु-सदा हानि और केतु के भाग में प्राण हानि हो। इस प्रकार वह्निचक्र जाने (सूर्य के नक्षत्र से ४ से ९ तक १३ से १५ तक १९ से २१ तक श्रेष्ठ है।)

उदाहरण—कृत्तिका के सूर्य में और पुष्य नक्षत्रमें हवन करना है। कृत्तिका से पुष्य ६ हुआ अतः बुध के मुख में आहुति जायगी अतः श्रेष्ठ फल है ॥ ९-१२ ॥

होमकर्मण्यग्निचक्रम्

सैकातिथिर्वारयुताकृताप्ताशेषे गुणेऽग्नेभुवि वह्निवासः  
सौख्याय होमेशशियुग्मशेषे प्राणार्थनाशौदिविभूतलेच

टीका—अब होम कर्ममें अग्निचक्र कहते हैं। तिथि, वार, जोड़कर एक और मिलावे और चार का भाग दे, तीन (शून्य) बचे तो अग्नि पृथ्वी में जाने, वह सुखप्रद है और एक बचे तो स्वर्ग में जाने वह धन का नाश करे, दो बचे तो पाताल में जाने वह प्राण नाशक होता है।

उदाहरण—तिथि ६ में १ मिलाया तो ७ हुआ, इसमें गुरु-वार की संख्या ५ मिलाया तो १२ हुआ, इसमें ९ का भाग देने से ३ शेष बचा, भूमि में अग्निवास यह शुभ है ॥ १३ ॥



## संवत्सरनामानि

प्रभवो विभवः शुक्लः प्रमोदोऽथ प्रजापतिः ।  
 अंगिराः श्रीमुखोभावो युवा धाता तथेश्वरः ॥१४॥  
 बहुधान्यः प्रमाथी च विक्रमो वृषभस्तथा ।  
 चित्रभानुः सुभानुश्च तारणः पार्थिवो व्ययः ॥१५॥  
 ब्रह्मविंशतिरित्येको सृष्टिरत्र प्रजायते ।  
 सर्वजित्सर्वधारी च विरोधी विकृतिस्तथा ॥१६॥  
 खरो नन्दननामा च विजयश्च जयोऽपरः ।  
 मन्मथो दुर्मुखश्चैव हेमलम्बीविलम्बिकौ ॥१७॥  
 विकारी शर्वरी चाथ प्लवश्च शुभकृताथा ।  
 शोभनश्च तथा क्रोधी विश्वावसुस्तथापरः ॥१८॥  
 पराभवाख्यो ह्यपरो विष्णोरित्येव विंशतिः ।  
 प्लवंगः कीलकः सौम्यस्तथा साधारणोऽपरः ॥१९॥  
 विरोधकृत्समाख्यातः परिधावी प्रमादकृत् ।  
 अ नंदो राक्षसश्चाथ नलश्च पिंगलस्तथा ॥२०॥  
 कालः सिद्धार्थिरौद्रौ च दुर्मतिर्दुन्दुभिस्तथा ।  
 अपरो रुधिरोद्गारी रक्ताक्षी क्रोधनस्तथा ॥२१॥  
 क्षयकृत्परतश्चान्यो रुद्रस्यापि तु विंशतिः ।  
 वत्सराः पष्टिराख्याता नामतुल्यफलप्रदाः ॥२२॥

टीका—प्रभव १ विभव २ शुक्ल ३ प्रमोद ४ प्रजापति ५  
 अङ्गिरा ६ आमुख ७ भाव ८ युवा ९ धाता १० ईश्वर ११  
 बहुधान्य १२ प्रमाथी १५ विक्रम १४ वृषभ १५ चित्रभानु  
 १६ सुभानु १७ तारण १८ पार्थिव १९ और व्यय २० इति  
 ब्रह्मविंशतिः ॥ सर्वजित् १ सर्वधारी २ विरोधी ३ विकृति  
 ४ खर ५ नन्दन ६ विजय ७ जय ८ मन्मथ ९ दुर्मुख १०  
 हेमलम्बी ११ विलम्बी १२ विकारी १३ शर्वरी १४ प्लव १५  
 शुभकृत् १६ शोभन १७ क्रोधी १८ विश्वावसु १९ और  
 पराभव २० ॥ इति विष्णुविंशतिः ॥ प्लवंग १ कीलक २  
 सौम्य ३ साधारण ४ विरोधकृत् ५ परिधावी ६ प्रमाथी ७  
 आनन्द ८ राक्षस ९ नल १० पिंगल ११ काल १२ सिद्धार्थ  
 १३ रौद्र १४ दुर्मति १५ दुन्दुभि १६ रुधिराद्गारी १७ रक्ता-  
 क्षी १८ क्रोधन १९ क्षय २० ॥ इति रुद्रविंशतिः । ये ६०  
 संवत्सर अपने नाम के अनुसारही फल देते हैं ॥

राशीशाः

मेषवृश्चिकयोर्भौमः शुक्रो वृषतुलाधिपः ।  
 बुधः कन्यामिथुनयोः पतिः कर्कस्य चन्द्रमा ॥२३॥  
 स्वामीज्यो मीनधनुषोः शनिर्मकरकुम्भयो ।  
 सिंहस्याधिपतिः सूर्यः कथितो गणकोत्तमैः ॥२४॥  
 कन्याराहुगृहं प्रोक्तं केतोश्च मिथुनं स्मृतम् ।  
 राहोर्नीचं धनुश्चैव केतोस्तस्माच्च सप्तमम् ॥२५॥

टीका—मेष, वृश्चिक, के स्वामी मंगल, वृष, तुला के शुक्र कन्या  
 मिथुन के बुध, कर्क के चन्द्रमा, मीन, धन के गुरु, मकर, कुम्भ



के शनि, सिंह के सूर्य, कन्या के राहु और मिथुन के स्वामी केतु हैं ॥ २३-२५ ॥

नक्षत्रज्ञानम्

कार्तिकाद्द्विगुणा मासा गताभिस्तिथिभिर्युताः।

सप्तविंशतिभिस्तष्टा दिनतारैकसंयुताः ॥२६॥

टीका-कार्तिक से गतमास तक गिनकर दूना करे और उसमें गत तिथि जोड़कर २७ का भाग देवे जो शेष बचे वही नक्षत्र जाने और अश्विनी से गिने ॥ २६ ॥

संक्रांतिक्रिया

वारे रूपं तिथौ रुद्रा घट्यां पंचदशैव च ।

एकत्रिंशत्पले दद्यात्सूर्यसंक्रमणं भवेत् ॥२७॥

टीका-अब संक्रान्ति क्रिया कहते हैं । वर्ष की संक्रांति के वार में एक जोड़े तिथियों में ११ जोड़े तथा घड़ियों में १५ जोड़े और पल में ३१ जोड़े ( विपल में ३० जोड़े )

उदाहरण-सं० १९९१ की मेष संक्रान्ति वैसाख के अमावस शुक्र के घ. २६-प. ५५ पर लगी । इसके वार ६ में १ मिलाया तिथि ३० में ११ घ. २६ में १५ पल ५५ में ३१ विपल में ३० तो सं. १९९२ की मेष संक्रान्तिका वारादि ७।११।२२।२६।३० हुआ, अर्थात् चै. शु ११ शनि के घ. ४२ प. २६. वि. ३० पर संक्रान्ति होगी । इस भाँति जहाँ संक्रान्ति बनानी होय वहाँ की संक्रान्ति में जोड़कर भाग देवे, वह दूसरे वर्ष की शुद्ध संक्रान्ति बन जायगी ॥ २७ ॥

शुक्रोदयनिर्ययः

सार्धाष्टमासे पूर्वस्मिन्नुदितो दृश्यते भृगुः ।  
 सार्धमासद्वयं सूर्ये मंडले च ततो भवेत् ॥२८॥  
 उदितः पश्चिमे भागे नवमासं च वीक्ष्यते ।  
 दशाहं सूर्यमध्ये तु ततश्चास्तमितो भवेत् ॥२९॥  
 एकग्रामे पुरे वापि दुर्भिक्षे राजविग्रहे ।  
 तीर्थयात्राविवाहादौ शुक्रदोषो न विद्यते ॥३०॥

टीका—साढ़े आठ मास शुक्र पूर्व में उदय रहते हैं, अढ़ाई मास सूर्यमंडल में रहते हैं और इसके उपरान्त ९ मास पश्चिम में उदय होते हैं, फिर दस दिन सूर्य मंडल में, फिर पूर्व में उदय होते हैं । एक ग्राम में शुक्रदोष नहीं होता । दुर्भिक्ष, राजविग्रह, विवाह और तीर्थयात्रा में शुक्र दोष न गिने । यही शुक्रदोष का परिहार है ॥ २८-३० ॥

नक्षत्रसंज्ञा

दशार्द्राद्यास्त्रयस्तारा विशाखाद्या नपुंसकाः ।  
 तिस्रस्ततश्च मूलाद्याः पुरुषाश्च चतुर्दशाः ॥३१॥  
 स्त्री पुंसयोर्महावृष्टिः स्त्रीनपुंसकयोः क्वचित् ।  
 स्त्रीस्त्रियोःशीतलच्छाया योगः पुरुषयोर्न च ॥३२॥

टीका—आर्द्रादि १० नक्षत्र स्त्री संज्ञक हैं । विशाखादि ३ नपुंसक हैं । मूलादि १४ पुरुषसंज्ञक हैं । स्त्री पुरुष नक्षत्र में सूर्य आवे तो महावृष्टि हो । स्त्री नपुंसक में थोड़ा बरसै । स्त्री स्त्री में मेघ की छाया मात्र रहे और पुरुष पुरुष में वर्षा ही न होवे ।



नक्षत्रग्रहवर्षाभेदः

उदयास्तगतः शुक्रो बुधश्च वृष्टिकारकः ।  
 जलराशिस्थिते चन्द्रे पक्षान्ते संक्रमे तथा ॥३३॥  
 बुधः शुक्रसमीपस्थः करोत्येकार्णवा महीम् ।  
 तयोरन्तर्गतो भानुः समुद्रमपि शोषयेत् ॥३४॥  
 चलत्यंगारके वृष्टिस्त्रिधा वृष्टिः शनैश्चरे ।  
 वारिपूर्णा महीं कृत्वा पश्चात्संचरते गुरुः ॥३५॥  
 भानोरग्रे महीपुत्रो जलशोषः प्रजायते ।  
 भानोः पश्चाद्गरासूनुर्वृष्टिर्भवति भूयसी ॥३६॥

टीका-शुक्र, बुध के उदय अस्त में वर्षा हो और जलरा-  
 शिस्थ चन्द्रमा में, पक्ष के अन्त में संक्रांति पड़े तो वर्षा हो ॥३३॥  
 जो बुध, शुक्र समीप हों तो पृथ्वी भर में जल वरसै । जो उनके  
 बीच में सूर्य आ पड़े तो समुद्र जल को भी सोख लेय ॥ ३४ ॥  
 मंगल चले तो मेघ वरसै, शनि के उदय, अस्त तथा चलनेमें  
 जहाँ-तहाँ जल वरसै और उसके पीछे गुरु आवै तो पृथ्वी भर  
 में वरसै ॥ ३५ ॥ सूर्य के आगे भौम हो तो जल सोख ले, जो  
 पीछे हो तो और वर्षा करे ॥ ३६ ॥

गृहद्वारमुहूर्तः

कर्के कुम्भे च सिंहे च मकरे च दिवाकरः ।  
 पूर्वे वा पश्चिमे वापि द्वारं कुर्याच्च वेश्मनः ॥३७॥

मेघे वृषे वृश्चिके च तुले चापि यदा रविः ।  
 गृहद्वारं तदा कुर्यादुत्तरं चापि दक्षिणम् ॥३८॥  
 धनुर्मिथुनकन्यायां मीने च यदि भानुमान् ।  
 न कर्तव्यं तदा द्वारं कृते दुःखमवाप्नुयात् ॥३९॥

टीका--कन्या, कुम्भ, सिंह और मकर के सूर्य में गृह बनावे तो घर का द्वार पूर्व पश्चिम में शुभ है ॥ ३७ ॥ मेघ वृश्चिक और तुला के सूर्य में उत्तर, दक्षिण घर का द्वार शुभ है ॥ ३८ ॥ धन मिथुन कन्या और मीन के सूर्य में गृह निर्माण करना अशुभ और दुःखप्रद है ॥ ३९ ॥

ग्रहणफलम्

यदैकमासे ग्रहणं जायते शशिसूर्ययोः ।  
 शस्त्रकोपैः क्षयं यान्ति राजानो हि परस्परम् ॥४०॥  
 अस्तोदितौ च अस्तातौ धान्यभूपालनाशकौ ।  
 सर्वग्रस्तौ चन्द्रसूर्यौ दुर्भिक्षमरणप्रदौ ॥४१॥

टीका--जो एक ही मास में चन्द्रसूर्य दोनों ग्रहण पड़ें तो राजाओं में क्रोध से युद्ध हो जो सूर्य तथा चन्द्रमा ग्रसित होकर उदय हो तो राजा का नाश करे, सर्व ग्रस्त हों तो दुर्भिक्ष तथा मरण होता है ॥४० ४१॥

उपरागो यदा मेघे पीडयन्ते च सदा जनाः ।  
 कांबोजाश्च किराताश्च पांचालाश्च कर्लिङ्गकाः ॥४२॥



वृषे च ग्रहणे पीडा पशवः पथिका जनाः ।  
 महांतो मनुजाश्चैव ते पीडयन्ते च सर्वदा ॥४३॥  
 रविचन्द्रमसौ ग्रस्तौ मिथुने च वरांगनाः ।  
 पीडयन्ते बाहिलका मत्स्या यमुनातटवासिनः ॥४४॥  
 कर्कटे ग्रहणे पीडा मल्लादीनां च जायते ।  
 अंतरं सर्वराज्ञां च तदा मत्स्यनिवासिनाम् ॥४५॥  
 सिंहे च ग्रहणे पीडा सर्वेषां वनवासिनाम् ।  
 नृपाणां नृपतुल्यानां मनुजानां च जायते ॥४६॥  
 कन्यायां ग्रहणे पीडा त्रिपुष्करनिवासिनाम् ।  
 कवीनां लेखकानां च जायते पीडनं तथा ॥४७॥  
 तुलायामुपरागे च पीडनं बककाकयोः ।  
 कोंकणस्थाः पराश्चैव पीडयन्ते साधवश्च ये ॥४८॥  
 वृश्चिके ग्रहणे पीडा सर्पजातेश्च जायते ।  
 औदुम्बरस्य मद्रस्य चोलयौधेयकस्य च ॥४९॥  
 यदोपरागश्चापे च तदा मत्स्याश्च वाजिनः ।  
 विदेहमल्लपांचालाः पीडयन्ते भिषजो विशः ॥५०॥  
 मकरे ग्रहणे पीडा नीचानां मंत्रवादिनाम् ।  
 स्थावराणां जंगमानां चित्रकूटस्य संक्षयः ॥५१॥  
 कुम्भे चैवोपरागे च पश्चिमस्थास्तथाऽर्बुदाः ।

तस्करा रोगिणो भृत्याः पीडयन्ते बहुधा बुधाः ॥५२॥

मीनोपरागे पीडयन्ते जलद्रव्याणि सागराः ।

जलोपजीविनो लोका ये च तत्र प्रतिष्ठिताः ॥५३॥

टीका—जो मेष राशि पर ग्रहण पड़े तो कांजोज, किरात पांचाल, कलिंग देश को पीड़ा करे ॥४२॥ जो वृष पर पड़े तो पशु, पथिक और बड़े मनुष्यों को पीड़ा करे ॥४३॥ जो मिथुन पर पड़े तो श्रेष्ठ-स्त्री, वाल्हीक देश, मत्स्यादि जीव जन्तु व मत्स्य देश को वा यमुना तट वासियों को पीड़ा करे ॥४४॥ जो कर्क पर पड़े तो मल्लादिकों को अन्तर्वेदिराजा वा मत्स्य देश को पीड़ा करे ॥४५॥ जो सिंह पर पड़े तो सब वनवासी राजा और अन्य सब मनुष्यों को पीड़ा करे ॥४६॥ जो कन्या राशि पर ग्रहण पड़े तो कवि, चतुर को पीड़ा करे और लेखक चित्रकारों को भी पीड़ा करे ॥४७॥ जो तुला राशि पर पड़े तो काक बकादि पक्षियों को कोंकण देशवासियों को और साधुओं को पीड़ा करे ॥४८॥ जो वृश्चिक पर पड़े तो सर्प जातियों को, औदुम्बर को, चोल देशवासियों को पीड़ा करे ॥४९॥ धन राशि पर ग्रहण हो तो मत्स्य, घोड़ा, तपस्वी, मल्ल, पांचाल-वासी, मिथिलावासी, वैद्य और पण्डितों को पीड़ा होवे ॥५०॥ जो मकर राशि पर ग्रहण हो तो नीच, मन्त्रवादियों को पीड़ा करे और स्थावर, जंगम, पशु पीड़ा पावें, और चित्रकूटवासियों का क्षय हो ॥५१॥ कुम्भ राशि पर पड़े तो अरुंद देश और पश्चिम पर्वतवासी पीड़ा पावें और चोर पीड़ित हो जायें ॥५२॥ मीन राशि पर पड़े तो जलजन्तु और जलद्रव्य नष्ट हो जावें ॥५३॥



## दैवात्पातफलम्

क्षयकृत्पांसुवृष्टिश्च नीहारश्च भयंकरः ।  
 विद्युत्पातोऽग्निदाहोऽथ परिवेषश्च रोगकृत् ॥५४॥  
 दिग्दाहोऽग्निभयं कुर्यान्निर्घातो नृपभीतिदः ।  
 भ्रंभावायुश्चण्डशब्दश्चौरभीतिप्रदायकः ॥५५॥  
 ग्रहयुद्धे राजयुद्धे केतुदृष्टे तथैव च ।  
 ग्रहणांते महावृष्टिः सर्वदोषविनाशिनी ॥५६॥

टीका-जो बिना पवन आकाशसे भयङ्कर धूलि उड़े जिसमें मनुष्य न सूके बिना मेघ बिजली चमके, अग्नि दाह और सूर्य का मण्डल पड़े तो रोग होवे, जो सूर्यास्त बाद फिर दिशाओं में अग्नि लगी सी वा पीत रंगका आकाश दाखपड़े तो अग्निभय हा सूखे मेघ गरजे तो राजाओं का भय, अति वेग से प्रचण्ड शब्द सहित वायु चले तो चोरका भय हो ॥५४॥५५॥ ग्रहोंका युद्ध वा केतुका उदय हो तो राजाओंमें युद्ध हो और ग्रहण लगने के बाद बहुत जल बरस जाय तो सब दोष नष्ट हो जाता है ॥५६॥

## केतु-उदय फलम्

अश्विन्यामुदिते केतौ हन्यात्स लंकपालकम् ।  
 भरण्यां च किरातेशं कत्तिकायां कलिङ्गकम् ॥५७॥  
 रोहिण्यां शूरसेनेशं मृगे काशिनराधिपम् ।  
 आर्द्रायां जलजाधीशं भास्करीशं पुनर्वसौ ॥५८॥

पुष्ये च मगधाधं शं सर्पस्थः काशिकाधिपम् ।  
 मघायां बंगनाथं च पूर्वायां पांडुनायकम् ॥५६॥  
 उज्जयिन्या नृपं हन्ति उत्तराफाल्गुनीगतः ।  
 गंडकाधिपतिं हस्ते चित्रायां कुरुभूभुजम् ॥६०॥  
 स्वात्यां काश्मीरकम्बोलभूपतीनां विनाशकः ।  
 इक्ष्वाकुकुरुदेशानां विशाखायां विनाशकः ॥६१॥  
 मैत्रेये पौण्ड्रनाथं च सार्वभौमं तथेन्द्रकम् ।  
 मद्रकान्धकनाथं च मूलस्थो हन्ति निश्चितम् ॥६२॥  
 पूर्वाषाढे काशिराजमुत्तराषाढके तथा ।  
 पौण्ड्रेशशैववैदेहान् श्रवणे कैकयेश्वरम् ॥६३॥  
 बसौ पंचनदाधीशं वारुणे सिंहलेश्वरम् ।  
 पूर्वाभाद्रपदे बंगं नैमिषेशं तथोत्तरे ॥६४॥  
 रेवत्यामुदिते केतौ किराताधिपतेर्बधः ।  
 धूम्राकारः सपुच्छश्च केतुर्विश्वस्य पीडकः ॥६५॥

टीका—जो अश्विनी में केतु का उदय हो तो लंका देश के राजा को पीड़ा करे, भरणी में हो तो किरात देश के राजा को पीड़ा करे, कृत्तिका में हो तो कलिंग देश के राजा को पीड़ा करे ॥५७॥ रोहिणी में केतु का उदय हो तो शूरसेन देश के राजा को, मृगशिरामें काशिराज का आर्द्रामें जलजयोनि यानी पद्मदेश के राजा को, पुनर्वसु में भारकर देश के राजा को पीड़ा



करे ॥ ५८ ॥ पुष्य में केतु का उदय हो तो मगध देशाधिपति को, आश्लेषा में काशीपति को, मघा में वंगदेशपति को पूर्वाफाल्गुनी में पांडुदेशपति को पीड़ा करे ॥ ५९ ॥ उत्तराफाल्गुनी में उज्जैन नृपति को, हस्त में हो तो गंडकी नदी के राजा का पीड़ा करे, चित्रा में कुरुक्षेत्र के राजा का हनन करे ६० ॥ स्वाती में हो तो काश्मीर के राजा का और कांजोज देशके भूपति का विनाश करे, विशाखा में हो तो इक्ष्वाकु देश के राजा और कुरुदेशाधिपति का विनाश करे ॥ ६१ ॥ जो अनुराधा में हो तो उग्रसेन के नाथ को पीड़ा करे और ज्येष्ठा में हो तो सब पृथ्वीपति चक्रवर्ती राजा को पीड़ा करे, मूल में हो तो अन्धक देश, मद्रकदेश के राजा को पीड़ा करे, ॥ ६२ ॥ पूर्वाषाढा में हो तो काशी के राजा को पीड़ा करे, उत्तराषाढा में हो तो पौंड्रक देश, शैव देश और मिथिला देश के राजा को पीड़ा करे, ॥ ६३ ॥ धनिष्ठा में हो तो पंचनदी तट के राजाओं को पीड़ा करे, शतभिषा में हो तो सिंहल देश के राजा को पीड़ा करे, पूर्वाभाद्रपदा में हो तो बंगाल देश के राजा को पीड़ा करे, उत्तराभाद्रपदा में हो तो नैमिषारण्य वासियों को पीड़ा करे ॥ ६४ ॥ जो रेवती में केतु का उदय हो तो किरात देश के राजा को पीड़ा करे । उस केतु का स्वरूप धुआँ के समान पुच्छ सहित होता है । यदि पुच्छ सहित दिखाई देवे जो सर्व विश्व को दुःखप्रद होता है ॥ ६५ ॥

दीपोत्सवफलम्

भानुभौमार्किवारेषु कार्तिकेन्दुक्षयो भवेत् ।

आयुष्मान् स्वाति संयुक्तो नृपनाशः पशुक्षयः ॥६६॥

टीका—जो कार्तिक के अमावस ( दिवाली ) रवि, शौम शनिवार को पड़े और स्वाती नक्षत्र तथा आयुष्मान् योग संयुक्त हो तो राजाओं का नाश करे, युद्धादि अधिक हों और पशुओं का क्षय हो ॥ ६६ ॥

राशीनां निशाचरादिसंज्ञा

धनुर्नक्रं च मेषाद्याश्चत्वारस्तु निशाचराः ।

ते विना मिथुनं पंच ज्ञेयाः पृष्ठोदया बुधैः ॥६७॥

शीर्षोदयाश्च चत्वारः सिंहाद्याः कुंभ एव च ।

दिवा बलीतु मीनश्च बली रात्रौ तथा दिने ॥६८॥

टीका—धन, मकर, मेष, वृष, कर्क और मिथुन इनकी निशाचर संज्ञा होती है और मिथुन विना ये पाँचों की पृष्ठोदय संज्ञा कहते हैं ॥ ६७ ॥ सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक और कुम्भ इन राशियों की शीर्षोदय संज्ञा होती है । मीन लग्न दिन तथा रात्रि दोनों में बलवान् है ॥ ६८ ॥

दुभिन्न-सुभिन्नफलम्

तद्वच्चं द्विगुणं कृत्वा रामैर्हीनं च कारयेत् ।

मुनिभिश्च हरेद्भागं शेवांके लभते फलम् ॥६९॥

चन्द्रे वेदे च दुर्भिन्नं सुभिन्नं युग्मवाणयोः ।

रामे रसे च मध्ये च शून्ये शून्यं प्रकीर्तितम् ॥७०॥

टीका—जिस लग्न में जो नक्षत्र हो उसको दूना करके उसी



में तीन ३ घटावे और सात का भाग दे जो शेष बचे वही फल जाने ॥ ६९ ॥ जो १।४ बचे तो दुर्भिक्ष कहे २.५ बचे तो सुभिक्ष कहे, ३।६ बचे तो समभाव रहे और शून्य हो तो शून्य कहा है ॥ ७० ॥

वक्रीविचारफलम्

अतिचारगते सौम्ये क्रूरे वक्रत्वमागते ।

हाहाभूतं जगत्सर्वं रुण्डमुण्डं च जायते ॥७१॥

टीका—जो सौम्यग्रह अतिचार और पापग्रह वक्री हो तो जगत् में हाहाकार मचावे, युद्ध में रुण्डमुण्ड गिरे अर्थात् घोर युद्ध होवे ॥ ७१ ॥

मन्त्रदीक्षानिर्णयः

मन्त्रस्वीकरणं चैत्रे बहुदुःखफलप्रदम् ।

वैशाखे रत्नलाभश्च ज्येष्ठे च मरणं ध्रुवम् ॥७२॥

आषाढे बंधुनाशः स्यात् श्रावणे तु शुभावहम् ।

प्रजाहानिर्भाद्रपदे सर्वत्र सुखमाश्विने ॥७३॥

टीका—अब मन्त्र दीक्षा लेने के विषय में शुभाशुभ कहते हैं । जो चैत्र मासमें मन्त्र दीक्षा ले तो बहुत दुःख पावे, वैशाख मास में दीक्षा लेवे तो रत्न लाभ हो, ज्येष्ठ मास से लेवे तो निश्चय मृत्यु हो ॥ ७२ ॥ जो आषाढ़ मास में मन्त्र दीक्षा ले तो भाई का नाश हो, श्रावण मास में मन्त्र दीक्षा ले तो शुभ हो, भाद्रपद मास में मन्त्र दीक्षा ले तो प्रजा का नाश और आश्विन मास में मन्त्रदीक्षा लेवे तो सब सुख पावे ॥ ७३ ॥

|             |                                                                      |
|-------------|----------------------------------------------------------------------|
| भासाः       | वै.श्रा. आश्वि. कार्ति. मार्ग. मा. फा. एतन्मासेषु शुभः नाधिमासे      |
| भानि        | रो. आश्व च. ३ चि. रे. अ. पुष्य. हस्त. स्वा. पुन. मू. श्र. ध. श. शुभः |
| वाराः       | सू. चं. बु. वृ. शु. एषु वारेषु भद्रादि दोष रहिते                     |
| तिथयः       | २।३।५।६।७।१०।११।१२ एषु तिथिषु सत् कृष्णे पंचमी यावत्                 |
| शुद्ध लग्नं | २ ३।२६ ७.६।१२।४ एतल्लगनेषु चन्द्रतारानुकूले गुरु शुक्रयोरुदये        |
| अशुद्धिः    | लग्नात् ३।६।११। एषु पापैः १।४.५।७।८।१० एषु शुभैश्चोत्तमः             |

कार्तिके धनवृद्धिः स्यान् मार्गशीर्षे शुभप्रदम् ।

पौषे तज्ज्ञानहानिः स्यान्माघे मेधाविवर्धनम् ॥७४॥

फाल्गुने सुखसौभाग्यं सर्वत्र परिकीर्तितम् ।

दीक्षाकर्मफलं मासेष्वित्येव च शुभाशुभम् ॥७५॥

टीका— जो कार्तिक मास में मन्त्र दीक्षा ले तो धन की वृद्धि हो । अगहन मास में मन्त्र सुने तो शुभ है । पौष मास में मन्त्र सुने तो ज्ञानहानि हो । माघमास में सुने तो ज्ञान की वृद्धि होवे ॥ ७४ ॥ जो फाल्गुन मास में मन्त्रदीक्षा लेवे तो सुख सौभाग्य और यशस्वी हो ॥७५॥

ग्रहराशिभोगकालनिर्णयः

मासं शुक्रबुधादित्याश्रन्द्रः पाददिनद्वयम् ।

भौमस्त्रिपक्षं जीवोऽब्दं सार्धवर्षद्वयं शनिः ॥

राहुःकेतुः सदा भुंक्ते सार्धमेकं तु वत्सरम् ॥७६॥



टीका-सूर्य, शुक्र, बुध एक १ मास एक राशि पर रहते हैं । चन्द्रमा सवा दो दिन रहता है । मंगल सवा मास रहता है । बृहस्पति १ वर्ष पर्यन्त रहता है । शनि अढ़ाई वर्ष पर्यन्त रहता है और राहु-केतु एक राशि में डेढ़-डेढ़ वर्ष रहते हैं ॥ ७६ ॥

### चुल्हीचक्रम्

सूर्यर्चाद्रसपृष्ठभैः सुखयुतं वेदैः शिरो मृत्युदम् ।  
बाहौनागसुसौख्यभोगमतुलं गर्भेशरैर्नाशयेत् ॥  
द्वौ द्वौ भुक्तिकरौ कलत्रमरणमंग्रौ द्वयं च क्रमात् ।  
चुल्हीचक्रविचारणं सुधिषणैः प्रोक्तं हि गर्गादिभिः ॥ ७७ ॥

इति श्रीकाशीनाथ भट्टाचार्यकृतशीघ्रबोधसंग्रहेचतुर्थप्रकरणं समाप्तम् ।

टीका-सूर्य नक्षत्र से ६ नक्षत्र पृष्ठ के श्रीप्रद हैं, माथे के ४ मृत्युप्रद हैं, बाहु के आठ ८ बहुत सुखप्रद है, गर्भ के पाँच ५ नाशप्रद है, भुजा के २ भोगप्रद और चरण के २ नाशप्रद नक्षत्र है । ऐसा गर्ग आदि मुनियों ने कहा है ॥ ७७ ॥

इति श्रीदैवज्ञभूषण मातृप्रसादपाण्डेयगुम्फिनशीघ्रबोधसंग्रहस्य  
सुधानान्ति सोदाहरणभाषाटीकायां चतुर्थप्रकरणं समाप्तम् ।



## टीकाकारवंशवर्णनम्

श्रीसाङ्कृत्यकुले मनीषिमुकुटो विश्वेश्वरोऽभूततः  
 श्रीकालीचरणोऽङ्गदर्शनबुधः सद्धर्मविज्ञस्ततः ।  
 श्रीमच्छत्रधराद्धरैकगणकान्मातृप्रसादोऽस्ति योः ।  
 नेत्रेष्वष्टधरांशके व्यरचयट्टीकां शिवप्रीतये ॥ १ ॥

श्री साङ्कृत्य गोत्र में विद्वानों के मुकुट श्री विश्वेश्वर जी पूज्यपाद हुए, उनके पुत्र साङ्गवेद, सम्पूर्ण दर्शन के विज्ञ श्रीकाली-चरण पूज्यवर हुए, उनके पुत्र जिसके समान धरातल में दूसरा कोई ज्योतिषी नहीं ऐसे पूज्य श्रीछत्रधर पाण्डेयजी हुए, उनसे मातृप्रसाद हुए हैं, जिन्होंने शाके १८५२ में शिवजी के प्रसन्नतार्थ इसकी सुधा नामक टीका बनायी ।



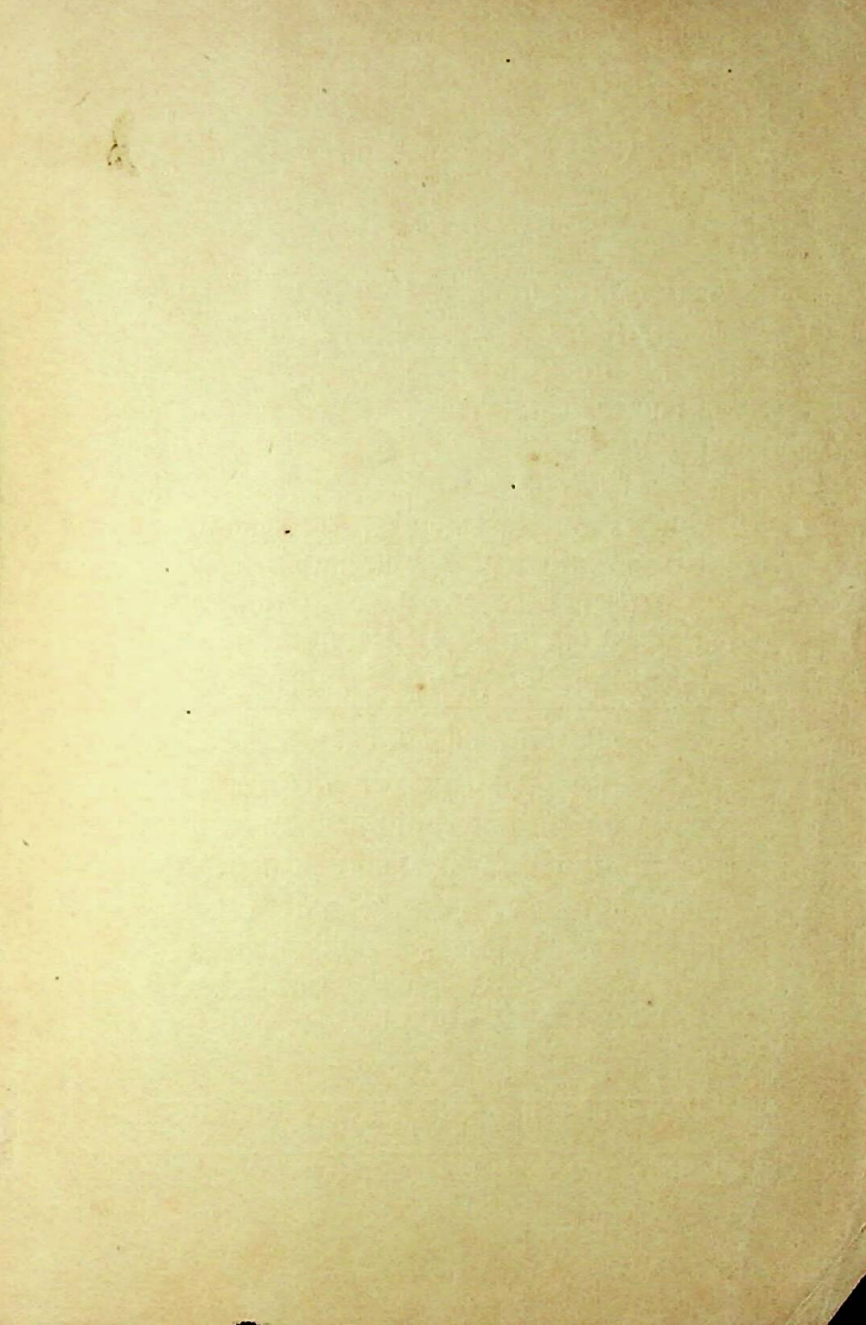
## समर्पण

द्वादशं कुसुमाख्यं त्वत् कृपातः कल्पितं च यत् ।  
 प्रेम्णा समर्प्यते हस्ते पितुः कैलाशवासिने ॥२॥

सोदाहरणभाषाटीकान्वितो शीघ्रबोधः समाप्तः ।

श्री विश्वेश्वर प्रेस, काशी में मुद्रित ।





# ज्योतिष शास्त्र की

उत्तमोत्तम पुस्तकें ।

|                          |                            |
|--------------------------|----------------------------|
| षटपञ्चाशिका ज्योतिष      | वास्तुमाणिक्य रत्नाकर      |
| भाषा टीका १'२५           | ६'००                       |
| मुहूर्तचिन्तामणि सान्वय  | हनुमानज्योतिष भा.टी. '७०   |
| भाषा टीका सहित ६'००      | कर्मविपाक ,, ,, ६'००       |
| बृहज्ज्योतिषसार भाषा-    | विश्वकर्मप्रकाशः,, ,, ६'०० |
| टीका सहित ६'००           | लग्नजातक ,, ,, '८०         |
| शीघ्रबोध भाषा टीका १'५०  | बृहद् होड़ाचक्र ,, ,, '२५  |
| चमत्कार चिन्तामणि        | फलित प्रकाश                |
| भाषा टीका '५०            | भाषा टीका ४'००             |
| सामुद्रिक भाषा टीका १'५० | महावीर प्रश्नावली '२०      |
| रत्नद्योत भा० टी० '५०    | राशिमाला बड़ा '५०          |

## जन्मपत्र बनाने का कागज ( कुण्डली फार्म )

इसके तीन पन्ने कागज पर या और भी अधिक कागज पर एक जन्मपत्री बनाई जाती है। पहला पन्ना जिसमें की गणेशजी की मूर्ति है और आखिरी पन्ना जिसमें समाप्त होता है तथा बीच का पन्ना ऐसा होता है कि चाहे जितने पन्ने लगाकर बड़ी से बड़ी जन्मपत्री बना सकते हैं। सभी फार्मों की कीमत ७) सैंकड़े (नेट) होगी और फुटकर लेना हो तो ८ पैसा प्रति कागज होगा।

मिलने का पता—

बाबू बैजनाथ प्रसाद बुक्सेलर, राजादरवाजा, वाराणसी-१